



This is a digital copy of a book that was preserved for generations on library shelves before it was carefully scanned by Google as part of a project to make the world's books discoverable online.

It has survived long enough for the copyright to expire and the book to enter the public domain. A public domain book is one that was never subject to copyright or whose legal copyright term has expired. Whether a book is in the public domain may vary country to country. Public domain books are our gateways to the past, representing a wealth of history, culture and knowledge that's often difficult to discover.

Marks, notations and other marginalia present in the original volume will appear in this file - a reminder of this book's long journey from the publisher to a library and finally to you.

Usage guidelines

Google is proud to partner with libraries to digitize public domain materials and make them widely accessible. Public domain books belong to the public and we are merely their custodians. Nevertheless, this work is expensive, so in order to keep providing this resource, we have taken steps to prevent abuse by commercial parties, including placing technical restrictions on automated querying.

We also ask that you:

- + *Make non-commercial use of the files* We designed Google Book Search for use by individuals, and we request that you use these files for personal, non-commercial purposes.
- + *Refrain from automated querying* Do not send automated queries of any sort to Google's system: If you are conducting research on machine translation, optical character recognition or other areas where access to a large amount of text is helpful, please contact us. We encourage the use of public domain materials for these purposes and may be able to help.
- + *Maintain attribution* The Google "watermark" you see on each file is essential for informing people about this project and helping them find additional materials through Google Book Search. Please do not remove it.
- + *Keep it legal* Whatever your use, remember that you are responsible for ensuring that what you are doing is legal. Do not assume that just because we believe a book is in the public domain for users in the United States, that the work is also in the public domain for users in other countries. Whether a book is still in copyright varies from country to country, and we can't offer guidance on whether any specific use of any specific book is allowed. Please do not assume that a book's appearance in Google Book Search means it can be used in any manner anywhere in the world. Copyright infringement liability can be quite severe.

About Google Book Search

Google's mission is to organize the world's information and to make it universally accessible and useful. Google Book Search helps readers discover the world's books while helping authors and publishers reach new audiences. You can search through the full text of this book on the web at <http://books.google.com/>

22



13 B 80

Findi Hit 6

~~4436~~



RÁJNÍTI.

A

COLLECTION OF FABLES

ORIGINALLY TRANSLATED FROM THE

HITOPADESHA

INTO THE BRAJ LANGUAGE

FOR THE USE OF THE COLLEGE OF FORT WILLIAM,

THIRD EDITION, REVISED

AND PUBLISHED FOR THE USE OF THE BOARD OF EXAMINERS.

BY THE

REV. DR. K. M. BANERJEA,

MEMBER,

AND

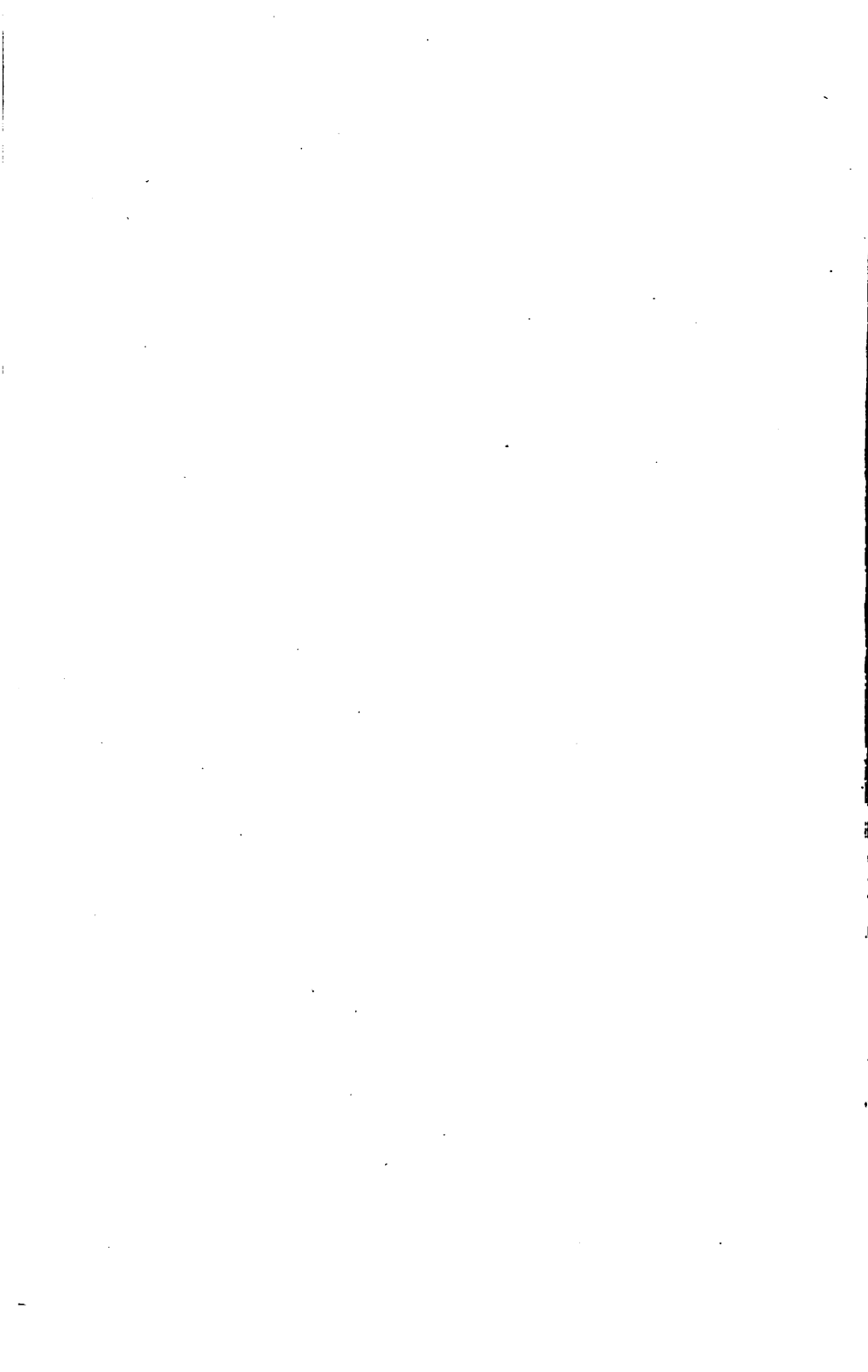
LT. COL. A. C. TOKER,

OFFG. SECY. OF THE BOARD.

CALCUTTA :

PRINTED BY J. W. THOMAS, BAPTIST MISSION PRESS.

1883.



PREFACE.



The old College Edition of the Rajniti published in 1827, and Hall's Edition published in 1854 being both out of print, it has been found necessary to publish a new Edition of this work which is one of the test books not only for the High Proficiency Examination in Hindi but also for the Calcutta University Entrance Examination.

The present may be regarded as a revised edition of the old College book; some errors have been corrected and some indelicate passages and words omitted or modified as far as was consistent with the narrative, and in cases where it was thought advisable Hall's emendations have been added in a foot note.

अथ कथा आरम्भ ।

दोहा ।

कविवासी गृह कूष को कथा अपार समंद ;
तैसी ये कहतु हैं मति है जैसी मंद .

श्री गंगा जू के तीरे एक पटना नाम नगर ; तहां, सब गुन निधान, महाजान, पुन्यवान, सुदरसन नाम राजा हो . वाने एक दिन काहू पंडित तें है श्लोक सुनें, ताको* अर्थ यह है, कि अनेक अनेक प्रकार के संदेहनि कौं दूरि करै, अरु गूढ़ अर्थनि कौं प्रकाशै, तातें सब की आंखि शास्त्र है, जाहि शास्त्र रूपी नेच नाहीं, सो आंधरौ है ; अरु तरुनापन, धन, प्रभुता, अविवेकता, ये चारौं एक एक अनर्थ की करनिहारी हैं ; अरु जहां ये चारौं हैं, तहां न जानियै कहा होय ! यह सुनि, राजा अपने पुचनि की मूर्खता देखि, चिंता करि, कहनि लाग्यौ, कि ऐसे पुच भये कौन काम के ? जे विद्या करि हीन, अरु धर्म से रहित, ते पुच ऐसे, जैसे कानी आंखि देखिवे कौ तौ नाहीं, पर दुखनी आवै तौ पीर करे . कह्यौ है, “पुच ताही कौं कहियै, जाके जन्में तें कुल की मर्याद होय” अरु यौ

* तिजको *Hall*.

तौ संसार में मरकौ को नाहीं उपजतु है ? पर सज्जन अरु विद्यावान जो पुच बंस में होतु है, सो पुरुष सिंह है; जैसे चंद्रमा तें आकाश शोभा पावतु है, तैसें वा पुच सों कुल . जाकौ नाम गुनीन की गिनती में लिखनी तें नाहीं लिख्यौ गयौ, ताही की माता कौं बांझ कहतु हैं . अरु दान, तप, स्त्ररता, विद्या, अर्थलाभ में जिनकौ अस नाहीं भयौ तिनकी माताओं ने केवल जनवे ही कौ दुख पायौ है, पै पुच कौ सुख नाहीं देख्यौ . कहतु हैं कि, 'जिननि बड़े तीर्थनि में अति कठिन तप व्रत किये हैं, तिनके सुत आज्ञाकारी, धनवान, पंडित, धर्मात्मा होतु हैं.' ये छह वस्तु संसार में सुखदायक हैं; सदा धन की प्राप्ति, शरीर आरोग्य, स्त्री तें हित, नारी मिठबोली, पुच आज्ञाकारी, अरु विद्या तें लाभ .

इतनी कहि पुनि राजा बोल्ह्यौ, कि मेरे पुच गुनवान होय तौ भलौ . यह सुनि, कोऊ राजसभा में तें बोल्ह्यौ, कि महाराज ! आयु, कर्म, वित्त, विद्या अरु मरन, ये पांच बात देहधारी कौ गर्भ ही में सिरजी हैं, तातें जो भावी में है सो बिना भये नाहीं रहति; जैसे श्री महादेव जू कौ नम्रता, अरु श्री भगवान कौ सर्प सव्या; तासों चिंता मति करौ, जो तिहारे पुचनि के कर्म में विद्या लिखी है, तौ विद्यावान हैं।यगे . पुनि राजा कही, यह तौ सांच है, पर मनुष कौ परमेश्वर ने हाथ अरु ज्ञान द्यौ है, सो विद्या साधन के अर्थ; जैसे एक चक्र कौ रथ

न चलै, तैसें बिन पुरुषार्थ किये काज सिद्ध न होय ; ताते उद्यम सदा करियै, कर्म कौ ई आसरौ करि न बैठि रहियै. कछौ है कि, “जैसें कुम्हार माटी ल्याय जो कछु कसौ चाहे सो करै, तैसें नर हू अपने कर्म समान फल पावै.” कर्म तौ जड़ है, वासों कछु न होय ; उद्यम करता है तासों करता कर्म कौ प्रेरै, तब भलौ बुरौ करता कर्म के संयोग तें होय. अरु केवल कर्म कौ ई आसरौ करि बैठि रहनौ कपूत कौ काम है. अरु जाके माता पिता सुत कौ विद्या कौ उद्यम न करावैं, ते शत्रु जानियै. कछौ है कि, “मूढ़ पुत्र पंडितनि की सभा में शोभा न पावै ; जैसें हंसनि में बगुला न सोहै.”

आगे राजा ने यह विचारि, पंडितनि कौ समाज करि कछौ, हे पंडितै ! तुम में कोज ऐसौ पंडित है, जो मेरे पुत्रनि कौ नीतिमार्ग कौ उपदेश दै नयौ जन्म करै ? कछौ है, “जैसें काच कांचन की संगति पाय मरकत मनि जनाय, तैसें साध की संगति में बुद्धि पाय मूरख हू पंडित होय ; अरु नीच की संगति में नीच.”

संगति कीजै साध की हरै और की बाधि ;

खोकी संगति नीच की बाठों पहर उपाधि. (दोहा)

तहां राजा की बात सुनि, विष्णुशर्मा बड़ ब्राह्मन, सकल नीतिशास्त्र कौ जान, बड़स्पति समान, बोख्यौ, कि महा-राज ! राजकुमार तौ पढ़ायवे योग्य हैं, अयोग्य कौ विद्या न दीजियै ; क्योंकि वह पढ़ै तौ सिद्ध न होय, अरु जो

सिद्ध होय तौ अनीति बिशेष करै, विद्या कौ गुन छांडै,
 औगुन दढ़ करि गांठि बांधै; तातें कुपाच कौ न पढ़ा-
 द्यै; जैसे बिलाव कौ नवौ नवौ भोजन खावाइयै, तौ हू
 विलूरवे की घात न तजै; पुनि कोटि जतन करि बगुला
 कौ पढ़ाइयै, पर सुआ सौ न पढ़ै; जौ मुनि धर्म में
 निपुन होय, तौ हू माछरी मारवे की घात अधिक
 सीखै. महाराज! तिहारे कुल में तौ निर्गुनी बालक न
 हैंय, जौं मनि मानिक की खान में काच न उपजै. हम
 विद्या बेचत नाहीं, तुम तें कछु छेतु नाहीं; पर तुम्हारी
 प्रार्थना है, यातें हैं तिहारे पुचनि कौं सहज सुभाव ही
 छः महींने में नीतिमार्ग में निपुन करिहैं.

यह सुनि राजा दृढ़ ब्राह्मन विष्णुशर्मा तें बोल्ह्यो,
 अहो! पुहुप की संगति तें, देखौ, नान्हें कीट हू सज्जननि
 के माये चढ़तु हैं, तातें तिहारे सतसंग तें कहा न होय?
 जैसे पाथर की प्रतिष्ठा किये सब मनुष देवता करि पूजै;
 पुनि उदयाचल* परबत की बसन खरज के उदै भये
 सर्व वस्तु खरज समान ही दीसै; सुसंग तें नीच की हू
 प्रतिष्ठा होय.

कीट भक्ति ऐसें जर खंवर, मन सरूप करि देत निरन्तर.

होह हेम पारस के परसे, या जग में यह सरसे दरसे. (चौपारि)

सेस सारदा व्यास बुनि कहतु न पावै पार;

सो महिमा सत संग की कैसे कहै गंवार? (दाहा)

तुम मेरे पुचनि कौं पंडित करवे जाग है, ऐसें वा

* परबत की वस्तु खरज के उदै भये सर्व खरज समान ही होयै Hall.

राजा ने बिनती करि, ब्राह्मन कौं आपनें पुच सौंपे ; तब वह बिग्र राजपुत्रनि कौं लै एक ऊंचे मंदिर में जाय बैयौ . कोऊ समें पाय कछौ, सुनौं महाराज कुमार !

काव्य शास्त्र आनंद तें रसिकनि के दिन जात ;

मूरख के दिन नौद में कलह करत उतपात . (देहा)

हैं मित्रलाभ की कथा कहतु हैं, क्योंकि मित्रलाभ में लाभ बहुत है ; कि एक चित्रग्रीव कपोत, औ कछुआ, हिरन, अरु मूसा, ये परम मित्र हे ; तिनके मिलन औ कर्म कहतु हैं, कि जे असाध्य हैं, निधन हैं ; पर बुद्धि-वाननि तें उन सेां प्रीति है, तिनके काज ऐसें सिद्ध होतु हैं, कि जैसें काग, कछुआ, हिरन, मूसा के भये . यह सुनि राजकुमारनि कही, यह कैसी कथा है ? तहां विष्णुशर्मा कहतु है—

गोदावरी नदी के तीर एक सेमल कौ रूख ; तापै सब दिस कौ पंखी आय विश्राम लेतु हे . एक दिन प्रात ही, लघुपतनक नाम काग जाग्यौ ; वह एक कालरूप व्याधी कौं दूर तें आवतु देखि, चिचायकरि कहनि लाग्यौ, आज भोर ही की बेला अधर्मी दुराचारी कौ मुख देख्यौ, सेा न जानियै कहा होय ! ऐसें विचारि, लघुपतनक काग उड़ि गयौ . कछौ है कि, “उतपात की ठाम पंडित चतुर न रहैं, मूरख भय सोग बैयौ सहै .” इतेक में व्याधी नें रूख तरै चांवर के कनिका डारि, तापर जाल पसार्यौ ; तहां चित्रग्रीव कपोत कुटुंब समेत उड़त उत

आय* कण्यौ . तिन में तें एक पंछी देखि बाल्यौ, इन चांवरनि कौं हैं चुग्यौ चाहतु हैं . चिचग्रीव कही, अरे! या वन में चांवर कहां तें आये? यह कछु कौतुक है, यातें ये मोकों नीके नाहीं लागतु . सुनौ! जौ तुम इन चांवरनि कौ लोभ करिहौ, तौ वैसें होयगी, जैसें कंकन के लोभ सेां एक पथिक दहदल में फांसि, बूढ़े बाघ कौ अहार भयौ . यह सुनि पंछियन कही, यह कैसी कथा है? तब चिचग्रीव कपोतराज बाल्यौ—

हैं एक दिन वन में रह्यौ, तहां यह देख्यौ, जु एक बृद्ध बाघ पानी में न्दाय, कुश हाथ में लै, मारग में आय बैद्यौ . इतेक में एक बटोही ब्राह्मन आय कण्यौ; वानें जब पंथ में नाहर बैद्यौ देख्यौ, तब भय खाय वहांहीं ठिठक्यौ . याहि भयातुर देखि सिंह बाल्यौ, अहो देवता ! हैं जो गैल में बैद्यौ हैं, सो पुन्य करनि के हेतु; अरु मो पास सोना कौ कंकना है, सो श्री कृष्णार्पन देतु हैं, तू लै . यह सुनि, वह अपने मन में विचार्यौ, कि आज तौ मेरौ भाग जाग्यौ दीसतु है; पर ऐसे संदेह में जैवै जाग नाहीं; क्योंकि बुरे तें भली वस्तु छू पाइयै, पै आगै दुख होय; जौ अमृत में विष होय तौ मारै ही मारै . पुनि ऐसें छू कछौ है कि, “बिन कष्ट द्रव्य हाथ नाहीं आवतु; अरु जहां कष्ट, तहां फल है; जैसें, जहां माया, तहां सांप; अरु जहां पुष्प, तहां कंटक; बिन दुख

सहे सुख नाहीं.” यह बिचारि, ब्राह्मन नें वासों कही, कहां है वह कंकना ? वाने हाथ पसारि दिखावौ ; तब विप्र कों लोभ आयौ, अरु बाल्यौ, अरे ! तू व्याध कौ करनहारौ, मैं तेरौ विस्वास कैसें करौं ? नाहर बाल्यौ, अहे ! एक तौ मैं प्रातस्नान करि दाता होय बैद्यौ हैं ; दूजै, वृद्ध भयौ, तातें नख दांत अरु इंद्रियन कौ बल हू नाहीं ; अब मेरी प्रतीति क्यों न करै ? कह्यौ है, “यज्ञ, वेदपाठ, दान, तप, सत्य, धीरज, क्षमा, निर्लोभ, ये आठ प्रकार कहे* हैं, ते पाषंडी तें न हैं।य.” हैं तौ अपने अर्थ के लये दियौ चाहतु हैं ; अरु बाघ मांस खातु हैं, सो मेरै नाहीं ; पर न जानतु है सो कहतु है ; जैसें कुटनी काहू कों धर्म कौ उपदेश देइ, तौ हू लोक न मानै, अरु ब्राह्मन हत्यारौ हू मानियै ; तातें तू सांचौ है, मेरी देह वृद्ध भई, अरु या काया तें मैं बहुत पाप किये हैं, यह समझ सब पाप तज धर्मशास्त्र में पढ़्यौ अरु सुन्यौ है . प्रानी कों ऐसी चाहियै, कि जैसा अपना जिव प्यारौ है, तैसा ही सब काहू कौ जानें . अरु चार प्रकार तें दान दैतु हैं, धर्मार्थ, भयार्थ, उपकारार्थ, स्नेहार्थ ; सो नाहिं ; मैं केवल तोहि दुखी जानि दैतु हैं . श्री कृष्ण चंद ने हू राजा युधिष्ठिर तें कह्यौ है, कि दान दरिद्री कों दीजै तौ अधिक फल होय ; कोंकि औषध अरु पथ्य दुखी कों दैतु हैं, सुखी कों नाहीं ; अरु

जो देश काल पाच देखि दान देतु हैं, सो दान सात्विकी कहियै; तातें ब्राह्मन ! तू सरोवर में न्हाय आ, औ सुच होय दान लै . बाकी बात सुनि लोभ कौ मालौ ज्यों वह सरोवर में उतलौ त्यों दैं में फंस्यौ; जब कीच तें पांव न काढ़ि सकौ, तब बाघ होलैं होलैं बाकी ओर चल्यौ . ब्राह्मन कही, अहो ! तुम काहेकौं आवतु हो ? बाघ कही कि, तू पानी में ठाढ़ौ रह, तोपै प्रयोग पढ़वाय, कंकन दै, स्वस्ति शब्द सुनौंगी . यह कहत कहत, पास जाय, बाकौं फंस्यौ देखि, नरहटी धरी . तब विप्र अपने मन में कहनि लाग्यौ, कि दुष्ट कौं धर्मशास्त्र वेद कौ पढ़िबौ कछु काम न आवै; क्योंकि अपनौं सुभाव कोऊ नाहीं तजतु; जैसें गाय कौ दूध सुभाव ही तें मीठौ होतु है, कछु बाके खैवे पीवे तें नाहीं . अरु जाकी इंद्री मन बस नाहीं, ताकी क्रिया ऐसें, जैसें हाथी कौ स्नान, उत न्हायौ, इत फेरि ज्यों कौ त्यों; तातें मैं भली न करी जो बाघ की प्रतीति करी; सब अपने कुल व्यौहार तें चलतु हैं . यह बिचार करै, तौ लौं नाहर नें बाहि मार भक्षण कियौ . तातें हैं कहतु हैं, कि बिन बिचारे काम कबहू न करियै .

बिना बिचारै जो करै सो पाछे पछिताइ;
 काम बिगारै आपनौ जग में होत हंसाइ .
 जग में होत हंसाइ चित्त में चैन न पावै;
 खान पांन सनमान रागरंग मनहि न आवै .
 कहि गिरधर कविराय दुख कछु टरत ब टारै;
 खटकत है जिय मांहिं कियौ जो बिना बिचारै . (कुंडलिया)

कह्यौ है, “पचायौ अन्न, पंडित पुच, पतिव्रता स्त्री, सुसेवित राजा, विचार करि कहिवौ अरु करिवौ, इनतें बिगार कबहु न उपजै.” यह सुनि, एक परेवा बोल्थौ, अहे! या डोकरा की बातें आपदा में कहां लौं विचारै? ऐसे संदेह करियै तौ भोजन करनैं हू न बनें; क्योंकि अन्न पानी में हू संदेह है, ऐसौ विचार कस्यौ तौ सुख सेां जीवन हू न होय. कह्यौ है कि, “तृषावंत, असंतोषी, क्रोधी, सदासंदेही, जो और के भाग की आस करै, अति दयावंत, ये छहैं सदा दुखी रहैं.” इतनी कहि, वह परेवा चांवर चुगन उतख्यौ वाके साथ सब उतरे; तब चिचग्रीव ने विचार्यौ, कि इनकी लार जो होय सो होय, पर साथ छोड़नैं उचित नाहीं. कह्यौ है, “मनुष अनेक शास्त्र पढ़ै, औरन कौं उपदेस देइ, पर लोभ आय घेरै, तब बुद्धि न चलै.” आगै बिनके साथ चिचग्रीव हू उतख्यौ; अरु जब वे पखेरू जाल में आये, तब वा ने जाल की जेवरी खैंची, सब बन्ने; तद जाके कहे उतरे हे, वाकी निंदा करनि लागे ऐसे और हू ठौर कह्यौ है कि, “सभा में सब तें आगै होय काम करै, जो संवरै तौ सब कौं फल समान होय; औ बिगरै, तौ दोष वाही कौं देंइ जो आगै बढ़ै.” वाकी निंदा सुनि, चिचग्रीव बोल्थौ, अरे! याकौ दोष नाहीं; जब आपदा आवतु है तब मिच हू शत्रु होतु है; जैसे बछरा के बांधिवे कौं गाय की जांघ ही बांभ होतु है.

बधिक बध्यौ मृग बान ते बंधिरौ दियौ बताय ;
 अति हित अनहित हेतु है तुलसी दुरदिन पाय .
 यथा, व्योतिष आगम जान सब भूत भविष्य बर्तमान ;
 हौंनहार जब हेति है उखटि जातु है ज्ञान . (दाहा)

तातें बंधु सो, जो आपत्य में काम आवै ; औ भई बात
 कौ पछितायवै, कपूत कौ काम है, यातें धीरज करि छूटनि
 कौ उपाय करौ . कह्यौ है,

“बीती ताहि बिसारि दै आगै की सुधि लै ;
 जो बनि आवै सहज में ताही में चित दै .
 ताही में चित दै बात जोई बनि आवै ;
 दुरजन हंसै न कोइ चित्त में खेद न पावै .
 कहि गिरधर कविशाय यहै करि मन परतीती ;
 आगै कौ सुख होय समझ बीती सो बीती .” (कुंडलिया)

पुनि कह्यौ है कि, “आपदा में धीरज, संपदा में बिनय,
 सभा में वचन चतुरई, संग्राम में पराक्रम, जस में रुचि,
 पढ़िवे में बिसन, ये महत पुरुषन के सुभाव हैं . अरु पुरुष
 कौ छः दोष सदा छोरे चाहियैं, निद्रा, अधीरता, भय,
 क्रोध, आलस्य, सोग .” इतनी कहि, पुनि चिचग्रीव बोल्यौ,
 अब सब एकमति होय बल करौ, या जाल कौं लै उड़ौ .
 ऐसें कह्यौ है, “थारे ऊ मिलि एकौ करैं तौ बड़ौ काम
 सिद्ध होय ; जैसें घास मिलाय जेवरी बांटें, तासों हाथी
 बांध्यौ जाय .” यह सुनि, सब बल करि जाल लै उड़ें ;
 अरु व्याधी ने दूर गये देखे, तब मन में कह्यौ, अब हीं
 सब एकमति हैं ; उतरिहैं तब देख लैउंगी . जद जाल
 धरती में न गिर्यौ, तद बधिक निरास होय बैयौ . तहाँ

पखेरू चिचग्रीव से कहनि लागे, अहे राजा ! व्याधी तौ हमारे मांस की आस छोरि बैयौ, पर अब जाल से कैसे कढ़ें ? चिचग्रीव कही, अरे ! सुनै, या संसार में माता पिता अरु मित्र ये तीनों सुभाव ही हैं हित करतु हैं ; तावें एक हमारौ मित्र हिरन्यक नाम मूसा विचित्र वन में गंडकी नदी के तीर रहतु है, तहां चलौ, तौ वह हमारे बंधन काटि है . ऐसे विचारि, इंद्र के द्वार कौं चले ; अरु वहां हिरन्यक हू अपने द्वार पर बैयौ हो, सो परेवानि कौं आवतु देखि बिल में पैठि चुप छै रह्यौ . तब चिचग्रीव कही, मित्र ! बाहर आओ . मित्र कौ बोल पिछानि, बाहर आय, बोल्यौ, मेरे आज बड़े भाग, जो मित्र चिचग्रीव ने मो पै कृपा करि आय दरसन दियौ ! अरु जाल में पखेरून कौं देखि कह्यौ, मित्र ! यह कहा है ? उज कही, बंधु ! यह पूर्वजन्म कौ पाप है ; जाके भाग में जैसा लिख्यौ है, ताकौं तैसौ फल मिलतु है ; अरु रोह सोग बंधन ओ दुख अपने किये कर्म कौ फल है . कह्यौ है,

“होत उदोत प्रभाकर के दिस* पच्छिम तौ कहु धोखौ नहीं हैं ;
 फूलै सरोज पहारनि मांछि औ मेरु चलै तौ चलै कबही है ;
 पावक सीतल होत समे इक मोतियराम विचारि कही है ;
 अंक भिटें न बिखे बिधि के यह बेद पुराननि मांछि सही है .” (कवित्त)

यह सुनि, मूसा चिचग्रीव के बंधन काटनि लाग्यौ ; तब चिचग्रीव कपोतराज बोल्यौ, हितू ! पहिलै मेरे

संघातीन के फंद काटौ, ता पाछै मेरे काटियौ . ईदुर कही, प्रीतम ! ये बंधन कठिन, मेरे दांत कोमल, तातें पहिलैं तेरे बंधन काटि, ता पाछै कटैगे तौ और के काटिहैं . चिचग्रीव कही, मित्र ! यह नायक कौ कर्म नाहीं, जो अपने साथीन कौ बंधाय आप छूटै ; यासों पहिलैं ये छूटि लैय, तौ हमारौ छूटनैं बनै . पुनि मूसा बोख्यौ, भाई ! अपनी छोरि पराई बात कहनी, यह नीति नाहीं . कछौ है कि, “दुख पायकै धन राखियै ; धन दै स्त्री की रक्षा कीजै ; अरु धन स्त्री जाय तौ जानि दीजै, पर अपनपौ राखियै ; क्योंकि धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, ये चार पदार्थ प्राप्त के राखे रहैं, अरु गये जाय .” बहुरि चिचग्रीव कही, मित्र ! नीति तौ ऐसे ही है, पै पंडित होय सो सरनागत बत्सल चाहियै . कछौ है, “पराये हेतु धन प्राप्त दीजै ; क्योंकि एक दिन तौ शरीर कौ नास होय, तातें और के निमित्त आवै तौ यासों कहा भलौ है ? यातें तू मेरे अनित्य शरीर राखिवे कौ जतन छांड़ि, अरु नित्य अविनासी जो जस, ताके राखिवे कौ उपाय कर . कछौ है, “अनित्य देह तें नित्य जस पाइयै, अरु मलीन तें निर्मल वस्तु ; तातें शरीर अरु जस में बड़ौ अंतर है .” यह सुनि, हिरन्यक संतोष करि बोख्यौ, हितू ! तोहि इन सेवकनि के सनेह तें चिछोकी कौ राज बूझियै . यह कहि उन सब ही के बंधन काटे, अरु कही, बंधु ! तुम अपनी बुद्धि के दोष तें

बंधे, पर अब मन में दुख जिन करौ. कह्यौ है कि “पंछी एक जोजन तें भूमि पख्यौ अन्न देखै, पर जाल न देखै.” तातें तिहारी मति कौ ऊ दोष नाहीं; क्योंकि चंद्र सूर्य छ ग्रहपोड़ा पावतु हैं; अरु गज भुजंग छ बंधन में परतु है; पंडित निर्धन होतु हैं; अरु समें पाय पशु, पंछी, नभचर, जलचर छ, परबस होय दुख पावतु हैं; जो भावी में होय सो बिना भये नाहीं रहतु. ऐसे हिरन्यक ने चिचग्रीव कौं समझाय, मनोहर बचन सुनाय, खवाय प्याय, कुटुंब समेत बिदा कियौ; अरु आप छ बिल में गयौ. तब लघुपतनक काग जो प्रात ही व्याधी कौ देखि भाग्यौ हो, बाने ये समाचार पाय, अपने मन माहिं कही, कि संसार में मिचाई बडौ पदार्थ है, देखौ मिच कौं ठौर काम आयौ! यह बिचारि, रूख तें उड़ि, मूषक के बार जाय बाल्यौ, अहो हिरन्यक ! तुमकौ मेरौ प्रनाम है, अरु तुम्हें बडौ जानि मिचाई करनि आयौ हैं। यह सुनि, हिरन्यक बाल्यौ, अरे तू को है? इन कही, हैं लघुपतनक नाम काग हैं। यह सुनि, हिरन्यक हंसि करि बाल्या, मोसें तोसें कैसी मिचाई? अरे ! शत्रु सें मिचाई करनौं बिपत्त कौ मूल है; अरु हम तिहारे भक्ष, तुम हमारे खानहारे, यातें जहां मिचाई बूझियै तहां करौ, अनमिल संग न होय; अरु जो होय तौ वैसें होय, जैसें स्थार ने बंधायौ हिरन कौं, अरु छुड़ायौ काग ने. काग बाल्यौ, यह कैसी कथा है? तहां मूसा कहतु है ;

मगध देस में चंपक नाम बन, वहां अनेक दिन तें एक चंपा के रुख पर सुबुद्धि नाम काग, अरु वाके तरै चिचांगद नाम हिरन रहै; उन दोऊन में अति प्रीति ही . तहां हिरन कौं एक दिन काहू स्यार ने हृष्ट पुष्ट देखि अपने मन में विचार्यौ, कि यासों प्रीति करौं, तौ याकौ मांस खैवे कौं मिलै . यह विचारि, हिरन के पास आय बोल्यौ, मिच! तुम कुशल तें है? मृग कही, भाई! तू को है? पुनि हरवे तें उन कही, हैं सुद्रबुद्धि नाम स्यार हैं, या बन में मिच करि हीन निरबंधु अकेलौ बसतु हैं; आज तिहारौ दरसन पायौ, मेरे जी में जी आयौ; अब तिहारे पायन तरि रहि हैं ऐसैं बातन लगाय, बाके संग लाग्यौ; सांझ भई, तब कुरंग अपने आश्रम कौं चलयौ, अरु वह ऊ साथ छै लियौ . निदान चलतु चलतु वहां आयै, जहां मृग कौ मिच काग हो . स्यार कौ देखि काग बोल्यौ, मिच! यह दूसरौ तिहारै साथ को है? मृग कही, यह सुद्रबुद्धि नाम स्यार है, औ मातें मिचाई कियौ चाहतु है . काग कही, हितू! बेग परदेसी अन-जान सों प्रीति न कीजियै . कह्यौ है कि, “जाकौ सील सुभाव आश्रम न जानियै, तासों मिचता न करियै .” अरु नीति तौ यों है, कि वाकौं अपने घर में बास न दीजै; न जानियै कैसा होय? जैसे अनजाने बिलाव कौं बास है, दीन गीध पंखी माख्यौ गयौ . मृग बोल्यौ, यह कैसी कथा है? तहां काग कहतु है;

गंगा जू के तीर गृध्रकूट नाम परबत, तहाँ एक पाकड़ कौ रूख, वाके खोडर में एक अति बूढ़ा गीध रहै. तहाँ और पंछी अपनौं चुनि ल्यावैं, ता में तें थोरौ थोरौ गीध कौं हू बांटे दें, जासों वह जीवै; अरु जब वे पंछी चुगवे कौं जांय, तब गीध उनके छौंनानि की रखवारी कियौ करै. एक दिन, दीरघकरन नाम बिलाव पंछीन के सिसु खैवे कौं वा रूख पै चढ़्यौ; वा कौं देखि, वे छौंना पुकारे; तब गीध ने उनकी पुकार सुनि खोडर तें मूंड निकासि कह्यौ, अरे! यह को है? तब बिलाव गीध कौं देखि डरि, अपने मन मांहिं कहनि लाग्यौ, कि जौ यहां तें भाजिहैं, तौ यह पाछै दौरि मारैगौ; यासों वाके पास गये ही बनै. यह बिचारि, सरल सुभाव होय, गीध के पास आय, दंडवत करि, बोळ्यौ तुम बड़े है. गीध कही, तू को है, अरु इत क्यों आयौ है? दूर रहि, जा तौ अब ही मारतु हैं. बिलाव कही, स्वामी! प्रथम मेरे आवन को कारन सुनि लेउ, ता पाछै जो मन मानै सो करियैगौ. मैं ने ब्रह्मचर्य ब्रत पालन कियौ है, अरु चांद्रायन ब्रत कौ मेरौ नेम है; अब हीं गंगा जू स्नान किये आवतु, गैल में पंछीन के मुख तें तिहारो बड़ाई सुनी, कि तुम ज्ञान चरचा में निपुन है, तातें तुम सो धर्म उपदेस सुनिवे कौं आयौ हैं. अरु बिचार ऐसी है, कि जौ कोऊ दिन ऐसे साध की संगति में रहैं तौ पवित्र हैंउं. कह्यौ है,

“हिय ते मिटै असाधपन कहै अगाध विवेक ;
बाल जु संगति साध की हरै उपाध अनेक .” (दोहा)

मेरौ तौ यह मनोरथ है, या पर माख्यौ चाहौ तौ मारौ. कह्यौ है, “गृहस्त कौं ऐसी चाहियै, कि बैरी कौ बैरी हू अपने घर आवै तौ हू वा की पूजा करै.” जैसे वृक्ष कौं कोऊ काटनि आवै, तौ वह वा हू पर छांह करै ; यातें बूढ़े के घर बालक हू पाहुनौ आवै, तौ सेवा जोग है, अवस्था कौ बिचार कछु नाहीं ; पाहुनौ घर आवै, ताकौं सब तें बड़ौ करि मानियै, यथायोग्य पूजा कीजै. जौ चार कछु घर में न होय, तौ मीठे बचन, तृण कौ बिछौना, सीतल जल दै, अति हित कै मिल बैठै ; अरु इतनौ हू न करै, तौ जाके घर तें अतिथि निरास जाय, वाकौ धर्म लै जाय, आपनौ पाप दै जाय ; यातें साधु निर्गुन हू पर दया करतु हैं ; जैसे चंद्रमा सब ठाम प्रकाश करै. गीध बाल्यौ, बिलाव कौं मास तें अधिक रुच हेति है, अरु छां पंखीन के सिसु रहतु हैं, ताते तो सां हैं कछु कहि नाहीं सकतु ; पर जौ तू यहां रहै, तौ इन छौंनानि तें कपट जिन कीजौ. यह सुनि, बिलाव ने भूमि में हाथ छुवाय, कान हाथ धरि, कह्यौ, स्वामी ! मोतें ऐसी कब हू न होय ; धर्मशास्त्र पढ़ि सुनि मैं बैराग दसा गही है ; अरु जीवहिंसा बड़ौ अधर्म है, सब शास्त्रनि में वर्जित है. कह्यौ है, “साध कौं ऐसी चाहियै, कि परायौ अपराध सहै, सब कौं पालै, सो स्वर्ग

लोक पावै; यामें संदेह नाहिं; क्योंकि धर्म सदा सहाय
 होय,” अरु जाकौ मास खाइयै, सो तौ जीव ही सेां
 जाय, खानिवारे कौं छिन एक जीभ ही कौ स्वाद; तातें
 अपनौं सौ जीव सब काहू कौ जानियै . कछौ है, “जौ
 बन के कंद, मूल, फल, फूल, पात सेां, पेट भरै, तौ
 जीवहिंसा काहेकौ करियै?” ऐसे कहि, प्रतीति बढ़ाय,
 बिलाव गीध के समीप रह्यौ . कोऊ समय पाय, द्वै चार
 पंखीन के छौनानि कौं पकरि ल्यायौ . जब वे सिसु
 पुकारे, तब गीध बोल्ह्यौ, अहे दीरघकरन! इन बालकनि
 कौं तू काहे ल्यायौ है ? बाने कही, स्वामी ! मेरे बालक
 मोतें बिछरे हैं, ताके हेतु इन ते दिन कटो करतु हैं .
 ऐसे कहि, जद अपनौं मनोरथ साध्यौ, तद बिलाव वहां
 ते परायौ, अरु पंछियन आय अपने बालकनि के हाड़
 चाम गीध के खोडर समीप परे पाये; तब उननि जान्यौ,
 कि हमारे छौंना इन पापी विस्वासघाती चंडारि ने
 खाये . ऐसे समझि, सबनि मिल, गीध कौ जीव सेां
 माख्यौ . तातें हैं कहतु हैं, कि बिन जाने मिचाई कबहू
 न करियै .

यह बात सुनि, स्थार क्रोध करि बोल्ह्यौ, मित्र ! जा
 दिन तुम हिरन सेां मिचाई करी, ता दिन यह तिहारौ
 कुल सुभाव कहा जानतु हो, जौ मिल बैयौ ? यातें
 अपनौ परायौ कहनौं मूरखनि कौ काम है; पंडित
 कौं तौ सब अपने ही हैं; जैसे मृग हमारौ मित्र, तैसे

तुम झू; अरु भलौ बुरौ तौ व्यवहार ही तें जान्यौ जातु है . हिरन कही, मिच ! विवाद कौं करतु है ? जितेक मिल रहैं, तितेक ही भले . काग कही, भाई ! तुम जानौ . इतेक में सब अपने अपने उदर की चिंता कौं गये, अरु सांझ कौं आय इकठे भये . याही भांति वहां रहनि लागे . कितेक दिन पाछै, स्यार ने हिरन कौं एकलौ पाय कछौ, मिच ! हैं तिहारे लये आछौ इखौ कोमल जब कौ खेत देखि आयौ हैं, जो मेरी बैल चलौ तौ दिखाज . या रीति कपट करि, वाकौं कुमारग में ल्यायौ, अरु वझ कुबिसन कौ माख्यौ लोभ करि वाके संगही उठि धायौ . ऐसैं नित वाके संग जाय जाय, खाय खाय आवै . एक दिन वा खेत के रखवारे ने हिरन कौं आवतु देखि, फांद रोप्यौ . ज्योंहीं यह चरवे कौं पैखौ, त्योंहीं बझौ; तब मन में कहनि लाग्यौ, कि मिच बिस बोहि या संकट तें कौ निकारि है ? अरु इत स्यार वाकौं फांस्यौ देखि, नाचि नाचि, मन में कहनि लाग्यौ, कि मेरे कपट कौ फल आज मिलैगै; जब रखवारौ वाकौ मास भक्षण करैगै, तौ हाड़ चाम में जो मास लप्यौ रहैगै, सो हैं खाजंगै . यह तौ या बिचार में नाचि कूद रछौ हो, अरु मृग ने जान्यौ, यह मेरौ ई दुख देखि स्याकुल हो, हाथ पांव पटकतु है; पर यह न जान्यौ, कि दान कौ लोभी नटुचा की भांति कला करतु है . आगै स्यार की दसा देखि मृग कही, भाई ! मेरे

निमित्त तू शतौ खेद क्यों करतु है ? कछौ है, “आपदा में काम आवे सो हितू; रन में जूझै सो सूर; दरिद्र में स्त्री की परिक्षा लीजियै, दुख में बंधु जांचियै.” ऐसे मृग ने कछौ, तद् स्यार ने निकट जाय देख्यौ, कि यह तौ कठिन बंधन में पख्यौ है, तातें मेरौ मनोरथ शीघ्र सिद्धि होयगौ . ऐसे बिचारि बाल्यौ, भाई ! यह जाल तौ तांत कौ है, अरु मेरै आदित कौ उपास है, सो दांत करि कैसें काटों ? जो और ब्रत होय, तौ कछु चिंता नाहीं ; पर रवि के ब्रत कौ तौ यह बिचार है, जो भंग होय तौ सब पाछली काष्ठा निरफल जाय ; यातें आज तौ यह बात है, काल संकारे जो मोतें बनैगी सो करौंगौ . ऐसे कहि, वहां तें उसरि, परै होय बैद्यौ . इतक में मिसा बितोति भई, अरु वहां सुबुद्धि नाम काग जाग्यौ ; सो चिन्ताय करि कहनि लाग्यौ, कि रात्रि मिच मेरौ नाहीं आयौ, अब कल्लं खोजीं . यह कहि, वहां तें चलयौ . आगै जाय देखै तौ जाल में बझ रह्यौ है . काग कही, मिच ! यह कहा है ? उन कही, हितू ! मैं तेरौ कछौ न मान्यौ, ताही कौ यह फल है . पुनि काग कही, वह तेरौ नयौ मिच कहां है ? इन कही, वह मेरे मास कौ लोभी वहां हीं होयगौ . बहुरि काग कही, भाई ! साध जन अपनौ सौ सुभाव सब काह्ल कौ जानै, अरु दुष्ट कौ जातीय सुभाव है, जो वातें करै भलाई, तातें वह करै बुराई . कछौ है, “दुष्ट विम बुलाये, आय पहिलै पाय परै, पाछै

कानाबाती करै ; हित की रीति सेां प्रीति जनाय, कपट करि कुमारग बतावै, अवसर पाय घात चलावै ;” जैसे माछर पीठ पाछै आय, कान सेां लागि, समे पाय, डंक मारै, तैसे ही दुष्ट मनुष ; ताते हैं कहतु हैं, कि बैरी कौ बिस्वास कबहू न कीजै. ऐसे हू कछौ है,

“बैरी, बंदुआ, बानियां, ज्वारी, चार, लबार ;
बिभकारी, रोगी, रिनी, नगरनारि कौ यार .

नगरनारि कौ यार, भूल परतीत न कीजै ;

सौ सौ सेां हैं खाय चित्त एकौ नहीं दीजै .

कहि गिरधर कबिराय घरे आवै अनघैरी ;

हित की कहै बनाय जानियै पूरौ बैरी.” (कुंडलिया)

इतेक बातें सुनि, मृग लांबी सांस लै बोल्यौ, जे झूठी बातें कहि और कौ बुरौ करतु हैं, तिन कौ भार पृथ्वी कैसे सहति है ? ऐसे बतराय रहे हे, इतेक में रखवारौ आवतु देख्यौ ; तब वायस ने कुरंग ते कही, अब तू आंखि फिराय मृतक होय रहि, जब मैं पुकारौं, तब उठि भजियौ . यह सुनि, उनि वैसे ही करी . रखवारौ आय, हिरन कौ देखि, बोल्यौ, यह तौ आप ही मर रह्यौ है, याहि कहा मारौं ? आगे, वाहि मख्यौ जान, बंधन खोलकै, चाहै कि वाहि उठावै, त्योंहीं काग बोल्यौ, अरु हिरन उठि भाग्यौ . तब रखवारे ने खिस्यायकै लौठिया घाली, सो स्थार के मूड़ में लागी, अरु लागत प्रमान ही मख्यौ . ऐसे और हू ठौर कछौ है कि, “तीन दिन, तीन रात, तीन पक्ष, तीन मास, तीन बरष में, पुन्य अरु पाप कौ फल मिल रहतु है .”

इतनी कथा सुनि, लघुपतनक काग ने हिरन्यक चूहा
 सेां कही, मित्र ! जौ कदाचित मैं तुम्हें खाजं तौ पेट छ
 न भरै, यातें तुम से मित्र धरमात्मा साधु कौ बुरौ काहे
 करिहैं ? क्यौंकि चिचग्रीव सहित सब पंछी जब जाल में
 परे, तब तुमनि सहायता करि उनके जीव बचाये . कछौ
 है कि, “अपने कार्य सिद्ध करिबे कौं सज्जन तें मिचाई
 करियै, तौ एक दिन काम आवै ;” तातें हैं तिहारौ पठंगौ
 लियौ चाहतु हैं, कि कबहू मेरे दुखमें सहायता करिहौ ;
 या कारन आयौ हैं, तुम और मत जानौ . पुनि मूषक
 बोल्हौ, कि चंचल सेां मित्रता कबहू न कीजै ;

काम व भैंसा कापुरुष आन भेड़ मंजार ;

इन पांचनि के बिस्वास तें आपुनि जैयै हार . (दोहा)

यातें इन सबनि कौ बिस्वास कबहू न करियै ; बैरी
 मिल्यौ रहै, ताके हित पर न भूलियै . कछौ है कि, “कैसे
 छ तातौ पानी होय, पर अग्नि कौं बिन बुझाये न रहै ;
 निबल सबल न होय ; अनमिल बात कबहू न मिलै ;
 जैसे पानी में गाड़ी, अरु भूमि पर नाव, न चलै .” पुनि
 ऐसे छ कछौ है कि, “स्त्री तें मर्म की बात न कहियै ; जौ
 कहियै, तौ बिरोध न करियै ; करियै तौ जीवन की आस
 न राखियै .” कोऊ ऐसे छ कहतु है,

“साहें ये न बिबद्धियै कवि पंडित गुरु गार ;

बेटा बनिता पौरिया यक्षकरावनहार .

यक्षकरावनहार राजमंजी जो होई ;

बिप्र परौसी बैद आप कौं तपै रसोई .

कहि गिरधर कबिराय यहै कैसी समुझाई ;
इन तेरह तें तरह दियै बनि आवै साईं .” (कुंडलिहा)

बहुरि काग कही, प्रीतम! जो तुम कह्यौ, सो सब मैं
सुन्यौ; पर मेरौ यह बिचार नाहीं जो तुम तें द्रोह करौ;
अरु जो तुम मोसों प्रीति न करिहौ, तौ तिहारे बार पर
उपास करि करि प्रान तजौंगै, मोहि राम लक्ष्मन जू
को आन है; क्योंकि असाध की मिचाई थोरे ई दिननि
में टूटै; जैसें माटी कौ पाच फूटिकै न जरै; अरु साध
की प्रीति ऐसें है, जैसें सुबरन कौ पाच, बेग न फूटै; अरु
जो फूटै, तौ फेरि संधै. औ कितेक सज्जन पुरुष नारियर
की भांति रहतु हैं, कि ऊपर तें तौ कठिन, अरु भीतर
कोमल; पुनि दुष्ट जन हू की बेर की सी रहन है, कि
ऊपर कोमल, अरु भीतर कठोर; तातें सज्जन अरु दुष्ट
जन सुभाव ही तें जान्यौ जातु है, कछु रहन तें नाहीं;
अरु पवित्र, दाता, स्वर, संकोची, स्नेही, निर्लोभी, सत्य-
वक्ता, साध होतु हैं, असाध न हौंय; यासों तुम ही कहौ,
कि साध जन पाय को न प्रीति करै?

या रूप की बातें सुनि, हिरन्यक मूसा बिल तें बाहर
निकस बाल्यौ, कि तेरे वचन सुनि मैं अति सुख पायौ;
जैसें कोऊ लूअ कौ माखौ, स्नान करि, चंदन सब अंग
पर चढ़ाय, शीतल होतु है, तैसें मेरौ हियौ ठंडौ भयौ.
कह्यौ है, “छः प्रकार तें प्रीति बढ़ति है, लैवौ, दैवौ, गुह्य
कहिवौ, सुनिवौ, खैवौ, खवायवौ. अरु ये स्नेह के दूषन हैं,
सदा मांगवौ, अप्रिय वचन कहिवौ, मिथ्या भाषवौ, चंच-

लता, अरु जुआ, सो तौ में एक हू नाहीं; यासों हैं तेरौ सुबिचार देखि प्रसन्न भयौ, आज तें तू मेरौ मित्र है. इतनी बात कहि, काग कैा द्वार पर बैठाय, मूसा बिल में गयौ, अरु वहां तें कछु खैवे की सामग्री ल्याय, खवाय, आप हू वाके पास बैस्यौ. ऐसें वे दोऊ वहां रहनि लागे.

एक दिन काम कही, भाई मूसा! या ठौर तौ अति कष्ट सों अहार जरतु है, यासों वहां चलौ, जहां बहुत चुगौ, सुख तें खैवे कैा मिलै. पुनि मूषक बोळ्यौ मित्र! कछौ है कि, “जा सयानौ होय, सो आगलौ पाथ धरि पाखलौ पग उठावै;” तातें प्रथम ठौर बिचारौ, ता पाछै वहां तें चलौ. वायस कही, बंधु! मैं नीकी ठाम बिचारी है, कि दंडकारन्य बन में कर्पूर नाम सरोवर; तहां मंथ-रक नाम कछुआ मेरौ मित्र है, सो बड़ौ पंडित धर्मात्मा है. कछौ है, “औरन के धर्म उपदेस दैन कैा सब पंडित हैं; पर आप धर्ममारग में हड़ता राखें, ते बिरले जन होतु हैं;” तातें मित्र! वह हमकौ भली भांति राखि रक्षा करिहै. कछौ है, सुनौ, “जा देस में अपनी बड़ाई, मित्र, बिद्या की प्राप्ति, सुसंग, गुनबिचार, अरु तीरथ हू न होय, तौ वहां बसिबौ उचित नाहीं.” मूषक कही, हितू! वहां मोकौ हू साथ लै चलौ. ऐसें बतराय, दोऊ कछुआ पै गये. इन्हें देखि कच्छप बोळ्यौ, मेरौ मित्र लघुपतनक आयौ. इतनौं कहि, आगू बढ़ि, शिष्टाचार करि, आदर सों पाथ पखलाय, आसन पर बैठाय, पूजा करनि लाग्यौ;

तब कौआ बोल्ह्यौ, मिच ! याकी पूजा बिशेष करि करौ ; यह बड़ौ धर्मात्मा हिरन्यक नाम मूसा, सब चूहन कौ राजा है, याके गुन को स्तुति करिवे कौ मेरौ मुख नाहीं ; जौ सहस्र मुख तें शेषनाग जू कहैं, तौ कहि सकैं . इतनी कहि, चिचग्रीव की सब कथा सुनाई ; तब मंथरक ने वाकी पूजा करि पूछ्यौ, आपु कौ बास कहां ? अरु यहां आवनैं कैसें भयौ ?

तब मूसा कहनि लाग्यौ ; चंपानगरी में सन्यासियन कौ मठ, तामें चूराकरन नाम सन्यासी रहै ; सो जो भिक्षा मांगि अन्न ल्यावै, वह जंचे आरा में राखै, वा अनाज कौ हैं कूदि कूदि खाजं . कितेक दिन पाछै, वाकौ मिच बीनाकरन नाम सन्यासी तहां आयौ ; चूराकरन वासों बात करै, अरु लकरी धरती में खरकावै ; तब बीनाकरन कही, तू जो मेरी बात नीकै चित दै नाहीं सुनतु, सु तेरौ मन कहां है ? पुनि उनि कही, गुरुभाई ! हैं तौ तेरी बात हियौ दै सुनतु हैं, पर यह निगुरौ मूसा मेरी भिक्षा कौ अन्न सब खातु है, मोहि दुख देतु है, याहि लालच लाग्यौ ; भाई ! याकौ कछु उपाय करौ . बीनाकरन बोल्ह्यौ, याकौ कछु कारन है ; ज्यों एक तरुन स्त्री ने बूढ़ै पुरुष कौ आलिंगन चुंबन करि, जार कौ छिपायौ, त्यों यह मूसा हू बिन कारन नाहीं कूदतु . चूराकरन कही, यह कैसी कथा है ? पुनि बीनाकरन कहनि लाग्यौ ;

गौड़देस में कौशंबी नाम नगरी, ता में चंदनदास एक

बनियां; उन दृढ़ अवस्था में, धन के मद से लीलावती नाम और महाजन की बेटी ब्याही; सो काम की अधिकारी तें थोरे ई दिननि में जोवनवती भई, तब बाहि अनखांवनीं लागै, जैसे बिरहिनि कौं चंद; अरु घाम के तैसे कौं खरज न सुहाय तैसे तरुन स्त्री कौं बूढ़ा स्वामी न भावै; क्यौंकि दृढ़ कौं दर्प कहाँ? कछौ है, “ज्यौं बालक कौं औषध न रुचै त्यों वह न बाहि नीकौ न लागै; पर बुढ़रा बातें अधिक प्रीति करै.” कछौ है, “जो नारी पति के साक्षात और पुरुष से बातें करै, सो निस्संदेह परकीया होय.” कहतु हैं, “इतनी भांति से परकीया होति हैं; बाल होय जाकौ पति, दृढ़ होय, कुरूप होय, बिदेस होय, पास न रहै, हित न करै, असंतान होय;” नारी इतनी भांति विभचारिनी होति हैं; अरु मद पीवै, कुसंग में बैठै, पति के औगुन और से भावै, घर घर डोलै, अति सोवै नित तन मांजै, सदा सिंगार करति रहै, राच परधाम बसै; ये नारीन के दूषन हैं. अरु जिन के सयान नाही, ठिठाई नाही, और पुरुष से न बोलै, लाज बहुत, ते स्त्री पवित्र जानियै. कहतु हैं, “नारी छत समान, अरु पुरुष अग्नि सम, तातें इन कौ संग भलौ नाही” पुनि कछौ है, “बाल अवस्था में पिता रक्षा करै; तरुनाई में पति रखवारी करै; दृढ़पन में पुत्र सावधानी तें राखै; तौ स्त्री कौ धर्म रहै, नातौ नष्ट होय.”

आगै एक दिन वह लीलावती बनियां के पुत्र साथ

अपने घर में आनंद कर रही थी, यामें बाकौ पति बाहर तें आवै। ताहि आवतु देखि, बेग ही खटिया तें उतरि, समस्तुख धाय, आखिंमन कियौ। बाके देखिबै कौं तौ है आख ही, पर एक सेां दीसतु न हो: अब जासेां दीसतु हो, ता पै चुंबन कौ मिस करि, उनि मुख राख्यौ, औ नार कौं बाहर निकारि दियौ। कछौ है कि, “जो दृढ़स्यति तें विद्या पढ़ै पर उत्पात को ठांव वाह्य को बुद्धि स्थिर न रहै, अब कछु न बनि आवै सो नारी बिन ही में उपाय करै.” आगै खीसावती कौं आखिंमन करति देखि, एक दूसरी स्त्री ने कारण बिचारि, बाहि डांख्यौ, अब कछौ, ऐसै काम फेर जिन कोजो। तातें मूसा के कूदवे को कारण में जान्यौ, कि याके बिल में माया है; क्यौंकि धन बिन बख नाहीं होतु। कछौ है,

“कनक कनक तें सौ गुनी मादकता अधिकार्य;

बह खाये बौरातु है, यह पाये बौराय.” (शेहा)

ऐसे कहि, सन्यासियन मिलकौ मेरे बिल तें सब धन काढ़ि लियौ; ताके दुख तें ही बल हीन भयौ, अब मन में उत्साह न नाहीं रह्यौ, क्यौंकि देह में जो बल हर्ष होतु है, सो माया तें; अब धनहीन तें कछु न बने। कछौ है, “धनहीन पुरुष संसार में मृतक समान है.” जब द्रव्यहीन भयौ, तब निबलाई तें मो पै चलयौ न जाय। पुनि चूराकरन सन्यासी मोहि देखि काल्यौ, कि यह मूषक अब सीधौ भयौ; जैसें ग्रीष्म ऋतु में नदी बलहीन होति है, तैसै चै गयौ। कहतु हैं, “द्रव्यहीन की मति

स्थिर न रहै, जा पे धन, सो ई बुद्धिमान, पंडित, घानी,
दानी, बली, चतुर, कुलीन, गुनी है; अरु पुत्र बिन घर
खान्ध, निधा बिन हृदै; औ दरिद्री कीं संसार खनौ
लागतु है." पुनि देखी, धन नये कैसे हू सुरुष होय,
पर कुरूप हो जातु है. ऐसी बातें वा गुस्ताई की सुनी,
तब मैं ने अपने मन मांहिं बिचार्यो, कि अब यहां रहनीं
जोग नाहीं. कछौ है,

“मंत्र... बौद्धी दान मान अपमान;

मर्म त्रय ग्रहहिम ये प्रगट न जान बखान." (दीक्षा)

जौ कहियै, तौ मिथ्या अपनौं भर्म गंवैयै; जब दैवता
असंतुष्ट होतु है, तब जो उद्यम करै सो निर्फल जाय; अहं-
कारी कौं है बात, जैसे धतूरा कौ फूल, कै तौ भूमि पखौ
खूखै, कै महादेव के माथे चढ़ै; तातें भिक्षा उपाय करि
जीवै जोग नाहीं; छपन तें मांगिवौ, औ मरवौ, समान है.

मान सनमान कौ प्रयान होतु पहलै ही यद्यपि निपट;

गुनी गिर हू तें गहवौ.

कहै कवि देव बार बार जस उचरतु चुटकीं देतु जान;

कुटकी तें कबवौ.

अति ही अजनबाऊ तज तन घोरौ दीसै मन मांहिं;

कैसे जौ छिडोरे कौ सौ मरवौ.

हन हू तें तूज हू तें फैन हू तें फूल हू तें मेरे जान सब ही तें;

मांगवौ है हखवौ. (कवित्त)

पुनि चूराकरन तें बीनाकरन कहनि लाग्यौ, कि परा-
धीन भोजन, द्रव्य है व्याह, विद्या करि हीन, प्रदेश कौ
बास, काया रोगी, पराये घर सेनौं; ऐसे मनुष कौ जीवन

मरन समान है. कछौ है, “लोभ तें चित दुलै कह पावै, मरन होय, लोक परलोक जाय.” जब वा गुसाई ने ऐसे बोल कहे, तब मैं ने विचार्यौ, कि हैं लोभी, असंतोषी, आत्मद्रोही हैं; तातें मेरी संपत्ति गई, अरु संतोषी की संपत्ति कबहू न जाय; जे संतोष करि अघाने हैं, तिन कौं जैसा सुख है, तैसा असंतोषी कौं नाहिं. कछौ है, “जिन तृष्णा न राखी, काहू की सेवा न करी अधीन बचन न भाषे, बिरह की पीर न सह्य, अधीरता न की, ऐसे पुरुषनि तें सौ जाजन धन दूर रहतु है; अरु संतोषी कौं हाथ की वस्तु कौ हू आदर नाहीं.” ऐसी विचारकौ हैं निरजन बन में आयौ; तिहारौ आश्रम स्वर्ग समान पायौ. कहतु हैं, “यह संसार विषय कौ रुख है, यामें द्वै फल मीठे कहतु हैं; एक तौ काव्यरस, दूजौ साधकौ संग.”

इतेक बातें सुनि मंथरक कछुआ बौल्यौ, मित्र ! धन में बड़ौ दोष है, एक तौ अनेक दुख पाय इकठौ कीजै, दूजै प्रान तें हू यत्न करि राखियै; ऐसी धन काहेकौ भलौ? कछौ है, “जे अपनौं सुख छोंड़ि, परायें लयै द्रव्य उपजाय राखैं, ते ऐसे जैसे मोटिया मोट बाहि मरै, अरु भोग और ही करै;” ऐसे तौ सब धनवान ही कहावैं; क्योंकि दान भोग में तौ नाहिं. यातें दरिद्री औ धनी समान; पर धनवान कौं एक और दोष, कि बाहि गये कौ सोच सो निर्धन कौं नाहीं. पुनि कछौ है, “चार बात संसार में आय मनुष तें हैनी कठिन हैं; प्रिय बचन सहित

दान, गर्व विन ज्ञान, क्षमा समेत सूरता, त्याग लिये धन ;” यातें धर्म कौ संचय करियै, अति लोभ न करियै ; जैसे एक स्थार अधिक लालच करि माख्यौ गयौ . हिर-
न्यक बोख्यौ, यह कैसी कथा है ? कछुआ कहनि लाग्यौ ;

कल्याणकटक नगर में भैरव नाम व्याधी, सो एक दिन बिंध्याचल के बन में गयौ हो ; हो झां तें एक मृग मारि, कांधे लियै आवतु हो ; गैल में एक सूकर आवतु देखि, या ने लोभ करि, वा पै बान घाल्यौ ; सो सर तौ वाकै लाग्यौ . पर मरतु मरतु वाने या छू कौं आय माख्यौ . इहिं बीच, एक दीरघराव नाम स्थार क्षुधित छै आय कळ्यौ, अरु इन तीननि कौं झां परे देखि, विन अपने जी मांहिं बिचाख्यौ, कि अहार बहुत पायौ, याहि अनेक दिन लौं खाजंगौ, अरु अपनी काया पुष्ट करौंगौ यह विचारि वह स्थार बधिक के पास जाय, ज्यों पहिलै धनुष की जेह खानि लाग्यौ, त्यों हीं जेह टूटि छोर छुटि, वाके कपाल में लाग्यौ अरु ततकाल प्राण देह तें निकरि भाग्यौ . जंबुक जीव सेां गयौ, मांस सब झां हीं धख्यौ रख्यौ ; तातें हीं कहतु हीं, कि अति लोभ करि संचय न करियै ; अरु जो धन पाय न खाय, न देय, ताकौ द्रव्य जौलौं जीवै तौखों रहै ; मरे पर वाके धन जन के और ही गाहक होतु हैं ; जीवतु भर देखि देखि मन रंजन करै, मरै पै वाके काम कछु न आवै . यातें खाइयै, लुटाइयै, सोई अपनौ ; क्योंकि यामें स्वारथ परमारथ दोऊ रहतु हैं .

इतनी बात कहि, पुनि कच्छप ने मूसा से कछौ, कि अब तुम गये द्रव्य कौ सोच जिन करौ ; क्योंकि जो वस्तु पायवे जाग न होय, ताकौ यत्न पंडित चतुर नाहीं करतु हैं . ताते मिच ! तुम चिंता मत करौ . कछौ है कि, 'विद्या पढ़े ते सब पंडित नाहीं होतु हैं ; जे क्रियावान, ते ई पंडित है ; जैसे रोगी कौ रोग औषध कौ नाम लिये न जाय, खाय तब ही जाय ; तैसें विन उद्यम, विचार किये धन छ न आवै ; आंधरे के हाथ दीपक कहा करै ? अपनी आंख की जाति विन प्रकाश न करै . " पुनि कछौ है, "दांत, केस, मख, नर, स्थान छूटे ते सोभा न पावै ; अरु सिंह, खर, गज, पान, पंडित, मुनवान, औ जागी, ये जहां जहां संचरै, तहां तहां आदर बढ़ावै . " कहतु हैं, "जैसे कुआ में दादुर, सरोवर में कंवल, आप ही ते आवै, तैसें उद्यम किये लक्ष्मी छ आवै ; दुख सुख चक्र की भांति फिरतु है, अरु जे पुरुष साहसी, खर, आनी, उद्यमी, हैं, तिन कौ दुख नाहीं व्यापत . " कछौ है कि, "कैसे छ पंडित, गुनी, तपसी, खर, बंधु, धनवंत, होय ; पर सोभ किये अनादर ही पावै ; गुनवान सुभाव ही ते बढ़ौ ; जैसे कंचन कौ आभूषन, औ कूकर के गरे बांधे तौ छ सुहावनों लागै . " ताते हों कहतु हों, कि धन कौ सोच न करियै ; क्योंकि अब माता के गर्भ में बिधाता वास देतु है, ताके प्रथम ही दूध स्तन में प्रगठ करतु है, औ पाछे जन्म होतु है . ऐसौ विचारियै,

जिन तेते हृदये किये खाम काम हंस सेत ;

भोर बिचित्र जू रंज किये सो चिंता करि देत . (दोहा)

अरु सुनौं, धन में एते दुख हैं, उपजतु, राखतु, जातु;
 औ बहुत बाढ़े हूँ धन सुख कबहूँ न देय; यार्ते ज्यों
 उपजै, त्यों दीजै, खाइयै, तौ ही भखौ; नातौ जैसे मास
 कौं ऊपर राखे पंखी खाय, भूमि में स्थार कूकर, पानी
 मांहिं कच्छ मच्छ, माटी मांहिं कीरा कीरी खांय; तैसें
 धन कौं चार भय, राजभय, अग्निभय, चोरभय, दुष्टभय,
 अरु ताहूँ में यह बड़ौ दोष, कि माया के लोभ तें सेवक
 होय अधोनता करै; पर भावी काहूँ से न टरै. यासें
 प्रीतम! तुम हमारौ साथ अब जिन छांदौ, जन्म भर
 छां ही रहौ. कह्यौ है, “संतोष करि रहनौं, दान दैनौं,
 क्रोध न करनौं, ये साध के लक्षण हैं, असाध तें न
 हैं।” इतेक सुनि लघुपतनक काग बोळ्यौ, अहो मित्र
 मंथरक! तुम कौं धन्य है! अरु आश्रम के जोग महंत
 है, आपदा में उद्धार लेतु है, ऐसें जैसें दहदह में पड़े
 हाथी कौं हाथी ही काढ़ै; अरु संसार में तेई नर स्तुति
 करिवे जोग हैं, जे पराये दुख में सहायता करै, अरु
 जिनके द्वार तें सरनामत निरास न आय, जाचक विमुख
 न फिरै. इतनी कहि, वे तीनों वा ठांव सुख से जातु,
 पीवतु, क्रीड़ा करतु, आनंद से रहनि लागे .

एक दिन तहां चिचांगद नाम ब्रूम, भोर ही व्याधी
 कौ डरायौ आयौ; ताहि आवतु देखि मंथरक जल

माहिं पैद्यौ मूसा बिल में धस्यौ, काग रूख पर उड़ि बैद्यौ; अरु वाने दूर लौं दृष्ट करि देख्यौ, कि याके पाछै धार तौ कोऊ नाहिं यह अकेलौ ई आवतु है; तब काग बोल्ह्यौ, भाई! कछु भय नाहिं, सब निकरि बैठौ. यह सुनि, बेज निकसि आये औ तीनों मिल बैठे. हिरन इनके पास आयौ, तब मंथरक बोल्ह्यौ, मिच! तुम कुशल छेम तें नोकै आये? कछ्यौ है, “उत्तम पुरुषनि कौ यह धर्म है, घर आये कौं पहिलै तौ कुशलात पूछै, पुनि आदर करि बैठावै, फेरि अति सनमान करि भोजन कौं पूछै, यह उत्तम जन कौ ब्यौहार है.” इतनौ पूछि पुनि कछ्यौ, अहे मिच! इत आवन तिहारौ कैसें भयौ? मृग कही, हैं ब्याधी कौ डरायौ आयौ हैं, अरु तुम तें मिचाई कियौ चाहतु हैं. हिरन्यक कही, हम तुम तौ सहज ही मिच हैं, औ परंपराय तुम तें हम तें मिचाई चली आवति है. कछ्यौ है, “जो आपदा में राखै, सो तौ सदा हो कौ मिच है.” तुम इत आये सो भली कीनी, अपने घर तें यहां नोकी भांति रहिहौ. यह बात सुनि कुरंग ने अहार कियौ, अरु पानी पी, रूख तरै बिसराम लियौ. पुनि मंथरक बोल्ह्यौ, मिच! तुम कछ्यौ, कि हैं ब्याधी के डर तें आयौ सो या निरजन बन में ब्याधी कहां?

हिरन कही, कलिंग देस कौ राजा रुक्मांगद, सर्व दिस जीत, चंद्रभागा नदी के कांठे आय उत्तख्यौ है, अरु सकारै

इत आथ या कर्पूर सरोवर में जारि डारि मच्छ कच्छ पकरिहै . यह बात है धीवर के मुख तें सुनि आयौ है , ताते यहां रहनैं भली नाहीं . कछौ है , “कष्ट आवतु देखि दूर तें टारियै .” मैं तौ यह कछौ , पर अब तिहारी बुद्धि में आवै सो करौ . मंथरक बोल्थौ , है और सरोवर में जाऊं . तब काग औ मृग ने कछौ , कि पानी के जीव कौ पानी कौ बल ऐसे हैं , कि जैसे राजा कौ अपने राज कौ . पुनि हिरन्यक मूसा बोलि उद्यौ , कि भाई ! तुम तौ बात कौ भेद न समझ ऐसे बिचार करतु है ; जैसे एक बनियां के पुच ने अनजाने बिचार कियौ , अरु पाछे अपनी स्त्री कौ देखि दुख पायौ . मंथरक कछौ , यह कैसी कथा है ? तब मूसा कहतु है ;

बीरपुर नगर , वाकौ बीरसेन नाम राजा , ताकौ पुच भयौ , जाकौ नाम तुंगबल धर्यौ . जब वह सामर्थ भयौ , तद राजा ने राज सुत कौ दयौ , आप हरिभजन करनि लाग्यौ , औ राजकुमार राज . एक दिन वह राजपुच देव दरसन किये आवतु हो , वाने काहू बनियां की स्त्री तरुनि अति रूपवती गैल में देखी . वाकौ रूप चाहि , यह काम कौ सतायौ निज मंदिर मांछि आयौ ; अरु वह लावन्ध-वती हू राजकुमार कौ देखि , कामातुर होय , अपने धाम कौ गई . कछौ है , “स्त्रियन कौ ना कोऊ प्रिय , औ ना अप्रिय ; जैसे बन मांछि गैयां नये नये , हरे हरे , तन चरै , औ मन संतुष्ट करै , तैसें जुवती हू नवीन नवीन

नर चाहैं. पुनि राजकुमार ने एक दूती बुलाय, वाकौं अपनी अवस्था जताय, वाके निकट पठाई. वाने जाय राजपुत्र की सब अवस्था सुनाई; तब उनि कछौ, हैं तौ पतिव्रता हैं, अरु नारी कौं ऐसौ कछौ है कि, “बिन स्वामी की आज्ञा कछु काम न करै;” यातें जो मेरौ भर्तार कहैगौ सो मैं करौंगी. दूती ने कछौ, यह तैं भली कही, हैं ऐसे ही करिहैं. इतनौ कहि, दूती राजपुत्र पै आई, अरु वाकौ संदेसौ कछौ. राजकुंवर कही, यह कैसें छैहै? बहुरि दूती कछौ, महाराज! कछु चिंता जिन करौ, उपाय करिहैं,. कछौ है, “जो कार्य उपाय तैं होय, सो बल तैं न होय; जैसें स्यारनि उद्यम करि गज कौं कीच मांहिं फंसायकै माख्यौ.” राजपुत्र कही, यह कैसी कथा है? तब दूती कहति है;

ब्रह्मारन्य बन में एक कर्पूरतिलक नाम हाथी रहै; ताहि देखि सब जंबुक मतौ करनि लागे, कि काह्न प्रकार तैं या गज कौं मारियै, तौ चौमासे भर खैवे कौं अहार मुकतौ होय. यह सुनि, बिन में तैं एक बृद्ध स्यार बाल्यौ, या हाथी कौं हैं युक्ति करि मारिहैं. इतनी कहि, वह बूढ़ौ जंबुक गज के निकट गयौ, अरु धूर्त्त ने मन मांहिं कपट करि, वासों यौं कछौ, हे देव! तुम मो पर कृपा करौ. गज कही. अरे! तू को है? अरु कहां तैं आयौ है? इन कही, सब बनबासियन मिल मोहि तुम पै पठायौ है, औ बिनती करि कछौ है कि, या बन में हमारौ कोउ राजा नाहिं, बन के

राजा तुम है, सब गुन संयुक्त . कछौ है, “जो कुलवंत, आचार, प्रताप, धर्म, नीति, संयुक्त होय, ताकों राजा करियै,” अरु राजा नीकौ होय तौ धन स्त्री कौ संचय करियै . कहतु हैं, “प्रानी कौं जैसौ मेंह कौ आधार, तैसौ ई राजा कौ भरोसौ है ; कौंकि राजा के भय तें सब धर्म रहै ; दुर्बल, रोगी, दरिद्री, पति हू की पत्नी, भूपाल के भय तें सेवा करै ;” यातें अब तुम बिलंब जिन करौ, बेग चलौ ; शुभ कर्म में ढील करनी जोग नाहीं . यह कहि, स्यार हाथो कौं लै चलयौ ; अरु गज हू राजपद के लोभ कौ मालौ वाके साथ छै लियौ ; आगै आगै स्यार, पाछै पाछै कुंजर ; ऐसें दोऊ चले ; जा पैड़े मांहिं बरषा की दहदल छै रही ही, ताही गैल वह वाकौं लै चलयौ . आगै जाय हाथी दैं में फंस्यौ ; तब बोल्यौ, मिच ! अब हैं कहा करौ ? स्यार कही, मेरी पूछ पकरि चलयौ आव . यौं सुनाय, पुनि जब देख्यौ, यह या मांहिं फंस्यौ ; तब इन कही, तुम सोच जिन करौ, हैं तिहारे निकारिवे कौं अपने सजाती भाइयन कौं टेरि ल्यावतु हैं . इतनी कहि सब जंबुकनि बोलि लै आयौ, अरु काढ़नि के मिस दांतनि तें वाकौ चाम फारि फारि खायौ ; गज चिचाय चिचायकै मख्यौ .

इतनौं कहि, दूती बोली, महाराज ! उपाय तें कहा न होय ? यातें अब हैं कहाँ सो तुम करौ . प्रथम तौ लाव-न्यवती के पति कौं चाकर राखौ ; पाछै जो हैं कहाँ सो कीजौ . यह सुनि, राजकुमार ने लावन्यवती के भरतार

चारुदंत कौं चाकर राख्यौ . पुनि दूती ने राजपुच कौं सब छलछिद्र की बातें सिखाय दई ; तब उनि बाकी प्रतीति बढ़ाय, बाहि सब काम में प्रधान कियौ . एक दिन राजपुच ने चारुदंत से कछौ कि, आज तैं लैं हैं एक मास लौं श्री भवानीजू का व्रत करिहैं, तुम काहू सौभाग्यवती स्त्री कौं ल्यावौ . आज्ञा पाय, चारुदंत काहू असती स्व-दृच्छाचारनी कौं लैं आयौ ; तद राजपुच ने पवित्र होय बाहि एकांत लैजाय, पाय पखलाय, भोजन करवाय, केसर कपूर चंदन से कंचि, वस्त्र आभरन पहिराय, अति आदर मान तैं बिदा कियौ . तब गैल में जाय चारुदंत ने लोभ करि वा नारी से कछौ कि, या द्रव्य तैं कछु मो हू कौं बांटे दै . उन कही, मोहि राजकुमार ने द्यौ है, मैं तोहि क्यौं बांटे दैजंगी ? निदान वाने धन न दियौ ; तद चारुदंत ने अपने मन मांहिं बिचाख्यौ कि, राजपुच तौ नित एक महीना लौं इतनी धन देयनै, यातैं अपनी स्त्री कौं क्यौं न ल्याऊं, जु इतेक द्रव्य सेत मेंत अपने घर लैं जाऊं ? यौं बिचारि, वह निज घर आय लावन्धवती से बोल्यौ कि, हे प्रिये ! राजकुमार इतनी धन नित प्रित देयनै ; जौ तू जाय तौ वह सब धन अपने गेह मांहिं आवै . लावन्धवती बोल्यौ, स्वामी ! हैं तिहारी आज्ञाकारी हैं, जो तुम कहै सो मोहि प्रमान है . निदान लोभ के मारे वाने अपनी मारि राजपुच कौं आन दई . पुनि राजकुमार ने बाहि देखि, मन में कही कि, जाके मिलन की अभिलाषा ही, सो तौ आय मिली,

अब अपनी मनोरथ क्यों न पूरौ करै? यह समझि, निरालौ करि, वाने अपने मन की आस पूजो, अरु धन दै वाहि बिदा कियौ . तब चारुदंत बनियां निज मंदिर में जाय, स्त्री कौ अंगार छिन्न भिन्न देखि, अपनी करनी औ करतूत तैं आपही पछतायौ .

अर्थ न समझौ बात कौ ग्रंथ न दीनों मझ;
नगर लोग के देखते भयौ भांड महाजत्र . (दीक्षा)

इतनी कथा कथ, फेरि मूसा बाल्यौ, अहो मिच मंथ-रक! जौ तुम अपनी ठौर तैं अनत जायहौ, तौ दुख पायहौ . आगै ईदुर की बात न मान, मंथरक भय कौ माख्यौ सरोवर छांड़ि बन कौं चलयौ, अरु वे तीनैं हू वाके साथ हू लये . आगै जात ही एक व्याधी आयौ, तिन कच्छप कौं पकरि बांध्यौ . कहतु हैं, “जब आपदा आवै, तब सुख में दुख बढ़ावै; कैसौ हू बलवान बुद्धिवान होय, पर आपदा तैं न छूटै .” पुनि ऐसैं हू कह्यौ है कि, “संपत में बिपत, संजाग में बियोग, लाभ में हानि, गुन में दोष, ज्ञान में गिलान, मान में अपमान, हांसी में बिषाद, भलाई में बुराई; ये सब समय पाय आप तैं आप आय घटति हैं; पर भय औ आपत्य है, सो प्रीति की कसौटी है, याही में सज्जन अरु दुरजन जान्यौ जातु है; औ यौं कहवे कौं तौ सब ही सब के मिच हैं .

सुख में सज्जन बज्जत है दुख में कोने कोन;
सोना सज्जन कसग कौं बिपत कसौटी कोन . (दीक्षा)

आगै मंथरक कौं बझ्यौ देखि, वे तीनैं चिंता करनि लागे; तद् मूसा ने हिरन सों कझ्यौ, मिच! तुम पंगु बनि

बधिक के आगै छै कढ़ौ; जब यह बधिक मंथरक कौं त्यागि, तिहारे पाछै भजिहै, तब हौं याके बंधन काटिहौं, काग बोले बहुरि तुम पराद्वयौ . यह बात मूषक तें सुनि, कुरंग ने त्योंहीं करी . बधिक ने देख्यौ कि, मृग लंगरातु जातु है, याहि दैरिकै पकरि लैउं . यों बिचारि, व्याधी अपनैं सरबसु जल के तीर रुख तरै राखि, हिरन के पाछै दोख्यौ, त्यों मूसा ने मंथरक कछुआ के बंधन काटे, वह नीर मांहिं गिख्यौ; काग पुकाख्यौ, भाई! भागौ! परमेश्वर ने काग सुधाख्यौ . यह सुनत ही, मृग चौकरी मारि परायौ; व्याधी निरास छै उलटौ फिर आयौ . वहां देखै तौ कछुआ छ नाहिं; तब कहनि लाग्यौ कि, मोहि ऐसौ करनौं उचित न हो जा हाथ कौ छेरि और कौं धायौ . कह्यौ है, “अति लालच नीकौ नाहीं, जैसौ मृग कौ लोभ कियौ, तैसौ हाथ आयौ, कछुआ खाय दियौ . ऐसैं पछताय, व्याधी वहां तें गयौ, ये चारों मिच तहां सुख सों रहे, उनके मनोरथ पूरे भये .

इतनी कथा कहि, बिष्णुशर्मा बोख्यौ, महाराजकुमार ! सुनौं ! या कथा के सुने तें सज्जन सों मिचता होय, मन में संतोष आवै, घर मांहिं लक्ष्मी बाढ़ै, राजा राजनीति सों चले, प्रजा की रक्षा करै . यह मिचलाभ प्रथम कथा कह्यौ, या में जाकी रुचि होय सो कबहू ठगायौ न जाय, सदा निर्मल बुद्धि तें संसार के सब काज साधै, बक्ता ओता कौ श्रीमहादेव जू कल्याण करै .

इति मिचलाभो नाम प्रथम कथा संग्रहः संपूर्णः .

अथ सुहृद्भेदः ।

राजकुमारनि विष्णुशर्मा सेां कह्यौ, अहो गुरु देव ! मिचलाभ की कथा तौ हमनि सुनी, अब कृपा करि दूजी सुहृद्भेद की कथा सुनाओ . तहां विष्णुशर्मा कहतु है कि, महाराजकुमार ! पहिलै एक बरध औ बाघ सेां स्यार ने, प्रीति करवाई अरु पाछै बरध कौं मरवायौ वाही बाघ सेां . राजकुमारनि कह्यौ, यह कैसी कथा है ? तद विष्णुशर्मा कहनि लाग्यौ कि ;

दक्षिन दिसा में सुवर्ना नाम नगरी ; तहां एक बर्द्धमान नाम बनियां, सो बड़ौ धनवंत हो . काहू दिन वाने एक और सेठ की संपत देखि, अपने मन में बिचाख्यौ कि, काहू भांति और हू लक्ष्मी इकठो करौं तौ भलौ . कह्यौ है, “आप तें अधिक बल, द्रव्य, विद्या, देखि, काकौ मन मलीन न होय ? अरु ऐसें हीं, अपनी संपत की बढ़वार देखि, को न मन मांहिं अहंकार करै ? क्यौंकि धनाढ्य कौं सब कौज मानै ” पुनि ऐसें हू कह्यौ है कि, “असाहसी औ आलसीन कौं लक्ष्मी आप ही त्यागति है ; जैसें बड़ पुरुष कौं तरुन स्त्री न चाहै, तैसें विन्हें लक्ष्मी हू .” अरु जे आलसी होय, संतोष करि घर मांहिं बैठ रहैं, तिन कौं बिधाता कबहू न बढ़ावै . कह्यौ है, “भगवान

असाहसी पुच हू काहू कौं न देय.” बहुरि कहतु हैं कि, “अनपाई वस्तु कौ यत्न कीजै, तौ प्राप्त होय; अरु वाकी चिंता न करियै तौ न मिलै.” ऐसे बिचारि, बनियां पुनि मन में कहनि लाग्यौ कि, जो धन पाय न खाय, न उठावै, वह धन कौन काम आवै? औ बल भये शत्रु कौं न मारियै, तौ वा बल कौं लै कहा करियै? अरु विद्या पढ़ि धर्म न जानियै, तौ वा विद्या तें कहा लाभ? पुनि सरीर पाय उपकार न होय, अरु इंद्री न जीतै, तौ सरीर सेां कहा अर्थ? कह्यौ है, “थोरौ थोरौ उद्यम करै हू धन बाढ़ै; तैसें बूंद बूंद जल करि घट भरै; अरु बिन विद्या औ धन जो जन सांस लैतु है, सो लुहार की धवनि समान जानियै.”

ऐसें सोच बिचार करि, बर्द्धमान बनियां, नंदक औ संजीवक बलध रथ मांछिं जाति, बहुत धन द्रव्य लादि, रथ पर चढ़ि, काश्मीर की ओर चल्थौ . कह्यौ है, “सामर्थी कौं कहा भार? व्यापारी कौं कहा बिदेस? मीठौ बोलै ताहि कौन परायौ? आगै अधबर गैल में चलत, दुर्ग नाम महाबन मांछिं संजीवक कौ पांव टूथ्यौ, बरध पछार खाय गिस्थौ . वाहि गिस्थौ देखि, महाजन कहनि लाग्यौ कि, कोऊ कितेक उपाय करि मरौ, फल बिधाता के हाथ है . ऐसें बिचारि, बरध कौं वहां ही छोरि, बनियां आगै कौं चल्थौ, बरध वहां रह्यौ . कितेक दिवस मांछिं वह हरे हरे तन खाय निर्मल जल पी, अति बलवान भयौ;

भयौ अरु एक समय परमानंद करि दडूक्यौ . वा ठौर एक पिंगल नाम बाघ राज करतु हो ; पर बाहि काहू ने राजतिलक न दयौ हो . कह्यौ है, “अपने बल करि सिंह मृगराज ही कहावै .” सो नाहर बाही काल जमुना तीर नीर पीवनि गयौ . वहां जाय संजीवक के दडूकवे कौ शब्द सुनि, मन हीं मन भयमान होय, पानी अनपियै* ही अपनी ठाम आय बैयौ . तहां दमनक औ करटक दौ स्यार रहैं ; सो यह चरित्र देखि, दमनक ने करटक तें कह्यौ कि, मित्र ! तुम कह्यु देख्यौ, जु आज यमुना तीर पै जाय, बाघ बिन पानी पियै, अपनी ठांव सुचितौ होय आनि बैयौ, ताकौ कारन कहा ? करटक कही, बंधु ! मेरौ तौ यह बिचार है, कि जाकी सेवा न करियै, ताकी बात पूछे तें कहा प्रयोजन ? कहतु हैं, “जा गांव न जानौ, वाकौ पैड़ौ पूछवे तें कहा काम ? मोहि तौ अब याकी सेवा करत हू लाज आवति है ; पर अहार के लोभतें करतु हैं . कह्यौ है, “जे सेवा करि धन चाहतु हैं, ते अपनौ शरीर पराये हाथ बेचतु हैं ; अरु जे और के हेतु भूख, प्यास, घाम, सीत, बर्षा, सहतु हैं, तिन की तपस्या में खोट जानियै ; कौंकि पराधीन परबस कौ जीवन मृतक समान है ” कहतु हैं,

“दिनौ भलौ सुपथ कुपथ पै न दूनौं भलौ सुनौं भलौ भौन
पै न खल साथ करियै ;
संतन कौ लघु संग जड़ि कौ गुबं छांड़ि साधु कौ सहज
कौ असाधु छपा डरियै ;

* दिन पिये . † जड़ को गलत . Hall.

घोरिये सराफी नखा बज्जत जबा कौ हांड़ि परिकै सुसंग

आप बल सों सपरिय;

हारि मानि कीजै पै न रारि कीजै नीचनि सों सरबस

दीजै पै न परबस परियै .” (कवित्त)

मृतक कौन कौ कहतु हैं कि, जा सेवक कौ ठाकुर न चाहै अरु कहै, इत तें उत जा, बोलै जिन, ठाढ़ो रहै; ऐसें अविज्ञा करि वाकौ मान मर्दन करै, तौ छ मूरख धन के हेतु पराधीन रहै . जैसें बेस्या परपुरुष के निमित्त सिंगर करै, तैसें मूरख छ पढ़ि गुनि परायौ आधीन होय; यातें मेरे जान सेवक के समान मूरख जगत में कोऊ नाहीं दमनक कही, मिच ! तुम यह बात जिन कहौ; कछौ है, “बढ़ी जतन करि भलौ ठाकुर सेइयै, जासों मन कामना पूरन होय; छच, चमर, गज, अश्व आदि सब लक्ष्मी के पदारथ मिलै; जौ न सेवियै, तौ कहां सों पाइयै ? तातें सेवा अवश्य करियै .” बहुरि करटक कही, हितू ! जौ तुम कछौ, तासों हमें कहा प्रयोजन ? कछौ है, “बिन समझे बूझै काहू के बीच परै, सो मरै, जैसें एक बनचर मख्यौ .” दमनक कही, यह कैसी कथा है ? तहां करटक कहतु है ;

मगध देस में सुभदत्त नाम कायथ, तिन धर्मरान्य बन में क्रीड़ा की ठार बनावन कौ आरंभ कियै; तहां कोऊ बढ़ई काठ चीरतु चीरतु, वा मांझिं लकरी की कील दै, काहू काम कौं गयौ; अरु एक बन कौ बानर चपलाई करतु करतु कालक्स वाही काठ पर कील पकरि आय बैद्यौ, अरु वाके लांगुल का मूल वा काठ की संधि मांझिं

कटकि परे . ज्यों उनि चंचलता सेां युक्ति करि कोल काढ़ी,
काढ़त प्रमान लांगुल का मूख चपे, औ मख्यौ .

ताते हैं कहतु हैं, कि बिन स्वारथ चेष्टा न करियै .
दमनक कही, मिच ! जो प्रधान होय, सो सब काम करै ;
सेवक कौं ऐसी विचारनौं जोग नाहीं . करटक बोल्खौ,
भाई ! अपनौ काम छोरि और के काम में परनौ उचित
नाहीं ; अरु जो परै, तौ वैसे होय, जैसे पराये काज में
परि विचारौ गदहा माख्यौ गयौ . दमनक कही, यह कैसे
कया है ? तद करटक कहतु है ;

बारानसी नगरी मांछिं काज कर्पूरपाट नाम धोबी
रहै, सो तहन स्त्री व्याह ल्यायौ . वाके साथ एक दिन रात
कौं सुखनींद मांछिं सोवतु हो ; वाके घर में चोर पैठे .
अरु ताके अंगना में एक गदहा औ कूकर हो, सो गदहा
चोरनि कौं देखि कूकर तें बोल्खौ, अरे ! यह तेरौ काम
है, कि ठाकुर कौं जगाय दै . उनि कही, अरे ! मेरौ काज
की चर्चा जिन कर, तू जानतु नाहीं जु, यह मोहि खैवै
कौं नाहीं देतु ? सुनि, कछौ है, “जब सौं ठाकुर पै आपदा
न परै, तब सौं सेवक कौ आदर हू न करै .” पुनि गर्दभ
कही, सुन रे बावरे ! जो काम परे मांगै, सो कैसे चाकर ?
उनि कही, जो काज परे सेवक कौ चाहै, सो कैसे ठाकुर ?
सेवक औ पुच समान है, इनकौ पोषन भरन करनौं स्वामी
कौं उचित है . गदहा बोल्खौ, अरे ! तू तौ पापी है, जो
स्वामी कौ काज नाहीं करतु ; अरु मेरौ नाम स्वामिभक्त

हैं, तातें जामें स्वामी जागिहै सो उपाय करिहैं। बहुरि खान कही, रे! खरज कौं पीठ दै सेइयै, अग्नि आगै धरि तापियै, अरु स्वामी सेां आगै पाछै शुद्ध भाव रहियै; पर यह स्वामी वैसौ नाहिं; अरु जौ तू मेरे काज मांहिं पाय धरैगौ, तौ मेरौ मौन तोहि लागिहै। बाकी बात सुनि, गदहा व्हां तें उसरि, धुबिया के निकट जाय, कान सेां मुंह लाय रैक्यौ, तब वा रजक ने नौंद सेां चौकि, क्रोध करि, गदहा कौं लुहांगियन माख्यौ, वा मार तें वह मख्यौ।

तातें हैं कहतु हैं, कि और के अधिकार मांहिं कबहू न परियै। हमारौ काम तौ यह है, कि अहार खोजनौं; पै आज हमें बाहू कौ सोच नाहीं; क्यौंकि कालह कौ मास बहुत धख्यौ है, बातें हम अनेक दिन पेट भरि काटिहैं। दमनक कही, जौ तू अहार ही के लयै सेवा करतु है, तौ यह भलौ नाहिं; राजा की सेवा करनां, सो तौ स्वारथ परमारथ के निमित्त, कि जाकी सेवा तें मित्र साधनि कौ उपकार करियै, औ शत्रु दुष्टनि कौ मारियै। यह मन में बासना रहति है, केवल उदर भरन के हेतु नाहीं सेवतु। कह्यौ है, “संसार में जाके आसरे अनेक लोग जीयें, ताही कौ जीवन सुफल है; सब सेवक समान न होय, सेवक सेवक में हू बड़ौ अंतर है; जैसें एक पांच कौरी कौं हू अकरौ, औ एक लाखनि तें हू न पाइयै। कहतु हैं, “घोरा, हाथी, काठ, पाथर, कपरा, स्त्री, पुरुष, अन्न, दून के मोल मोल में बड़ौ भेद है।” देखौ! कूकर थोरौ

ई मास हाड़ तें लपव्यौ पावै. तौ वाही माहिं संतोष करि रहै ; अरु सिंह आगै स्थार ठाढ़ौ रहै, तौ हू वह वाहि छांड़ि गज कौं ही मारै. तातें हौं कहतु हौं कि, जे बड़े हैं ते बड़ौ ई काम करतु हैं. पुनि कूकर पूंछ हिलावै, पेट दिखावै, तब टूका पावै ; अरु हाथी स्थान बंध्यौ, केते जतन उपाय करि, घने आदर सेां अहार कौ ग्रास लेय. कछ्यौ है ; “जगत मांहिं ज्ञान, पराक्रम, जस, अहं-कार सहित एक घरी जीनौं हू भलौ ; अरु मान रहित काग की भांति बिछा खाय अनेक दिन जियौ तौ कहा ?” जौ अपनौ ही पेट पालि जियौ, तौ वा मनुष औ पशु में कहा अंतर है ? पुनि करटक कही, कछु हम तुम या राजा के सेवक नाहिं. बहुरि दमनक कही, भाई ! समें पाय मंची छैवे कौ यत्न करियै ; बड़ौ पाथर कष्ट करि उठाइयै, पै गिराइयै सहज में ; औ अपनी प्रतिष्ठा राखिवे कौं उपाय सदा करियै. पुनि करटक कही, बंधु ! तुम कछु जानतु है, कि सिंह आज काहे डर्यौ ? दमनक बोल्यौ, भाई ! यामें कहा जानवौ है ? पंडित बिन कहे ही जानै, अरु कहे तें तौ पशु हू पिछानै ; पर जाकौं जो भावै सो भलौ. मेरे जानतौ राजा की सेवा मांहि रहियै, औ जब राजा पुकारै, वहां कोऊ है ? तब कहियै, महाराज ! कहा आज्ञा होति है ? दास बैयौ है. वा भांति जद पुकारै, तद याही रीति जतर देइ, अरु जो कछु कहै से साव-धान छै सुनि लेइ, कछ्यौ न उलंघै, छिन भर साथ न

छांडै, परछांडै की भांति संग लाग्यो रहै . करटक कही,
 हितू! कछौ है, “अनछोसर नृपति के निकट जाय तौ
 निरादर होय.” दमनक बोल्यो, तौहू सेवक स्वामी कौं
 न छांडै. कछौ है, “लोगनि के भय उद्यम औ अजीगन
 के डर भोजन न करनौ कपूत कौ काम है.” कैसौ हू
 अकुलीन मलीन बिद्याहीन पुरुष राजा के समीप रहै,
 तासों हित करै. कहतु है, “अग्नि, स्त्री, राजा, लता, ये
 निकटवर्ती में लग चलतु हैं, यामें संदेह नाहीं.” कर-
 टक कही, तू राजा में पूछैगौ, तुम क्यों डरे? उनि कही,
 प्रथम जाय हैं राजा कौ देखि हैं, प्रसन्न है कौ उदास.
 इन कही, यह तू कैसे जानैगौ? पुनि उनि कछौ, जो
 ठाकुर सेवक कौ दूर तें आवतु देखि प्रसन्न होय, आपही
 तें बतराय, निज सेवकनि मांहिं गनै, बेरी सेवा देखि
 बहुत मया करै, दिन दिन आदर देइ, तौ जानियै. ठाकुर
 संतुष्ट है; अरु जब राजा सेवक कौ आवतु देखि आंख
 चुरावै, औ दैवे कौ आज कालह करि आसा बढ़ावै, काहू
 बात मांहिं चित न देइ, गुम में आगुन काढ़ै, तब जानियै,
 राजा असंतुष्ट है. तातें तुम चिंता कछु जिन करौ, मैं
 जैसे राजा कौ देखिहैं, तैसी ही बात करिहैं. कछौ है;
 “जो सयानौ मंची होय, सो अनीति में नीति, औ बिपत्त
 में संपत्त करि दिखावै.” बहुरि करटक कही, भाई! समय
 बिन रहस्यति हू कहै तौ अपमान ही पावै, मनुष की किन
 चलाई? पुनि दमनक बोल्यो, अहो मित्र! तुम जिन डरौ,

हैं। बिन औसर न कहिहैं, कह्यौ है, “अब कोऊ कुमारग में चलै, तब वाकौ हितू होय सो बिन कहे न रहै;” औ समें असमें मंच न कहै, तौ मंची काहेकौ ? क्योंकि, औसर पर ही बड़ाई पाइयतु है .

समय झूकौ सकल गर फिर पाछै पड़ितात;
ना यज्ञ रहै न वज्र रहै रहै कहनि कौं बात . (दोहा)

इतनी कहि, फेर दमनक बाल्यौ, अब जो मोहि कहै सो करौं . करटक कही, जामें अपनौ भलौ जानौ सो करौ . यह सुनि, दमनक पिंगल राजा के नेरे गयौ, दंडवत करि, कर जोरि, सन्मुख ठाढ़ौ रह्यौ; तब राजा ने हंसिकै कह्यौ, दमनक! तू मो यास बहुत दिन पाछै आयौ . इतनौ कहि बैठायौ . पुनि दमनक ने राजा की अंतरगति पाय, बाकौं भयमान जानि, ऐसे कह्यौ कि, पृथ्वीनाथ ! तिहारौ हमारौ काम तौ नाहीं; पर हम सेवक हैं, हम कौं यह जाण है, कि समय असमय आयौ चाहैं; क्योंकि, एक समें दांत कान कुरेदवे कौं तुन हू काम परतु है; तातें सेवक बेला कुबेला काज न आवै, तौ पाछै वह कौन काम कौ ? यद्यपि बहुत दिन भये तुम मोसों कछु मंच नाहीं पूछ्यौ, पर मेरी बुद्धि नाहीं घटी . कह्यौ है, “जो मनि पाय बांधियै, औ काच सिर, तौ हू काच सो काच, अरु मनि सो मनि .” पुनि अपमान किये हू जाकी बुद्धि स्थिर रहै, सो पंडित; यासों, महाराज ! तुम कौं सदा विवेक करनौं उचित है . संसार में उत्तम मध्यम अधम तीन

प्रकार के लोग हैं, जाकौं जैसौ देखियै, ताकौं तैसौ अधिकार सौंपियै, अरु सेवक की सेवा बुझियै; जौ सेवक की सेवा राजा न बूझै, तौ सेवक मन मांहिं महादुखी रहै; तातें, महाराज! आभरन औ सेवक जहां कौ होय, तहां हीं सोभा पावै; अरु राजा मंची की बुद्धि तें चलै, तौ अनेक सेवक आवैं. कह्यौ है, “अश्व, शस्त्र, शास्त्र, बीन, नर, नारी, ये सब भस्त्रे के हाथ रहैं तौ भस्त्रे रहैं, औ बुरे के हाथ बुरे.” पुनि कह्यौ है, “जौ राजा सुबुद्धि पर कुमाया करै, तौ वह याके निकट न रहै; जौ सुबुद्धि राजा के ढिग न रहै, तौ नीति जाय; नीति गये लोग दुखी होय; अरु भूपति मया करै, तौ सब ही मानैं, नीकी बात सब कौं सुहाय; पै मीठौ बोलनौं महाकठिन है.”

इतेक बातें जब दमनक नेकहीं, तब बाघराजा बोल्थौ, अहो दमनक! तुम हमारे मंची के पुत्र छैकै हम पास कबहू न आये, ऐसौ तुम्हें न बुझियै, अब आवन कैसें भयौ? दमनक कही कि, महाराज! हौं तुम तें कछु पूछवे कौं आयौ हौं, आप की आज्ञा पाजं तौ पूछौं. सिंह कही, दमनक! तुम हम तें निस्संदेह पूछौ. पुनि दमनक बोल्थौ, महाराज! तुम पानी के तीर जाय, बिन नीर पियै सुचित रहै, अपने स्थान पै आय बैठे, सो ताकौ कारन कहा? यह छपा करि मोहि कहा, तौ मेरे मन कौ संदेह जाय. उनि कही, भाई! मेरे मन की बात काहू सेां कहवे की नाहीं; पर तू मेरे मंची कौ पुत्र है, यातें हौं तोतें कहतु हौं, तू

काहू सेां या बात कौं जिन कहियौ; कि जब आज हैं जल पीवे कौं गयौ, तब एक अति भयानक शब्द सुन्यौ, ताके भय कौ माख्यौ वहां तें बगदि वहां आय बैयौ हैं, अरु जी में विचारतु हैं कि, या बन में कोऊ महाबली जंतु आयौ है, तातें या बन तें अनत जाय बसियै सो भलौ घर यहां रहनैं जाग नाहीं. यह सुनि, दमनक बोल्थौ, महाराज ! कछु कहिवे की नाहिं, वह शब्द मैंने छू जब तें सुन्यौ है, तब तें मारे भय के थरथर कांपतु हैं; घर मंची कौं ऐसौ न चाहियै जु, पहलै ही ठौर छुड़ावै कै लरावै. औ राजानि कौं यह उचित है कि, आषदा में इतनेन की परिक्षा लैय, सेवक, स्त्री, बुद्धि, बल; क्यौंकि, इन की कसौटी बिपत है. नाहर कही, मेरे मन मांहिं अति संका है. तब दमनक ने निज मन में कछौ कि, तुम कौं संका न होती, तौ हम सेां काहेकौं बतराते? ऐसे मन में समझि, पुनि बोल्थौ कि, धर्मावतार ! जौलौं हम जीवत हैं, तौलौं तुम भय कछु जिन करौ; हैं करटक आदि सब सेवक बुलाय खेत हैं नीति में ऐसौ कछौ है कि, “आपत्य के समय राजा अपने सब सेवकनि कौं बुलाय, एकमतौ करि, अधिकार सोंपै.” इतनी कहि, दमनक करटक कौं बुलाय ल्यायौ, औ राजा सेां मिलायौ. पुनि राजा ने इन दोउअन कौं बागे पहिराय, पान दै, वा भय की शांत कौं बिदा कियौ. आयै डगर में जात करटक ने दमनक सेां कछौ कि, भाई ! तुम बिन समुझे राजा कौ प्रसाद लियौ, सो भली न करी,

कहा जानें हम तें वा भय कौ निवारन है सकै कै नाहिं ? कछौ है, “काहू की वस्तु बिन समुझै न लीजियै ;” पर राजा कौ तौ प्रसाद विशेष करि न लीजै ; क्योंकि, जौ कबहुँ काज न होय, तौ राजा क्रोध करै, अरु न जानियै कहा दुख दैय ? ऐसैं हूँ कछौ है कि, “राजा की दया में लक्ष्मी बसतु है, अरु पराक्रम में जस, क्रोध में काल.” औ सब देवतानि कौ तेज भूपाल में है, तातें नर नरपति की आज्ञा मांछि रहै तौ ही भलौ ; क्योंकि, पृथ्वीपति मनुष्य रूप कोऊ बड़ौ देवता है . बहुरि दमनक कही, मित्र ! तुम चुपके रहौ, या बात कौ कारन हम जान्यौ कि, यह वरध के बोलवे कौ शब्द सुनिकै डर्यौ है . अरु बैल कौ तौ हम हूँ मारि सकतु हैं, सिंह कौ वह कहा करिहै ? पुनि करटक कही, भाई ? जौ ऐसी ही बात है, तौ राजा सों कहिकै उन के मन कौ भय काहे न दूर कियौ ? दमनक कही, हितू यह बात प्रथम ही नरपति तें कही होती, तौ हम तुमकौ अधिकार कैसे मिलतौ ? कछौ है . “सेवक स्वामी कौ निश्चित कबहुँ न राखै ; जौ राखै, तौ दधिकरण बिलाव की भांति होय” यह सुनि, करटक कही, यह कैसी कथा है ? तब दमनक कहतु है ;

अर्बद परबत की कंदरा में एक महाबिक्रम नाम सिंह रहै . जब वह वहां सोवै, तब एक मूसा बिल तें निकरि, बाके केस काटै ; जद वह जागै, तद बिल में भजि जाय . कछौ है, “छोटे शत्रु बड़ेनि तें न मरैं.” वा मूषक की

दुष्टता देखि, बाघ ने निज मन में विचार्यो कि, याकी समान कौ कोउ ल्याऊं, तौ यह माख्यौ जाय, नातौ या के हाथ तें सोधन न पायहीं . यह विचारि, गांव में जाय, एक दधिकरन नाम बिलाव कौं अति आदर से ल्यायौ, अरु राख्यौ . वह हू वा कंदरा के द्वार पर बैद्यौ रहै ; अरु बिलाव के भय तें मूसा बिल से बाहर न निकरै, सिंह सुखमींद सोवै . यातें मूसा के डर तें बाघ बिलाव कौ अति आदर करै . आगै, कितेक दिन याह्यै एक दिन, दाव पाय वा मूसा कौं बिलाव ने मारि खायौ . जब सिंह ने मूषक कौ शब्द न सुन्यौ, तब उनि मन मांहिं विचार्यो कि, जाके कारन याहि ल्यायौ हो, सो काम तौ सिंह भयौ, अब याहि राखिवे तें कहा प्रयोजन ? बाघ ने ऐसे विचारि वाकौ अहार बंद कियौ ; तब बिलाव वा ठौर तें भूख्यौ मरि मरि परायौ . यातें हैं कहतु हैं, कि ठाकुर कौं कबहू निश्चितौ न राखियै .

इतनौ कहि, दमनक करटक कौं एक रूख तरै ऊंची ठौर बैठाय, केतेक जंबुक वाकौ निकट राखि, आप एकलौ संजीवक के पास जाय बोख्यौ, तू कहां तें आयौ है ? जब उनि अपनी सब पूर्व अवस्था कही, तब इन कही, या बन कौ राजा सिंह है, तुम ह्यां कैसे रहिहो ? पुनि भयमान होय वृषभ कही, तुम काहू भांति मेरी सहायता करौ . बहुरि दमनक ने अपनी घां तें वाहि निर्भय करि, कह्यौ कि, मेरौ बडौ भाई करटक राजा कौ मंची है, प्रथम

उन में तोहि मिलाजंगौ, पाछै राजा तें हू भेट कराजंगौ .
 ऐसे कहि, दमनक ने वा बलध कौं करटक के समीप
 लैजाय, वाके पायन पाख्यौ . तब करटक ने बैल की पीठ
 ठोकि कछौ, अब तुम या बन मांहि अभय चरतु फिरौ,
 अरु काहू भांति की चिंता निज मन में जिन करौ . ऐसे
 वाकौ भय मिटाय, साथ लै, राजपौर पर आय बैठे .
 कछौ है, “बल तें बुद्धि बड़ी .” देखौ ! बल बिन बुद्धि से
 गज बस करतु हैं . पुनि संजीवक से करटक कही, अब
 तुम वहां बैठौ, हम राजा पै होय आवैं, तब तुम हू कौं
 लै जायंगे . इतना कहि, वे दोऊ सिंह पास गये, औ
 प्रनाम करि, कर जोरि, सनमुख ठाढ़े भये . तब राजा ने
 उनि तें अति मधुर बचन से पूछ्यौ कि, जा कार्य के लये
 गये हे, वाकौ समाचार कहौ . तहां दमनक हाथ जोरि,
 नीचा मूढ़ करि, कहनि लाग्यौ, महाराज ! हम वाहि
 देख्यौ, सो अति बलवंत है, पर हमारे समझायवे तें वह
 आप से मिल्यौ चाहतु है, हम वाहि अब ही लै आवतु
 हैं ; पै आप सावधान है बैठियै, वाके शब्द तें न डरियै,
 शब्द कौ कारन विचारियै ; जैसे शब्द कौ कारन विचारि,
 दूती ने प्रभुता पाई . राजा बोल्ह्यौ, यह कैसी कथा है ?
 तद दमनक कहतु है ;

श्रीपर्वत में ब्रह्मपुर नाम नगर ; अरु वा पहाड़ की
 चोटी पै एक घंटाकरन नाम राक्षस रहै, सो वा नगर के
 निवासी सब जानै ; क्यौंकि, वाकौ शब्द सदा सुन्यौ करै .

एक दिन, नगर में तेँ चोर घंटा चुराय, गिर पर लियै जातु हो ; ताहि तहां बाघ ने मारि स्वायौ, अरु वह घंटा बानर के हाथ आई. जब वह बजावै, तब नगरनिवासी जानै कि, राक्षस डोलतु है. काहू दिन कोऊ वा मरे मनुष कौं देखि आयौ, तिन सब तेँ कह्यौ कि, अब घंटाकरन रिसायकै नर खानि लाग्यौ, यह मैँ स्वदृष्टि देखि आयौ. वाकी बात सुनि, मारे भय के, नगर के सब लोग भजवे लागे ; तब कराला नाम एक दूती ने वा घंटा के बजवे कौ कारन जानि, राजा सेाँ जाय कह्यौ कि, महाराज ! मोहि कछु देउ तौ घंटाकरन कौं मारि आजं. यह सुनि, राजा ने वाहि लाख रुपैया दिये, अरु वाके मारिवे कौं बिदा कियौ. तद वाने धन तौ निज मंदिर मांहिं राख्यौ, अरु बहुत सी खैवे की सामा लै, बन की गैल गही. व्हां जाय, देखै तौ एक मरकट रूख पर बैयौ घंटा बजावतु है. वाहि देखि, याने एक ऊंचे पर सब सामा बिथराय दई. वह बंदरा देखतु ही दृष्ट तेँ क्रुदि, व्हां आयौ ; पकवान मिठाई, फल मूल देखि, घंटा पटक, खैवे कौं जौं उनि हाथ चलायौ, त्यों घंटा अलग भई. तब याने घंटा लै अपनी गैल गही, नगर में आय, वाने वह राजा के हाथ दई, अरु यह बात कही कि, महाराज ! हेाँ वाहि मारि आई. यह सुनि, औ घंटा देखि, राजा ने वाकी बहुत प्रतिष्ठा करी, अरु नगर के लोगन हू वाहि पूज्यौ.

ताते हैं कहतु हैं कि, महाराज! केवल शब्द ही ते न डरिये; प्रथम वाकौ कारन विचारियै, पुनि उपाय करियै . यह तौ श्री शिव जू कौ बाहन है, औ तुम पार्वती के; याते वह तिहारौ आश्रम जानि, निर्भय गाजतु है, तुम कौं वाकी आगतास्वागता करि सेवा करनी जाग है ; क्यौंकि, आज वह तिहारौ पाहुनौ है, वाकी सेवा ते ईश्वर पार्वती प्रसन्न हैंयगे . यह सुनि, दमनक ते सिंह बोल्यौ कि, तुम शिष्टाचार करि वाहि मोते मिलाओ, वह तौ हमारौ भ्राता है . पुनि दमनक ने संजीवक बरध कौं पिंगल बाघ से मिलायौ . दोउअनि मिलि अधिक सुख पायौ . कछुक दिननि पाछै उन मांछिं अति प्रीति भई . आगै, एक दिन, सितकरन नाम सिंह राजा कौ भाई तहां आयौ; तब संजीवक ने वह टेरि सुनायौ कि, महाराज ! आज तुमनि जो मृग माख्यौ है, वाकौ मास कहाँ है ? सिंह कही, भाई ! करटक दमनक जानै . पुनि संजीवक बोल्यौ कि, महाराज ! तुम उन ते पूछौ तौ सही, है कै नाहिं ? बहुरि नाहर ऊतर दियौ कि, हमारै यही रीति है, जो ल्यावै, सो उठावै . फेरि संजीवक बोल्यौ, महाराज ! मंची कौं ऐसौ न बूझियै कि, जो आवै सो उठावै, कै राजा की आज्ञा बिन काहू कौं देइ . यह नीति नाहीं . कह्यौ है, “आपदा के अर्थ धन राखियै .” औ मंची ऐसौ चाहियै जो, राजा के धन कौ संग्रह करै, घोरौ उठावै, बहुत जोरै . राजा कौ भंडार प्रान समान है, सब

कोऊ धन के निमित्त राजसेवा करतु हैं; धनहीन भये घर की नारी हू न मानै, चौर की तौ कहा चली? या संसार में धन ही की प्रभुता है, जाके पास धन, सोई बडौ . ये प्रधान के दूषन हैं, अति खरचै, प्रजा की रक्षा न करै, अनीति अधर्म करि भंडार भरै . राजा के सनमुख झूठ बोलै, तौ अल्प दिननि में ही राज भ्रष्ट होय; क्यौंकि, बिन सोचै बिचारै काज करै तें काज कब हू न रहै . संजोबक ने जब यह बात कही, तब सितकरन बोळ्यौ, भाई ! तैं इन स्थारन कैं अधिकारी कियौ, सो भली करी; पर हम प्राचीन लोगनि तैं सुन्यौ है कि, ब्राह्मन, क्षत्री, संबंधी, उपकारी, औ मित्र, इनकैं अधिकार न सौंपियै; क्यौंकि, ब्राह्मन धन खाय तौ राजा दंड न दे सकै; अरु क्षत्री जब बल पावै, तब राज दबाय लेय; पुनि संबंधी आज्ञा न मानै; उपकारी सब तुच्छ जानै; मित्र राजा सम आपकैं गनै; तातें इनकैं अधिकार कबहू न दीजियै . बहुरि ऐसें हू कछौ है कि, “चट प्रधान कैं न तोरियै, सहज सहज निचोरियै, जैं स्रान कैं चीर .” जद वाने याहि भरमायौ, तद याहू के मन मांछिं कपट छायौ . कहतु हैं, “बेस्या काकी स्त्री, औ राजा काकौ मीत ?”

सांप सुसीख दयाजुत नाहर काग पवित्र औ सांचौ जुबारी;

पावक सीतल पावन कोमल रैन अमावस की उजियारी;

कायर धीर सती गनिका मतवारौ कहां मतवारौ अनारी;

मेतिथराम सुजान सुनौं किन देखी सुनी नरनाह की थारी . (कवित्त)

पुनि राजा बोळ्यौ कि, भ्राता ! तुम सांच कहतु है,

ये दोऊ मेरौ कछौ नाहीं मानतु, औ मोहि दुख देतु हैं. बहुरि सितकरन कही, भाई! कछौ है कि, “अहंकार तें जस जाय, कुबिसन तें ज्ञान, आलस्य तें धन, क्रिया बिन कुल, औ लोभ तें धर्म.” पुनि ऐसें हू कछौ है,

“आज्ञा भंग नरेन्द्र की विप्रनि कौ अपमान;
भिन्न सेज नारीन कौ बिना शस्त्र बध जान.” (दोहा)

अरु नीति तौ यों है कि “पुच हू कछा न मानै, तौ राजा वाहू कौं दंड देय; पुनि चोर अरु लोभी प्रधान तें प्रजा की रक्षा करि, पुच की भांति पालै.” अरु सुनि भाई! आज मैं तेरौ अन्न खाया है, तातें हैं तेरे हित को कहतु हैं; यह संजीवक बड़ौ साध है, शुभचिंतक, औ सुकृति की खान है; यातें अपनौं भलौ चाहौ तौ याहि अधिकारी करौ. यह बात राजा ने भाई की सुनि, संजीवक कौं अधिकारी कियौ, औ दमनक करटक तें अधिकार खोस लियौ. तब दमनक ने करटक तें कछौ, मिच! अब कहा करियै? यह तौ हमारौ ई कियौ दोष है; जैसें चिचलिखे कौं छूवत कंदर्पकेतु ने, औ मणि के लोभ तें महाजन ने, अरु अपनी करतूत तें दूती ने, दुख पायौ, तैसें हम हू अपने किये कौ फल पायौ. पुनि करटक बोल्यौ, यह कैसी कथा है? तब दमनक कहतु है;

कंचनपुर में बीर विक्रमादित्य नाम राजा हो. वाके सेवक एक नाऊ कौं मारनि लै चले; तहां कंदर्पकेतु सन्यासी अरु साहु ने वाहि देख्यौ; तब सन्यासी ने राजा

के चाकरनि सेां कह्यौ कि, या नौआ कौ कछु अपराध नाहीं . सेवकनि कही, याकौ व्यौरौ कहौ . पुनि सन्यासी बाल्यौ कि, प्रथम मेरौ दोष मोहि लाग्यौ, सो सुनौ . सिंह-लक्ष्मी कौ जंबुकेतु राजा, ताकौ मैं पुच हैां, अरु कंदर्पकेतु मेरौ नाम है . एक दिन एक व्यौपारी मेरे नगर में आयौ, अरु उत्तम पदारथ उनि मोहि आनि दिखायौ . जब मैं ने वासेां पूछ्यौ कि, तैने यह कहां ते पायौ ? तब उनि प्रसंग चलायौ कि, महाराज ! हम व्यौपारी लोग समुद्र के तीर बनज कौां जातु हैं, तहां बरसवैं दिन सागर में तेां एक दृक्ष निकारतु है, तापै अति सुंदरि नवजोबना रतनजटित आभूषन पहरै, एक नायिका बैठी बैठी आछे आछे पदारथ भेज भेज देति है, अरु महाजन व्यौपारी सब लेत हैं, औ देस देस बेचत फिरत हैं . इतनी बात जब वाने मोसेां कही, तब मैं वाहि साथ लै समुद्र तीर गयौ, अरु वहां जाय, वाहि देखत प्रमान समुद्र में कूद्यौ . कूदत ही मोहि एक कंचन कौ मंदिर दृष्ट आयौ ; तद हैां छू उठि वा मांहिं धायौ . मोकौां देखि, वाने एक दूती पठाई, सो चली चली मेरे दिग आई ; मैं ने वासेां पूछ्यौ, यह को है ? उनि कही, यह कंदर्पकेल विद्याधरनि कौ राजा की पुत्री है ; अरु रतन-मंजरी याकौ नाम है . यह बात सुनि, मैं ने आगे बढ़ि, वाके निकट जाय, अधिक सुख पायौ . तद उनि कह्यौ, स्वामी स्वइच्छा तेां तुम यहां रहौ ; पर यह चित्रलिखी विद्या कबहू मत छूड्यौ . आगे गंधर्वविवाह करि, हैां वहां

कितेक दिन रह्यौ . एक दिन वाकौ कह्यौ न मानि, ज्यों वह विद्या में छुई, त्यों उनि मोहि एक लात ऐसी दई कि, हैं मंगध देस में आनि पख्यौ . ता दिना तें वाही के वियोग में सन्यासी भयौ डोलतु हैं ; आज तिहारो नगरी में आय, रात हैं अहीर के घर मांहिं रह्यौ, सु वहां देख्यौ कि, वह घोस अपनी घुसायन कौं जार के साथ बतराति देखि, क्रोध करि, थांभ सों बांधि, मतवारौ होय, सोय रह्यौ . अरु जब आधी रात बाजी, तब एक नायन वाके पास आय बोली कि, सुन री ! तेरे बिरह तें वह बापरौ मरतु है, वाकी दया बिचारि, हैं तोपै आई हैं, अब तू बिलंब जिन करै, मोहि या थांभ तें बांधि जा, अरु वाकौ भलौ मनाय आ . वाकी बात सुनि, उनि वैसें ही करी . तब अहीर जाग्यौ, औ वासें कहनि लाग्यौ कि, अब तू जार पास क्यों न जाय ? जद वह न बोली, तद उनि वाकी नाक उतार लई, अरु मद कौ मानौ पुनि सोय रह्यौ . इतेक में घुसायन ने आय नायन सों पूछी कि, अरी ! कुशल है ? उनि कही, बीर ! तू तौ कुशल तें आई, पर मैं ने ह्यां अपनी नाक गंवाई . यह सुनि, ग्वालनि आप बंध गई, अरु वाने नायन कौं बिदा दई . जब नायन अपने घर आई, तब फेर घोस जाग्यौ, औ जो कह्यु वाके सुख आयौ, सो कहनि लाग्यौ . वा समें अहीरी बोली, तू मेरौ धनी है, मार, बांध, जो चाहै सो कर ; और ऐसी को है, जो मोहि कलंक लगावै ? मेरौ कर्म औ धर्म अष्ट

लोकपाल, चांद, सूरज, धरती, आकाश, अग्नि, जल, पवन, रात्रि, दिन, दोऊ संध्या, जानति हैं ; अरु प्रानी जो कर्म करतु है, ताकी उन कौं गम्य है ; अब हैं अपने धर्म सत सों कहति हैं कि, हे सूर्य देवता ! जो मैं अपने सत धर्म तें हैं, तौ मेरी नासिका कटी न जनाइयौ . यह बात सुनि, अहीर वाके ढिग जाय, देखै तौ नाक ज्यों की त्यों बनी है . देखत प्रमान वह वाके पायन पै गिख्यौ, औ बोल्यौ कि, तू मेरौ अपराध क्षमा कर, मैं तोहि बिन अपराध सतायौ . पुनि वह वाके कंठ लागि बोली कि, स्वामी ! यामें तिहारौ कछु दोष नाहीं, यह मेरे ही कर्म कौ फल है . आगै, नायन निज घर जाय, नाक हाथ मांहिं लियै बैठी ही, कि भोर भये वाके भर्तार ने पेटी मांगी . इन एक छुरा वाके हाथ दियौ . उनि क्रोध करि याकी ओर फेंक्यौ ; तद यह पुकारी कि, हाय ! इन निर्दई ने मेरी नाक पै छुरा माख्यौ . याकी पुकार सुनि, तुम वाहि बिन सोच विचार किये पकरि ल्याये, औ मारन कौं लियै जातु है ; पर याकौ कछु अपराध नाहीं . अरु साध महाजन मेरे संग है, ताकी बात सुनौ कि, यह बारह बरस बिदेस कमाय, धन लियै, अपने घर कौं जातु हो, सो या नगर में आय, रात बेस्या के घर रह्यौ . वा सामान्या ने अपने द्वार पर एक काठ कौ बैताल बनाय, कल लगाय, वाके मूंड पर एक रत्न जड़ि राख्यौ हो . यह साध लोभ कौ माख्यौ आधी रात कौं उठि, बैताल के

निकट जाय, हाथ बढ़ाय, ज्योंही रत्न लयौ चाहै, त्योंही वाकी कल छूटि, याके दोऊ कर बंधे. कल छूटवै कौ शब्द पाय, वह बारबिलासिनी याके दिग आय बोली कि तू मलयागिर तें मुक्तानि की जौ माला ल्यायौ है, सो मेहि दै; नातौ भोर तोहि कोटवार के छां जानौ होयगौ, अरु वहां तें जीवत न फिरैगौ. इतनी बात यह वाकी सुनि, भय खाय, अपनौ सब धन वाहि दै, मेरे संग आय लाग्यौ है. यह बात सन्यासी तें सुनि, राजा के सेवकनि न्याय बिचाख्यौ, औ वाहि छांड़ि, बेस्या तें साध कौ धन दिवाय, यथायोग्य दंड दै, सब कौं छांड़ि दियौ. तातें हैं कहतु हैं कि, ज्यों उननि अपने दोष तें दुख पायौ, तैसें हम हू अपने किये कौ फल पायौ; पर भाई करटक! अब जो भई सो भई, परंतु तुम जिन सोच करौ. सुनौ! जैसें मैं ने इन तें प्रीति कराई, तैसें ही अब बैर करवायहैं. कह्यौ है, “जे चतुर हैं, ते झूठी बात कौं हू सांची करि दिखावैं;” जैसें एक अहीरी ने झूठ कौं सांच करि, स्वामी के देखतु जार कौं घर तें निकाख्यौ. करटक कही, यह कैसी कथा है? पुनि दमनक कहतु है;

हारिका नगरी में एक घोस की नारि बिभिचारिनी ही; सु कोटवार औ वाके मैाड़ा तें रहै. एक दिन रात्रि की बेला, कोटवार के छोहरा तें भोग करि रही ही; ता मांहिं कोटवार आय, बार पर पुकाख्यौ; तब याने वाके ढोटा कौं कोठी में लुकाय, द्वार खोल दियौ, अरु ताहू

कौ भलौ मनायौ . इतेक में वाकौ धनी आयौ ; तद इन कोटवार कौ यह सिखायौ कि, हैं तौ बार उधारनि जाति हैं, पर तुम लौठिया कांधे पै धरि, क्रोध करि, घर तें निकरौ, ता पाछै हैं बात बनाय लैउंगी . उनि वैसें ही करी . तब अहीर ने घर में आय, अपनी स्त्री तें कछौ कि, आज कोटवार हमारे घर तें रिसायकै क्यों गयौ ? अहीरी बोली, कोटवार हमारे घर तें क्यों रिसायगौ ? वाकौ पूत वातें रिसाय, मेरे घर मांहिं आय छिप्यौ है, सु वह अपने मौंडा कौ मेसें मांगतु हो, इतेक मांहिं तुम जो आये, सो तुम्हें देखि चलयौ गयौ . यह कहि, घुसायन ने कोटवार के पुच कौ कोठी तें निकारि, कछौ कि, तू कछू भय मत करै, मैं तोहि बाहर निकारि देति हैं, जित तेरे सींग समाय, तित चलयौ जा . ऐसें कहि, वाहि घर तें निकारि दियौ . कछौ है,

“पुरुषनि तें दुगनी क्षुधा बुद्धि चौगुनी होय ;

काम आठ साहस छःगुन या बिधि तिय सब कोय” . (दोहा)

तातें हैं कहतु हैं, काम परै जाकी बुद्धि फुरै, सोई पंडित . बहुरि करटक बाल्यौ, भाई ! इन दोऊन में तौ अति प्रीति है, तुम कैसें बिगार करवायहौ ? फेरि दमनक बाल्यौ कि, मिच ! जो काज उपाय तें होय, सो बल तें न होय ; जैसें एक सांप कौ काहू काग ने मरवायौ, तैसें हैं हू याहि मरवाजंगौ . करटक कही, यह कैसी कथा है ? तहां दमनक कहतु है ;

उत्तर दिसा में बिद्याधर नाम पर्वत, वहां एक तरु पर काग कागली रहैं, अरु बाकी जर में एक सांप छू . जब कागली ने अंडा दये, तब सर्प ने रुख पर चढ़ि खाय लिये, अरु अंडानि के लालच में नित दृष्ट पै चढ़ि, बाके खोंधा में जाय जाय बैठै . पुनि कागली गर्भ में भई, तौ उनि वायस तें कही, रे स्वामी ! या तरवर कौं तजि अनत जाय बसियै तौ भलौ ; क्यौंकि कछौ है, “जाकी नारी दुष्ट, मिच सठ, सेवक बादी, घर में नाग कौ बास, ताकौ मरन निस्संदेह होय ;” या में छां कौ रहनौ उचित नाहीं . काग कही, हे प्रिये ! अब जिन डरै, क्यौंकि मैं ने या नाग कौ अधिक अपराध सच्चौ, पर अब न सहैंगौ . कागली बोली, तुम याकौ कहा करौगे ? काग कही, प्यारी ! जो काम बुद्धि तें होय, सो बल तें न होय ; जैसे एक ससा ने बुद्धि करि, महाबली सिंह कौ माख्यौ, तैसें हैं छू याहि बिन मारे न छांड़िहैं . कागली बोली, यह कैसी कथा है ? तहां काग कहतु है ;

मंदरगिरि पै दुर्दत नाम एक सिंह हो, सो बहुत जीव जंतु माख्यौ करै . एक दिन बन के सब जीवनि मिल बिचार करि, आपस में कछौ कि, यह सिंह नित आय एक जंतु खातु है, औ अनेक मारतु है ; तातें याकौ पास चलिबै एक जंतु नित दैनौं कहि आवैं, अरु बारी बांधि पहुंचावैं, तौ भलौ . ऐसे वे आपस में बतराय, सिंह के पास गये, औ कर जोरि, प्रनाम करि, मर्याद में याके सनमुख

ठाढ़े भये. इन्हें देखि, नाहर बोल्थौ, तुम कहा मांगतु है? इननि कही, स्वामी ! तुम अहार के लयै नित जातु है, अधिक मारतु है, अल्प खातु है, यातें हमारी यह प्रार्थना है कि, हम तिहारे खैवे कौं एक जंतु नित छां हीं पहुंचाय जैहैं, तुम परिश्रम जिन कियौ करौ. उनि कही, अति उत्तम. ऐसें वे बाध तें बचन करि आये. आगै, जाकी बारी आवै, सो जाय वह खा जाय. ऐसें कितेक दिन पाछै, एक बूढ़े ससा की बारी आई; तब वाने अपने जी में बिचाख्यौ कि, मेरौ सरीर छोटी है, यासें वाकौ पेट न भरैगौ, तद हमारे और भाईयन कौं खायगौ; तातें हमारौ कुल तौ एक दोइ बार में हीं पूरौ करैगौ; यातें अपने जीवतु ही याकौ नास करौं तौ भलौ. यह बिचारि, अपने स्थान तें उठि, हरवै हरवै अलि, वह सिंह के पास आयौ. तब वह याहि देखि, क्रोध करि बोल्थौ, अरे ! तू अबेरौ कौं आयौ ? पुनि ससा ने कर जोरि, यह बचन सुनायौ, स्वामी ! मेरौ कछु दोष नाहीं, हां चल्थौ आवतु हो तुम पाहीं, गैल मांहिं दूजौ सिंह मिल्यौ; तिन मोसें कछौ, रे ! तू कित चल्थौ जातु है मैं कही कि, हां अपने स्वामी पास जातु हां. उनि कछौ, या बन कौ स्वामी तौ मैं हां, और स्वामी छां कहां तें आयौ ? पुनि मैं कछौ कि, आज छुराय तौ तुम कौं छां कबहू न देख्यौ हो. इतनी बात के सुनत ही, वाने क्रोध करि, मोहि बैठाय राख्यौ; तद मैं वासें कछौ कि, यह

सेवक कौ धर्म नाहीं जु, स्वामी के काज में बिलंब करै ; तुम मोहि रोख्यौ है, सु मेरौ ठाकुर न जानैगौ ; बरन मेरौ कह्यौ झूठ मानैगौ, अरु निज मन में कहैगौ कि, यह घर जाय सोय रह्यौ, औ मोसें आय मिथ्या भाषतु है ; यातें तुम मोहि जिन अटकाओ, हैं अपने स्वामी पास होय आज्ञं, वह मेरी बाट जावतु हायगौ . तुम्हें यह बचन दिये जातु हैं कि, मैं स्वामी कौं कहि, उलटे पायन बगदि आवतु हैं . या बात के कहे तें उनि बचन बंध करि, मोहि बिदा कियौ, तब मैं तिहारे पास आयौ; स्वामी ! यामें मेरौ कहा दोष है ? इतनी बात सुनि, सिंह बोल्ह्यौ, अरे ! मेरे बन में और सिंह कहां तें आयौ ? तू मोहि वाहि अब हीं दिखाव, मैं वाकौं बिन मारै आज भोजन न करिहैं . ऐसैं बानें करि, वे दोऊ वहां तें चले, आगै आगै ससा, पाछै पाछै सिंह . जब चलतु चलतु बन में कितनी एक दूर पहुंचे, तब ससा एक कूआ के ढिग जाय ठाढ़ौ भयौ . तहां सिंह बोल्ह्यौ, अरे ! वह तोहि रोकनि वारौ कहां है ? ससा ने ऊतर दियौ कि, स्वामी ! वह तिहारे भय तें या कूप मांहिं पैद्यौ है . इतनी सुनि, सिंह ने क्रोध करि, कूआ के पनघटा पर जाय, ज्यों जल मांहिं देख्यौ, त्यों वाहि वाकौ ही प्रतिबिंब दृष्ट आयौ . परछाईं देखत प्रमान वह जल में कूद्यौ, औ डूब मख्यौ . तब ससा ने अपने स्थान पर आय, सब बनबासियन कौं सुनायौ कि, हैं सिंह कौं मारि आयौ ; मैं ने तिहारौ

जन्म जन्म कौ दुख दूर कियौ . यह सुनि, सब बनवासियन
वाहि आशीर्वाद दियौ .

इतनी कथा कथ, काग ने कागली तें कछौ कि, हे
प्रिये ! तू देखि, जो काम बुद्धि तें भयौ, सो बल तें कबहू
न होतौ . पुनि कागली बेली, स्वामी ! जामें भलौ होय
सो उपाय करौ . तद् वायस वहां तें उड़ि, आगै जाय देखै
तौ, एक राजपुच काहू सरोवर के तीर पै बस्त्र शस्त्र आभू-
षन राखि, वा में स्नान करतु है . ताकी मोतिन की माल
यह लै उड़्यौ, अरु अपने खौंदा पै जाय, वह माल सांप
के कंठ में डारि, अलग होय बैद्यौ . याके पाछै लागे वा
राजा के सेवक हू देखतु चले आये हे . तिननि जब काग
की चौंच में हार न देख्यौ, तब विन में तें एक रुख पर
चढ़्यौ ; ता ने देख्यौ कि, खोडर में कारौ नाग वह माला
पहरै बैद्यौ है . यह देखि, राजा के वा किंकर ने निज
मन मांहिं बिचार्यौ कि, माला तौ देखी, पर अब कछु
विन उपाय हाथ न ऐहै, यासों कछु यत्न कीजै . इतना
कहि, वाने सर्प कौ तीरनि तें मारि, माला राजपुच कौ
ल्याय दई . तातें हौं कहतु हौं, भाई ! उपाय किये कहा
न होय !

बहुरि करटक कही, भाई ! तुम जो जानौ सो करौ .
आगै, दमनक ने वहां तें उठि, पिंगल सिंह के पास जाय,
कछौ कि, महाराज ! यद्यपि तिहारे पास हमारौ कछु
काम नाहीं, पर समय असमय आप के निकट हम कौं

आवनौ उचित है . कछौ है कि, “जब राजा कुमारग में चलै, तब सेवक कौ धर्म है जु, राजा कौ चिताय देइ ; औ न जतावै, तौ सेवक कौ धर्म जाय . आगै राजा मानौ कौ जिन मानौ ; पर वाकौ कहनौ जाग है .” महाराज ! राजा भोग करिवे कौ है, औ सेवक सेवा करनि कौ . पुनि कछौ है, “जौ राजा कौ राज बिगरै, तौ मंची कौ दोष ठहरै, राजा कौ कोज कछु न कहै ;” यातें प्रधान कौ चाहियै, अपने स्वामी के काज कष्ट पाय, धन तन देइ ; पर राज न जानि देइ ; अरु जौ प्रधान राजकाज बिगरत देखि, राजा से न कहै, सो कैसौ सेवक ? औ जौ राजा समय असमय किंकर की बात न सुनै, सो कैसौ ठाकुर ? पिंगल बाल्यौ, तुम कहा कछौ चाहतु है, सो कहौ . दमनक कहनि लाग्यौ, पृथ्वीनाथ ! यह संजीवक तिहारी निंदा करतु हो, अरु कहतु हो कि, अब यह राजा प्रतापहीन भयौ, प्रजा की रक्षा करी चाहियै . या बात में, महाराज ! मोहि ऐसौ समझ पख्यौ कि, अब वह आय राज कियौ चाहतु है . यह बात सुनि, राजा चुप छै रह्यौ . पुनि दमनक बाल्यौ, धर्मावतार ! तुम ऐसौ प्रचंड मंची कियौ कि, जौ राजकाज कौ मतौ तुम तें न पूछि, एकाएकी आप ही राज करनि लाग्यौ, सो भलौ नाहीं . जैसे चानक मंची ने राजा नंदक कौ माख्यौ, कछु वैसे न होय ! राजा पूछी, यह कैसी कथा है ? तहां दमनक कहतु है .

काह्ल देस में नंदक नाम राजा, वाकौ चामक नाम मंची. सु राजा वा मंची कौ अपने राजकाज कौ भार दै, आप निश्चिंत होय, आनंद करनि लाग्यौ, अरु मंची राज. एक दिन वह राजा प्रधान कौ लार लै अहेर कौ गयौ ; बन में जाय, एक मृग देख्यौ ; वाके पाछै विननि घोरा दपटे, तद और लोग हू अपटे ; पर इन के अश्वन की समान काह्ल कौ अश्व न पहुंच्यौ. पुनि सब लोग अटपटाय पाछै रहे, औ वे दोऊ आगै गये. जब हिरन चपरि, उन के हाथ तें बन में पैद्यौ, तब राजा हू घाम प्यास कौ माख्यौ, घोरा तें उतरि, एक रुख तरै बैद्यौ. निदान वह महीषति अपनौ हय प्रधान कौ अंभाय, तृषा कौ माख्यौ, वहां तें जल खोजतौ चलयौ. कितेक दूर जाव देखै, तौ एक बापी निर्मल जल भरी वाहि दृष्ट परी. वह जावतु प्रमान प्रसन्न हू, वामें नीह पीवन उतख्यौ ; जल पी फिरनि लाग्यौ, तौ बाने एक पाथर में यह लिख्यै बांच्यौ कि, राजा औ मंची तेज अरु बल में समान होय, तौ द्वै में तें एक कौ लक्ष्मी त्यागै. यह बांच, वह पाहन वै कादौ लपेटि, मंची के ढिग आयौ. पुनि मंची हू जल पीवन वा बावरी में गयौ, औ उनि देख्यौ, अरु कह्यौ कि, यह तौ कोऊ अब ही पाहन पै गार लयेर गयौ है. बहुनि उनि पाथर धाय, लिख्यौ पढ़ि, निज मन में कह्यौ कि, राजा ने मो सों दुराव कियौ. ऐसें समझि, पानी पी, मंची राजा के पास आयौ ; राजा सोयौ, तब मंची ने हन्यौ.

यातें महाराज ! हैं। तुम सेां कहतु हैं कि, जो बलवान प्रधान होय, सो आप ही कों राजा करि मानै ; अरु जो राजा एक ही मंची कों अधिकार सैंपै, तौ वह गर्व करै ; औ गर्व तें अज्ञान होय, अज्ञान भये वाहि धर्म अधर्म कौ बिचार न रहै . कह्यौ है, “विष मिल्यौ अन्न, दियौ दान, अरु दुष्ट मंची, इन कों निकट कबहू न राखियै .” महाराज ! जो सेवक कौ धर्म हो, सो मैं तुम सेां कहि सुनायौ, आगै आप की इच्छा मांहिं आवै सो करौ . संसार में ऐसे लोग थोरे हैं, जिन कों राज औ धन की लालसा नाहिं ; तातें मैं तुम सेां अब स्पष्ट कहि देतु हैं कि, वह तिहारौ राज लियौ चाहतु है, आगै तुम जानौ . सिंह बोल्यौ, संजीवक मेरौ बड़ौ मिच है, वह मेरौ बुरौ कबहू न चीतैगौ ; क्यौंकि, जो प्रिय है, सो अप्रिय न होय . कह्यौ है, “अग्नि घर जरावै, तौ हू अग्नि बिन न सरै .” बहुरि दमनक कह्यौ कि, महाराज ! कोऊ कितेक करौ, पर दुरजन औ गंवार अपनौ जातीय सुभाव न छांडै ; ज्यों कूकरा की पूंछ तेल मसल सेंकियै . तज टेढ़ी की टेढ़ी रहै ; त्यों नीच कौ सनमान करियै, तौ हू भलौ न मानै ; अरु नीम कों मधु दै सींचियै, पर वाकौ फल मीठौ न होय . कह्यौ है, “प्रीतम सो, जो आपदा निवारै ; कर्म वह, जातें अपजस न होय ; स्त्री अरु सेवक सो, जो आज्ञाकारी रहै ; बुद्धिवान वह, जो गर्व न करै ; ज्ञानी सो, जो तृष्णा न राखै ; पुरुष वह,

जो जितेंद्री होय ; अरु महाराज ! मंची वह, जो हित-कारी होय .” संजीवक तिहारौ सुखदेवा नाहिं, यह दुख कौ मूल है, याकौ शीघ्र ही नास करौ . कछौ है, “जो राजा धनांध कामांध होय, अपनौ भलौ बुरौ न जानै, सो इच्छामातौ रहै ; अरु जब अहंकार तें दुख पावै, तब मंची कौं दोष लगावै .” या बात के सुनवे तें, सिंह ने जी में बिचास्यौ कि, बिन समझे बूझे काहू कौं दंड देनौ उचित नाहीं . पुनि दमनक कही, पृथ्वीनाथ ! संजीवक आज ही तिहारे मारिवे के उद्यम में लाग्यौ हैं, तुम वाहि बुलावौ, अरु भेद दुरावौ . कछौ है, “मंच औ बीज गुप्त राखियै ; जौ गम न राखियै, तौ वाकौ फल न होय . अरु दुष्ट कौ यह सुंभाव है कि, पहिलै मीठी मीठी बातें कहि, मन धन हाथ कर लेइ, पाछै दुष्टता करि, वाकौ सर्वसु खोय देइ ; जैसें शकुन ने दुर्योधन कौं कपट सिखाय, महाभारत करवायौ . पिंगल कही, वह हमारौ कहा करिहै ? बहुरि दमनक बोल्यौ कि, महाराज ! तुम यह जिन जानौ कि, हम बलवान हैं . कछौ है, “समय पाय छोटौ हू बडौ काज करै ;” जैसें एक टिटोर ने समुद्र कौं महाव्याकुल कियौ . राजा पूछी, यह कैसी कथा है ? तब दमनक कहवे लाग्यौ ;

समुद्र के तीर एक टिटोर औ टिटीहरी रहैं . जब टिटीहरी गर्भ सेां भई, तब वाने अपने स्वामी सेां कछौ कि, रे स्वामी ! मोहि अंडा राखिवे कौं ठौर बताव . उनि

कही, यह तो नीकी ठौर है . पुनि टिठीहरी ने कछौ, छां तो समुद्र की तुंग तरंग आवति है, वह हमें दुख दैहै . टिटोर कही, जो यह हम कौं दुख दैहै, तो हम हू याकौ उपाय करिहैं . बहुरि टिठीहरी हंसिकै बोली, कहां तुम, औ कहां समुद्र ? या सों प्रथम ही बिचार करि काज करौ, तो पाछै दुख न होय . पुनि टिटोर कछौ, तुम निचिंतार्इ सों अंडा धरौ, फेर हम समझ लैहैं . यह बात सुनि, वाने तहां अंडा दये ; अरु समुद्र हू वाकी सामर्थ देखिबे के लये लहरि सों अंडा बहाय लै गयो . तद टिठीहरी बोली, रे स्वामी ! अंडा तो सागर बहाय लै गयो, अब कहा करैगौ सो कर . टिटोर कही, हे प्रिये ! तू कछु चिंता जिन करै, हौं अबही लै आवतु हौं . इतनौ कहि, वह सब पंछियन कौं साथ लै, गरुड़ के पास गयो ; अरु गरुड़ ने श्री नारायन सों जाय कछौ . श्री नारायन जू ने समुद्र कौं दंड दै, आज्ञा करी ; बिन अंडा पाछे दये ; तब वह सब पक्षी समेत अंडा लै अपने घर आयौ . तार्ते, महाराज ! हौं कहतु हौं कि, बिन काम परे काहू की सामर्थता जानी न जाय . बहुरि राजा कही, हम कैसें जानैं कि वह हम तें खरिबे कौं आवतु है ? दमनक बोली, महाराज ! वाकौं तो सींग कौ बल है, जब सींग सान्हने करै, तब जानियौ, अरु जो तुम तें हो सकै सो करियौ .

इतनी बात कहि, वहां तें उठि, दमनक संजीवक बरध

के निकट गयौ, औ मुख सुखाय वाके सनमुख ठाढ़ौ भयौ.
तद उनि यातें कुशल पूछी . इन ऊतर दियै, मिच ! सेवक
कों काहे की कुशल ? कौंकि, वाकौ तौ मन राचि दिन
चिंता ही में रहतु है, अरु विशेष राजा कौ सेवक तौ
सदा सर्वदा भयमान रहतु है . कह्यौ है, “द्रव्य पाय काने
गर्व न कियौ ? संसार में आय काने आपदा न भुगती ?
काकौ मन स्त्री के बस न भयौ ? काल के हाथ को न
पख्यौ ? राजा काकौ मिच भयौ ? बेस्या काकी स्त्री भई ?
बैरी कौ फंद को न पख्यौ ?” जब दमनक ने ऐसी ऐसी
उदासी लियै बातें कह्यौ, तब संजीवक बोल्थौ कि, मिच !
तुम पर ऐसी कहा गाढ़ परी, जो ऐसे उदास बचन
कहतु है ? तुम मो सेां तौ कहौ . दमनक कही, हितू !
मैं बड़ौ अभागौ हौं, जैसें कोऊ समुद्र मांहिं बूड़तु सांप
कों पाय न पकरि सकै . न छांड़ि सकै ; तैसें हौं छ . एक
बात है, ताहि न कहि सकौं, न कहे बिन रह सकौं ;
कौंकि, कहैं तौ राजा रिसाय, औ न कहैं तौ मेरौ
धर्म जाय ; तातें दुखसमुद्र में पख्यौ हौं . संजीवक बोल्थौ,
मिच ! जो तिहारे मन में है सो कहौ . इन कही, भाई !
हैं कहतु हौं, यह बात अग्रगट राखियौ, अरु जो तिहारी
बुद्धि में आवै सो कीजौ ; कौंकि, तुम ह्यां हमारी बांह तें
आये, या तें अपजस सेां डरि, अपनौ परलोक संवारवे
कों तुम्हें सावधान कियै देतु हौं, तुम चौकस रहियौ
राजा की आज तुम पर कुदृष्टि है, उननि मो सेां कह्यौ

कि, आज संजीवक कौं मारि, सकल परिवार कौं तृप्ति करिहैं . यह बात सुनि, संजीवक ने अति दुख पायौ . तद दमनक बोल्थौ कि, प्रीतम ! तुम दुख जिन करौ, अब जो बुद्धि में आवै सो करौ . बहुरि संजीवक कही कि, यह काहू ने सांच कछौ है जो, “छपन कै धन होय, मेह ऊसर में बरसै, सुंदर स्त्री नीच सेां रति करै, राजा कुपाच कौं बढ़ावै .” इतनी कहि, उनि निज मन में बिचाख्यौ कि, यह आप सेां कहतु है, कै राजा ने ऐसौ बिचाख्यौ है ? यौं सोचि, पुनि मन ही मन कहनि लाग्यौ कि, उज्जल के संग मलीन मलीनता करि सोभा न पावै; जौं काजर तें नेच सोभा पावै, पर काजर सोभा न पावै . तातें याकी कहा सामर्थ्य है जो यह आप तें कहै ? उन हीं कही होयगी, मैं तौ सावधानी सेां सेवा करतु हौं . राजा ने ऐसा मेरौ कहा अपराध देख्यौ जो मन मैलौ कियौ ? पुनि बूझै कि, या हू में अचरज नाहिं, क्यौंकि, जैसें कौज देवता की अति सेवा करै, अरु वह बाहि थोरे ही दोष में भ्रष्ट करि डारै ; तैसें राजा हू नैक दोष में मारै ; अब याकौ कछु उपाय नाहिं . ऐसें संजीवक ने अपने मन मांहिं समझि बूझि, दमनक तें कही, भाई ! मैं ने राजा कौ ऐसौ कहा काम बिगाख्यौ है, जो उनि ऐसी बिचारी ? अब हौं वाकी सेवा न करौंगौ ; क्यौंकि, राजसेवा करनौ महाकठिन है ; जो भलौ काम करै, बुरौ मानै, ताकी सेवा करनी जाग नाहीं ; अरु राजा

की प्रीति और लौं नाहीं रहति. कछौ है, “असाध कौ उपकार करनौ, औ मूर्ख कौ उपदेस देनौ, दया है.” पुनि ज्यों चंदन में सर्प, पानी में सिवार, आप तें आप आवति है, त्यों सुख में दुख हू आय घटतु है. पुनि दमनक बोळ्यौ, मिच! दुष्टजन प्रथम दूर तें आवतु देखि, जो आदर करि बैठाय, हित सेां प्रिय बचन कहै, सो न जानियै कि वह पाछै कहा दुष्टता करै? कहतु हैं, “समुद्र तरिवे कौ जहाज, अंधकार कौ दीपक, गरमी कौ बीजना, माते गज कौ आंकुस, ऐसे बिधाता ने सब के उपाय बनाये हैं; पर दुष्टजन के मन कौ कछु यत्न न करि सक्यौ.” बहुरिसंजो-वक कही, भाई! हां धान पानी कौ खानिहारौ होय, याके बस क्यों रहैं? कछौ है, “राजा के चित्त में मिचमेद पण्यौ मिटतु नाहीं; ज्यों स्फटिक कौ पाच टूटि फेरि न जरै, त्यों नरपति कौ मन हू उचटि फेरि न मिलै.” कहतु हैं, “राजा कौ क्रोध बज्र तुल्य है; पर एक समय बज्र सेां बचै, पै भूपाल के क्रोध सेां कबहू न बचै,” ताते अब दीन होय मार खानौ नीकौ नाहीं; बरन, संग्राम करि मरनौ भखौ; क्योंकि, सूरतन में दाय बात, जीतै तौ सुख भोगवै, औ मरै तौ मुक्ति पावै. यासेां या समय युद्ध करनौ ही उचित है. फेरि दमनक बोळ्यौ, अहे मिच! तुम तें हां कहै देतु हां कि, जब वह कान पूछ उठाय मुख पसारै, ता बेर तुम तें जो पराक्रम बनि आवै सो कीजौ, वामे काहू भांति कसर जिन कीजौ. कछौ है, “बलवंत होय अपनी बल

न प्रकासै, तौ निरादर पावै; जैसे तेजहीन अग्नि कौं सब कोऊ उठावै, तैसें निबल मनुष कौं सब सतावैँ.” इतनौ कहि, दमनक बोल्थौ, भाई! अब ही यह बात मन में राखौ; काम परे बूझी जायगी. ऐसे कहि, दमनक संजीवक सेां बिदा होय, करटक के ढिग गयौ. तब उनि पूछ्यौ, हितू। तू कहा करि आयौ? इन कही, मैं दोउअन मांहि बैर कराय आयौ. पुनि करटक कही, यामें संदेह नाहीं. कछौ है, “दुष्टजन कहा न करि सकै? क्षमा तें को न पंडित कहावै? पुनि कैसेा हू बुद्धिवान होय, पर असाध की संगति तें बिगरै ही बिगरै,” कौंकि, दुष्ट के संग तें जो न होय सो थोरौ; जैसे अग्नि, जहां रहै तहां ई जरावै. ऐसे दोऊ बतराये. पुनि दमनक पिंगल के निकट गयौ, कर जोर सनमुख ठाढ़ौ भयौ, अरु बोल्थौ, महाराज! सावधान होय बैठौ, पशु युद्ध करवे कौं आवतु है. ज्यों ही सिंह संभल बैयौ, त्यों ही बिजार क्रोध भय्यौ वा बन में पैयौ. पुनि जिम वाहि देखि सिंह उठि धायौ, तिम या ने हू पहुंचकै सींग चलायौ, अरु दोऊ पशु यथाशक्ति लरे; निदान सिंह के हाथ तें बरध माख्यौ पख्यौ. तब सिंह पछतानि लाग्यौ कि, हाय! मैं यह कहा कियौ जो राज औ धन कौ लोभ करि, बापरे तून अन्न खानिवारे बिजार कौं मारि, महापाप सिर लियौ! या संसार में धन के भागी अधिक हैं; पर पाप बंटावनिहारौ कोऊ नाहिं. कछौ है, “सिंह राजा सो, जो गजराज कौं

पछारै.” पुनि दमनक बोल्थौ, महाराज ! यह कहां की रीति है जु तुम शत्रु कों मारि पछतातु है ? राजधर्म में कछौ है कि, “पिता, भ्राता, पुत्र, मित्र, जो राज सैन की इच्छा करै, ताहि नरपति बिन मारै न रहै ; जो बड़ौ धर्मो होय, तौ ह्वं दया न करै.” पुनि, ज्यों सन्यासी कों क्षमा भूषन है, त्यों हीं राजा कों दूषन. बहुरि नीति-शास्त्र में कछौ है, “दयावंत राजा, सर्वभक्षी ब्राह्मण, कामातुर स्त्री, सेवक शत्रु, दुष्ट मित्र, असावधान अधि-कारी, औ गुननाशक आदि जितने हैं, तिन्हें तत्काल त्यागियै.” पुनि ऐसे ह्वं कछौ है कि, “जैसी बेस्या, तैसी राजा ; कह्लं लोभी, कह्लं दातार ; कह्लं सांचौ, कह्लं झूठौ ; कह्लं कठिन, कह्लं कोमल ; कह्लं हिंसक, कह्लं दयाल ; अरु सदा अधिक धन जन चाहै.” या भांति दमनक ने सिंह राजा कों समझाय बुझाय, वाकौ शोक मिटाय, राजपाट पर बैठायौ ; अरु पुनि आप मंचो होय, सब राजकाज करनि लाग्यौ. इतनी कथा कहि, विष्णुशर्मा ने राजपुत्रनि कों आसीस दई कि, महाराजकुमार ! तिहारे शत्रुनि कों मित्र भेद होय, अरु मित्रनि कौ कल्याण !

इति सुहृद्भेदो नाम द्वितीय कथा संग्रहः संपूर्णः .

न प्रकासै, तौ निरादर पावै; जैसे तेजहीन अग्नि कौं सब कोज उठावै, तैसें निबल मनुष कौं सब सतावै." इतनौ कहि, दमनक बोल्थौ, भाई ! अब ही यह बात मन में राखौ ; काम परे बूझी जायगी. ऐसे कहि, दमनक संजीवक सेां बिदा होय, करटक के ढिग गयौ. तब उनि पूछ्यौ, हितू। तू कहा करि आयौ ? इन कह्यौ, मैं दोउअन मांछि बैर कराय आयौ. पुनि करटक कह्यौ, यामें संदेह नाहीं. कह्यौ है, "दुष्टजन कहा न करि सकै ? क्षमा तें को न पंडित कहावै ? पुनि कैसौ हू बुद्धिमान होय, पर असाध की संगति तें बिगरै ही बिगरै," क्यौंकि, दुष्ट के संग तें जो न होय सो थोरौ ; जैसे अग्नि, जहां रहै तहां ई जरावै. ऐसे दोऊ बतराये. पुनि दमनक पिंगल के निकट गयौ, कर जोर सनमुख ठाढ़ौ भयौ, अरु बोल्थौ, महाराज ! सावधान होय बैठौ, पशु युद्ध करवे कौं आवतु है. ज्यों हीं सिंह संभल बैयौ, त्यों हीं बिजार क्रोध भख्यौ वा बन में पैयौ. पुनि जिम वाहि देखि सिंह उठि धायौ, तिम या ने हू पहुंचकै सींग चलायौ, अरु दोऊ पशु यथाशक्ति लरे ; निदान सिंह के हाथ तें बरध माख्यौ पख्यौ. तब सिंह पछतानि लाग्यौ कि, हाय ! मैं यह कहा कियौ जो राज औ धन कौ लोभ करि, बापरे तन अन्न खानिवारे बिजार कौं मारि, महापाप सिर लियौ ! या संसार में धन के भागी अधिक हैं ; पर पाप बंटावनिहारौ कोज नाहिं. कह्यौ है, "सिंह राजा सो, जो गजराज कौं

पछारै.” पुनि दमनक बोल्थौ, महाराज ! यह कहां की रोति है जु तुम शत्रु कौं मारि पछतातु है ? राजधर्म में कछौ है कि, “पिता, भ्राता, पुत्र, मित्र, जो राज सैन की इच्छा करै, ताहि नरपति बिन मारै न रहै ; जो बड़ौ धर्मी होय, तौ ह्वं दया न करै.” पुनि, ज्यों सन्यासी कौं क्षमा भूषन है, त्यों हीं राजा कौं दूषन. बहुरि नीति-शास्त्र में कछौ है, “दयावंत राजा, सर्वभक्षी ब्राह्मण, कामातुर स्त्री, सेवक शत्रु, दुष्ट मित्र, असावधान अधि-कारी, औ गुननाशक आदि जितने हैं, तिनहीं तत्काल त्यागियै.” पुनि ऐसे ह्वं कछौ है कि, “जैसी बेस्या, तैसी राजा ; कह्लं लोभी, कह्लं दातार ; कह्लं सांचौ, कह्लं झूठौ ; कह्लं कठिन, कह्लं कोमल ; कह्लं हिंसक, कह्लं दयाल ; अरु सदा अधिक धन जन चाहै.” या भांति दमनक ने सिंह राजा कौं समझाय बुझाय, वाकौ शोक मिटाय, राजपाट पर बैठायौ ; अरु पुनि आप मंचो होय, सब राजकाज करनि लाग्यौ. इतनी कथा कहि, विष्णुशर्मा ने राजपुत्रनि कौं आसीस दई कि, महाराजकुमार ! तिहारै शत्रुनि कौं मित्र भेद होय, अरु मित्रनि कौ कल्याण !

इति सुहृद्भेदे नाम द्वितीय कथा संग्रहः संपूर्णः .

अथ विग्रहः ।



विष्णुशर्मा जब और कथा को आरंभ करनि लाग्यौ, तब राजपुत्रनि कही, अहे गुरुदेव! अब विग्रह सुनिवे की लालसा हम कौं है, सो कृपा करि सुनाइयै . विष्णुशर्मा बोळ्यौ, महाराजकुमार! तुम शान्त सुभाव होय सुनौ, हैं विग्रह की कथा कहतु हैं . एक हंस औ मोर बल बुद्धि राज प्रताप में समान है; पर एक काग ने विस्वासघात करि हंस कौं हरायौ, अरु मोर कौं जितायौ . राजकुमारनि कही, यह कैसी कथा है ? तब विष्णुशर्मा कहनि लाग्यौ ;

कर्पूरद्वीप के मांझि पद्मकेल नाम एक सरोवर है . काहू समें तहां के सब पंडितियन मिल, एक हिरन्यगर्भ नाम हंस कौं राजा कियौ ; सो वहां राज करनि लाग्यौ . कह्यौ है, “जहां राजा न होय, तहां की प्रजा सुख सो न रहै; जैसें समुद्र में बिन केवट नाव न चलै, तैसें संसार में हू राजा बिन धर्म न निभै.” राजा प्रजा की नित नित अधिकाई चाहै, निज पुत्र की समान जानै; अरु जो राजा प्रजा कौं पालन करि न बढ़ावै, सो जगत में प्रतिष्ठा हू न पावै . आगै, एक समय वह राजा हंस रत्नसिंहासन

पर सभा मांछि बैस्यौ हो, तहां कौन छु दीप तें एक दीरघ-
मुख नाम बगुला आयौ, औ दंडवत करि, हाथ जोरि,
राजा हंस के सनमुख ठाढ़ौ भया . तब राजा ने वाहि
आदर करि बैठाथ, पूछ्यौ कि, अहो दीरघमुख ! जा देस
तें तुम पधारे, तहां के समाचार कहो . उनि कही,
महाराज ! याही बात के लयै तौ हौं तिहारे ठिग आयौ
हौं कि, जंबूदीप में बिंध्याचल नाम एक बड़ौ परबत है,
तहां के सब पक्षियन कौ राजा मयूर है, सो वा ठाम
बसतु है, तिन मोहि बचननि में चतुर देखि पूछ्यौ कि,
तू कहां तें आयौ, औ को है ; तब मैं कही कि, कर्पूर-
दीप तें तौ मैं आयौ, अरु वहां के महाराज हिरन्यगर्भ
कौ सेवक हौं, तिहारौ देस देखिवे कौं ह्यां आयौ हौं . तब
उनि पक्षियन कही कि, तिहारे हमारे देस औ राजानि
में कौन भलौ है ? पुनि मैं कही कि, तुम कहा कहतु
हो ? अरे ! कर्पूरदीप तौ स्वर्ग समान, अरु आज राजा
हंस दूसरौ इंद्र है ; या बुरे देस में तुम क्यों परे हो ?
चलौ, हमारे देस में बसौ . जब यह बात मैं कही, तद
उनि पखेहअन मो पै अति क्रोध कियौ . कह्यौ है कि,
“जैसें सर्प कौं पय प्याये अधिक बिष बढ़ै, तैसें पंडित कौ
उपदेस मूरख के मन में न आवै ; बरन वह उलटौ वाही
कौं सतावै ;” जौं बानर कौं उपदेस दै, बिचारे पक्षियन
अपनौ कियौ आप पायौ . राजा पूछी, यह कैसी कथा
है ? तद बक कहनि लाग्यौ ;

नरमदा नदी के तीर एक पर्वत, ताके तरै एक सेमल कौ रूख, वापै पंछी अपने घोंसुआ बनाय, सुख सेां रह्यौ करै. एक बेर बरषाकाल में भादों की अंधियारी, रात्रि समय दामिनी दमकि दमकि, घटा घिर घिर आई, अरु बड़ी बड़ी बूंदनि घन गरज गरज, जल मूसलधार लाग्यौ बरसन. ताही काल एक बानर वा पहार तें भोजतु उतरि, सीत कौ माख्यौ थरथर कांपतु, ताही रूख तरै आय बैयौ. वाहि दुखित देखि, दया करि, पक्षियन कछ्यौ, अरे बन-चर ! तू देखि तौ सही कि, हमनि अपनी चौंच सेां तन आनि घर कियौ है ; तोहि तौ भगवान ने हाथ पाय दये हैं, तैं ने क्यौं न घर बनायौ ? जौ तैं घर बनायौ हैतौ, तौ या समें सुख सेां पाय पसारै सेातौ. यह सुनि वा मरकट ने जान्यौ कि, ये पक्षी या समें निज घर में सुख सेां बैठे हैं, ताही तें मो पंडित कौ मूरख जानि उपदेस देतु हैं. यह समझ, वह हंसकै बोळ्यौ, अरे ! बरषा बीते तुम मेरौ कियौ देखियौ. इतनौ कहि, वह क्रोध करि, मष्ट मारि बैयौ. इतेक मांहिं भार भयौ, अरु मेह उघरि गयौ. जब श्री सूरज देव ने प्रकाश कियौ, तब वह वा रूख पर चढ़ि, सब पंक्षियन के अंडा भूमि में पटक, घोंसुआ खसेटकै बोळ्यौ, अरे मूढ़ पक्षियौ ! जे पंडित हैं, ते कहा घर करवे कौं असमर्थ हैं ? तिन कौं तौ सुभाव ही है कि, घर नाहीं करतु. यह वाकी बात सुनि, बापरे पखेरू मौन साध रहे. तातें हैं कहतु हैं कि, मूरख कौं

उपदेस कबहू न दीजै . एनि राजा बेल्थौ, आगै कैसी भई, सो कहो . बगुला बहुरि कहनि लाग्यौ, महाराज ! पुनि उनि पक्षियन मो सेां रिसायकै कह्यौ, अरे ! तेरे हंस कौं राजा किन कियौ ? मैं कह्यौ, रे ! तेरे मयूर कौं किन राज दियौ ? या बात के सुने तें वे मोहि मारन कौं उठे, तद मैं हूँ अपनौ पराक्रम दिखायौ . कह्यौ है, “मनुष कौं और समें क्षमा बूझियै ; पर जब शत्रु लखे कौं आवै, तब पराक्रम ही करनौ उचित है ; जैसे नारी कौं लाज आभरण है, तैसे रति समें लिटाई हूँ आभूषण है” राजा हंस कही, जो अपनौ और न देखि क्रोध करै, सो अति दुख पावै ; अरु ऐसे ही, जो अपनी सामर्थ न जानि चेष्टा करै, सोऊ, ज्यों अपनी सामर्थ न जानि, बाघ कौ चाम ओढ़ि, एक गदहा माख्यौ गयौ . बक बेल्थौ, यह कैसी कथा है ? तहां राजा हंस कहतु है ;

हस्तिनापुर में एक बिलास नाम धोबी रहै ; ताके घर एक गदहा . वा पै बेझ लादतु लादतु जद बाकी पीठ पर चांदी परी, तब वह धुबिया गदहा कौं रात्रि के समय बाघ कौ चाम उढ़ाय, काहू जब के खेत में छोड़ि आयौ . वा खेत कौ रखवारौ ताहि देखत ही परायौ . याही भांति, यह नित नित वाकौ खेत खाय खाय आवै . तद वा रख-वारे ने नाहर मारवे कौ यत्न कियौ, औ वाही खेत की पगार के निकट भूरी कामरी ओढ़ि, धनुष चढ़ाय, आप हूँ काहू झूड़ तरै दबकि रह्यौ . द्वै पहर रात के समें

अंधेरे में गदहा आयौ, औ याकी भूरी कामरिया कौं देखि, गदही जानि, वह कामांध होय रैंकतु धायौ . पुनि रखवारे ने जान्यौ कि, यह तौ गदहा है, पर बाघ कौ चाम ओढ़ि आयौ है . ऐसे कहि, क्रोध करि, रखवारे ने बाहि लौठियन लौठियन मारि गिरायौ, बाकौ प्रान गयौ . तातें हैं कहतु हैं कि, अपनौ बल बिचारि काज कीजै .

इतनी कथा कहि, पुनि राजा हंस बोल्ह्यौ, आगै जो भई सो कहौ . बगुला कहनि लाग्यौ, महाराज ! उन पक्षियन मो सेां कही, अरे दुष्ट बगुला ! तू हमारे देस में आय, हमारे ई राजा को निंदा करतु है ! इतनौ कहि, उननि मोहि चैंचनि सेां माख्यौ . अरु कह्यौ, अरे ! जैसे कुआ कौ दादुर कुआ ही कौं सराहै, तैसें तू है, अरु तेरौ राजा . यह सुदेस छुड़ाय तू हम कौं वा कुदेस में जैवे कौं कहतु है ! रे मूर्ख ! कह्यौ है, “चेष्टा करि बड़ी रूख सेइयै, जौ फल न मिलै, तौ सीरो छांह बैठवे कौं तौ छ मिलै ;” अरु ओछे की संगति तें प्रभुता जाय ; जैसे कलाल के हाथ में दूध कौ बासन होय, तौ छ जौ देखै, सो कहै, या में मदिरा होगी . अरु बड़े के नाम तें छ बड़ाई पाइयै ; जैसे चंद्रमा के नाम तें ससा सुखी भये . यह सुनि, मैं उनि तें पूछी, यह कैसी कथा है ? पुनि बिन में तें एक पक्षी कहनि लाग्यौ ;

एक समें बरषाकाल बिन बरसे, वन में पानी की अति खैच भई ; तब वहां के हाथियन अपने यूथपति सेां कही,

स्वामी ! ह्यां बिन पानी प्यास के मारे मरतु हैं . यह सुनि, गजराज ने एक सरोवर पहार में बतायौ . वाके तीर ससा बहुत रहैं ; जब गज वहां जल पीवन कौं गये, इन के पायन तरै बहुत से ससा चांपे गये . तब एक सिखी-मुख नाम ससा हो ; वाने बिचाख्यौ कि, जी या भांति ये हाथी इत आयहैं, तौ एक हू सजाती हमारौ यहाँ जीवतु न रहैगौ . यह बात सुनि, एक बिजय नाम अति बड़ ससा बोल्ख्यौ, अहो ! तुम अब भय जिन करौ, मैं या उपाध कौ थल करिहैं . इतनी कहि, वह वहां तें उठि चल्ख्यौ, औ गैल में चलत चलत वाने मन मांहिं कछौ कि, हाथियन के निकट कैसें जैहैं ? वे तौ छूवत मारैं . इतनौ सोच, वह एक पर्वत पै चढ़ि दिखाई दियौ ; अब इन जद उन तें राम राम करी, तद बिन में तें एक गज गर्व करि बोल्ख्यौ, अरे ! तू को है ? इन कह्यो, रे ! हौं चंद्र-दूत हौं, औ तिहारे पास आयौ हौं . पुनि उननि कह्यो, अपने आवन कौ प्रयोजन कहौ . इन कह्यो, मोहि चंद्र महाराज ने यह कहि तुम पास पठायौ है कि, आज तुमनि आय हमारे या चंद्रसागर में पानी पियौ, सो तौ भली करी ; पर तिहारे पायन तरै हमारे ससा चांपे गबे ; यातें हम तुम तें अति अप्रसन्न भये ; क्योंकि, हमारी ओर तें ससा ही या सरोवर के रखवारे हैं, मैं इन की रक्षा करतु हौं, याही तें मेरौ नाम लोग ससी कहत हैं . यह सुनि, गजराज बोल्ख्यौ कि, भाई ! तू यह सांच कहतु है .

पुनि ससा ने कछौ कि, यह धर्म दूत कौ न होय, जो मिथ्या भाषै. कछौ है, “दूत कौ कोऊ मारिवे कौ न हूँ जाय, पर वह झूठ न बोले.” ऐसे सुनि, गजराज भयमान होय, बोली कि, आज हम इत अनजाने आय कढ़े, पर बहुरि न आयहैं. पुनि ससा ने गजपति से कछौ कि, तुम निज मन में कछु जिन डरौ, हैं तिहारौ अपराध चंद्रदेव से कहि क्षमा करायहैं. ऐसे वाकौ संबोधन करि, रात्रि भये गजराज कौ सर के तीर लै जाय, चंद्रमा कौ प्रतिबिंब दिखाय, हाथ जुरवाय, आप पुकारिकै बोली, हे चंद्र महाराज! ये बापरे गज तिहारै सरोवर पै अनजाने आय कढ़े हैं, इनकौ जो अपराध भयो है, सो आप क्षमा कीजै; पुनि इन तें ऐसौ कबहू न होयगौ. इतनौ कहि, वाने हाथियन कौ बिदा कियौ; औ विननि हू जल मांछिं प्रतिबिंब देखि सत्य जान्यौ कि, चंद्रमा सरोवर में आयौ है. तातें हैं कहतु हैं कि, बड़े के नाम ही तें कार्य सिद्ध होय.

यह सुनि, महाराज! पुनि मैं कही, अरे! हमारौ राजा बड़ौ प्रतापी है. यह सुनि, वे पक्षी मोहि पकरि, राजा मयूर के निकट लै गये; मो से दंडवत करवाय, हाथ जुरवाय, वाके सनमुख ठाढ़ौ राखि, विन पक्षियन राजा से कछौ, महाराज! यह दुष्ट बगुला हमारे ही नगर में रहि, हमारी ही निंदा करतु है. राजा कही, अरे! यह को है, औ कहां तें आयौ है? पक्षियन ऊतर

दियौ, महाराज ! यह कहतु है कि, हैं कर्पूरद्वीप के हिर-
न्यगर्भ राजा कौ सेवक हैं, औ वाही देस तें आयौ
हैं . यह सुनि, वा राजा कौ मंची गीध बोल्हौ कि, तेरे
राजा कौ मंची को है ? मैं कही, सर्वज्ञ नाम कहुआ ;
सोई सब राजकाज में प्रधान है . गीध बोल्हौ कि कछौ
है, “जो सदेसी, कुलवंत, युद्धबिद्या में निपुन, धर्मात्मा,
आज्ञाकारी, प्राचीन, प्रसिद्ध पंडित, गुनगाहक, द्रव्य
उपायक, उपकारी, हितकारी होय, ताकौं राजा मंची
करै .” पुनि एक सुआ बोल्हौ, पृथ्वीनाथ ! या जंबूद्वीप के
ही मांहिं कर्पूरद्वीप है, अरु वहां आपकौ ई राज है . या
बात कौं सुनि, वह राजा बोल्हौ कि, तू सांच कहतु है, सो
हमारे ही देस में है . कछौ है, “राजा, बालक, उनमत्त,
धनवंत औ स्त्री, ये पांचैं अनपावनी वस्तु लैन कौं हू हठ
करै .” पुनि मैं कही कि, जो बातन ही प्रभुताई पाइयै,
तौ हैं हू कहतु हैं कि, हमारौ राजा हिरन्यगर्भ ही सब
जंबूद्वीप कौ राजा है . बहुरि कीर कही, यह कैसें जानियै ?
पुनि मैं कछौ, युद्ध किये ही जानिहौ . फेरि वह राजा
बोल्हौ कि, तू अपने राजा कौं जाय कह, हम आवतु हैं .
तब मैं कही, अपनौ बसीठ पठावौ . राजा ने कछौ, कौन
कौं पठाइयै ? मैं कही कि, ऐसें कछौ है, “जो स्वामिभक्त,
गुनवान, पवित्र, चतुर, ठीठ, बिसन रहित, क्षमायुक्त,
धीर, गंभीर, सदेसी, पराये मन की जाननिहारौ, जाकौ
ऊतर न फुरै, ऐसौ होय, सो दूत के जाग है,” ताही कौं

मेजियै . राजा बोल्थौ, ऐसे तौ हमारे यहां बहुत हैं; पर कछौ है, “ब्राह्मन कौं पठाइयै; क्यौंकि, बिप्र सत्यवक्ता औ अहंकार रहित होतु है.” पुनि मैं कही कि, महाराज! प्राचीन खोगनि के मुख सुन्यौ है कि, निज स्वभाव कोऊ नाहीं तजतु; जैसे कालकूट बिष ने महादेव कौ कांठ पायौ, पर स्यामता न त्यागी . पुनि मैं कछौ कि, महाराज! सुआ कौं पठाइयै . तब राजा मयूर ने सुग्गा तें कछौ कि, कीर! तुम या बगुला के संग जाओ, अरु राजा हंस तें हमारौ संदेसौ कहि आओ . सुक बोल्थौ, महाराज की आज्ञा मूढ़ पै; पर या दुष्ट बक की गैल हैं न जैहैं . कछौ है, “दुष्टजन के साथ रहे, साध जन हू दुख पावै; जैसे रावन के समीप रहि बापरी समुद्र बांध्यौ गयौ.” पुनि ज्यों काग के संग रहि, हंस औ बटेर मारी गई . राजा पूछी, यह कैसी कथा है? तद सुक कहनि लाग्यौ;

महाराज! उज्जैन नगरी की गैल में एक बड़ौ पीपल कौ रुख, ता पर एक काग अरु हंस रहै . ग्रीष्मऋतु की दुपहरी मांहिं, एक बटोही घाम कौ माख्यौ, वाकी छांह तरै आय, शस्त्र खोल, सीरक पाय, सोयौ . जब घरी चार पाछै वाके मुख पर घाम आई, तब हंस दया करि वाके मुख पर छांह करि बैस्यौ; अरु काग दुष्टता करि, वाके मुंह पै बीट करि भाग्यौ . त्योंही बटोही जाग्यौ, औ वाने हंस कौं तीर तें माख्यौ . आबै एक समें, सब पक्षी मिल, गरुड़ की याचा कौं चले; तामें एक बटेर हू काग के साथ

बली. तहां गैल में एक अहीर दहेंडी लियै जातु हो; सो दहेंडी काग झुठाय भाग्यौ, अरु बापरी बटेर वहां मारी गई. तातें हौ कहतु हौ, महाराज! दुष्ट कै संग काहू भांति करनौ उचित नाहीं. पुनि मैं कही, भाई सुआ! तुम ऐसी बात क्यों कहतु हो? हमारै तौ जैसे राजा तैसे तुम. महाराज! इतनौ सुनि, वह प्रसन्न भयौ. कह्यौ है, “मूर्ख कौ अपराध करि स्तुति कीजै, तौ वह प्रसन्न होय; जैसे एक खाती स्तुति किबै जार सहित स्त्री की खाट माथे लै नाच्यौ. यह सुनि, राजा हंस कही यह कैसी कथा है? पुनि बगुला कहनि लाग्यौ;

श्रीनगर में मंदबुद्धि नाम एक खाती रहै; सो अपनी मारी कौं बिभिचारिनी जानै; पर बाहि जार समेत कबहु न पावै. एक दिन वाने वाके जार कौं पकरवे के लियै, वासों कह्यौ कि, आज हौं गांव जातु हौं, सु तीन चार दिन में आयहौं. इतनौ कहि, वह बाहर जाय, फेरि घर में आय, खटिया तरै छिप रह्यौ. बाकी स्त्री ने ताहि गांव गयौ जानि, निज जार कौं बुलायौ, अरु क्रीड़ा के समें कछु आहट पाय जान्यौ कि, यह मेरी परीक्षा लैन कौं खटिया तरै लुक्यौ है. यौं जानि, वह मन में चिंतति भई; अरु जब जार कही, रमति क्यों नाहीं? तब वह बोली, आज मेरे घर कौ धनी घर नाहीं, यातें मेरे भायें आज गांव खूनौं बनखंड सौ लगतु है. पुनि जार कही, जौ तेरो वासों ऐसी ही सनेह हो, तौ वह तोहि काहे छाड़ि गयौ?

उनि कही, अरे बावरे! तू यह नहीं जानतु? सुनि! कछौ है कि, “स्वामी स्त्री कौं चाहै कौं न चाहै, पर नारी कौ यह धर्म है जु, पति कौं एक पल हू न बिसारै, अरु भर्तार की मार गारी सिंगार जानै; सो धर्म कौं पावै, औ कुलवन्ती सती कहावै.” धनी घर में रहै कि बाहर, पापी होय कौ पुन्यात्मा, पर नारी वाहि न बिसारै; क्यौंकि, स्त्री कौ अलंकार भर्तार है, पतिहीन अति सुंदरी हू नीको न लागै. औ तू जार है, सो तौ पान फूल के समान, एक घरी कौ पाहुनौ दैव के संजोग आनि मिल्यौ; कर्म की रेख मेटी न जाय, बिधाता सेां काहू की कछु न बसाय. अरु वह मेरौ स्वामी, हैं वाकी दासी, जौलौं वह, तौलौं मेरौ जीव है, वाके मरे हैं सती हैं उगो. कछौ है, “जो सती होय, सो प्रथम तौ अपने कुकर्म तें छूटै; दूजै कैसौ हू वाकौ भर्तार दुष्कर्म पापी होय, तौ हू जेते देह में रोम हैं, तेते वर्ष वह निज स्वामी कौं साथ ले, स्वर्गभोग करै.” औ जैसे गारडू सांप कौं मंच की शक्ति करि पाताल तें बुलावै, तैसे ही सहगामिनी अपने पति कौं नर्क सेां काढ़ि परम गति दिवावै. यह बात सुनि, वह खाती अपने जी मांछि कहनि लाग्यौ, धन्य मेरे भाग! जु ऐसी नारी पाई कि, आप तरै, औ मोहि तरावै. वह ऐसे बिचारि, उछाह कौ माखौ, उन दोउअन समेत खाट माथै लै नाच्यौ.

तातें हैं कहतु हैं कि, मूरख दोष देखि हू स्तुति कियै

प्रसन्न होय . पुनि राजा हंस कही, आगे कौसी भई ? तब बगुला कहनि लाग्यौ, महाराज ! उनि द्रुत बिदा कियौ है, सो मेरे पाछै आवतु है ; यह जानि जो बूझियै सो करौ . या बात कौ सुनि, वा राजा कौ मंत्री चकवा बोल्थौ कि, धर्मावतार ! यह बगुला दुष्ट है, यह काहू कौ सिखायौ आयौ है . कछौ है, “वैद्य रोगी चाहै, पंडित गुनगाहक ढूँढै, राजा सूर सेवक खोजै, अधिकारी ठाकुर कौ विग्रह मनावै .” पुनि राजा कही, या बात कौ बिचार जो करनौ उचित होय सो करौ . मंत्री कही, महाराज ! प्रथम एक जासूस पठाय, उनकौ कटक औ बिचार जानियै ; क्यौंकि, राजा कौ आंख जासूस है . जा राजा कौ जासूस रूपी नेच नाहिं, सो आंधरौ है ; अरु जाके आछे जासूस हैंय, सो नरपति घर बैथौ सब संसार कौ विभौ देखै . कछौ है, “तीरथ आश्रम देवालय तौ शास्त्र तें जानियै, औ गूढ़ बात जासूस तें .” तातें, महाराज ! जो जासूस जल थल में जा सकै, ताहि पठाइयै, औ अब ही यह बात गुप्त राखियै ; क्यौंकि, जो मंत्री फूटै तौ आगलौ सावधान होय . यातें हैं कहतु हैं कि, नीकौ जासूस पठाये युद्धजीत है . राजा औ मंत्री ऐसैं बतराय रहे हे कि, पैरिया बोल्थौ, महाराज ! एक सुआ जंबूद्वीप तें आयौ है, सु पैरि पै ठाढ़ौ है, ताहि कहा आज्ञा होति है ? यह सुनि, राजा ने चकवा की ओर देख्यौ . तद चकवा बोल्थौ, महाराज ! पहिले वाकौं छेरा दिवाऔ, पाछै बूझी जायगी . इतनी बात के सुनते

ही, द्वारपाल बाहि डेरा दैन गयो . बहुरि राजा कही,
 अहे! बिग्रह तौ उपज्यौ . चकवा बोल्यौ, महाराज ! मंची
 कौ यह धर्म नाहीं, जो स्वामी कौ लरावै, कौ भगावै . कछौ
 है, “बिचारकै युक्ति सेां बल करै, तौ थोरे पराक्रम ही
 तें कार्य सिद्ध हो .” जैसें मनुष काठ की सांग तें भारी
 पाथर उठावै, तैसें नरपति हूँ युक्ति किये जै पावै . पुनि
 कहतु हैं, “यों तौ सब ही खर हैं, पर और कौ बल देखि
 न डरि, मन स्थिर राखै, ताही कौ बलवान कहियै; बहुरि
 जौ समें पाय काम करै, तौ बेग ही सिद्ध होय, ज्यों बरषा
 काल की खेती .” अरु महत के गुन सुभाव ये हैं कि, समें
 बिन दूर तें डरावै; और पाय, नेरे आय, खरातन करै;
 आपदा में धीरज राखै; सब बात की सिद्धि में उतावली
 न करै . कछौ है, “धीरौ पानी परबत फोरै .” महाराज !
 चिचवरन राजा बडौ बली है; बलवान के सनमुख युद्ध
 करनौ जोग नाहीं; जौ निबल सबल के सनमुख होय
 खरै, तौ दीप पतंग की भांति होय; कौ जैसें कोऊ चैंटी
 कौ पाथरन मारै, तैसें माख्यौ जाय . पुनि कछौ है, “सन-
 मुख युद्ध करिबे कौ काल न होय तौ कछुआ के से पाय
 सकेल बैठियै; समय पाय नाग कौ सौ फन निकारियै;
 क्योंकि, समौ जानि छोटी हूँ उपाय करै, तौ बड़े कौ मारै .
 ज्यों बरषा काल पाय, नदी कौ प्रवाह ठाढ़े रुख कौ गिरावै,
 त्यों समें लहि सब काम हाथ आवै .” यातें सनमुख खरबे
 कौ बिचार न करि, गढ़ संवारियै, तौलौ वाके दूत कौ

विरमाय राखियै. कछौ है, “कोट ऊपर कौ एक मोक्ष सहस्र सों लरै.” पुनि जा राजा के देस मांहिं गढ़ नाहिं, ताँकौ राज शत्रु बेग ही लेय; कोट बिन राजा कौ राज स्थिर न रहै. तातैं, महाराज! अब कोट बनाइयै. कछौ है, “नदी के तीर गढ़ रचियै, तरै खाई खनाइयै, चारैँ ओर निबिड़ बन राखियै, औ पैठवे निकसवे कौँ मैल; भांति भांति के अस्त्र शस्त्र यंच गोला भरियै, अरु अरु रस धन जन कौ संचय सदा करियै.” राजा बोल्थौ, गढ़ साजबे कौ काज कौन कौ दैय? मंची कही, जे चतुर होय, ताँकौ देउ. पुनि राजा कही, या काज मांहिं तौ सारस निपुन है. प्रधान कही, वाही कौ दोजियै. बहुरि राजा ने सारस कौ बुलायकरि कछौ कि, तुम नौको ठौरि देखि गढ़ रचो. उन कही, महाराज! मैं या सरोवर कौ अनेक दिन तैं, तक राख्यौ है कि, याहिं मांहिं गढ़ रचियै, तौ भलौ; क्यौंकि, याके तीर अन्न अधिक होतु है, अरु अन्न ही तैं सब कछु होतु है. कछौ है, “रत्न औ कांचन सब वस्तु सों उत्तम है; पर मनुष कौ अन्न बिन न सरै. जैसे नौन बिन सब फोकौ, तैसें अन्न बिन कछु न नीकौ.” पुनि राजा ने सारस सों कछौ, तुम बेग जाय गढ़ रचो. इतेक मांहिं, पौरिया आय बोल्थौ कि, धर्मावतार! सिंग-लदीप तैं एक काग मेघवरन नाम आयौ है, सु आपके दरसन कौ अभिलाषा कियै, द्वार पै ठाढ़ौ है; मोहि कहा आज्ञा होति है? राजा कही, काग दूरदर्शी होतु है, यामें

वाहि राखनैं उचित है . मंची बोल्यौ, महाराज ! तुम भली कही, पर मेरे जान याहि राखनैं जाग नाहीं; क्योंकि, यह थल कौ बासी, औ हमारे शत्रु कौ साथी है, यातें याकौ रहनैं कौं हू नीकौ नाहिं . कछौ है, “जो राजा अपनैं पंथ छांड़ि, पराई चाल चलै, सो राजा कूकरदमनक की भांति मरै .” राजा पूछी, यह कैसी कथा है ? तब मंची कहनि लाग्यौ .

एक समें काहू स्यार कौ नगर के निकट कूकरनि आनि घेख्यौ; सो भयमान होय भाग्यौ, औ गांव में जाय, एक लील के कुंड मांहिं गिख्यौ . जब नीलवारे ने वाहि मख्यौ जानि, घासों काढ़ि, गैल में डारि दियौ, तब वह शृगाल भय कौ माख्यौ नगर की गली मांहिं मृतक छै रह्यौ . तहां पनहारियन वाहि पख्यौ देखि, आपस में पूछ्यौ, आखी ! यह कौन जंतु है ? काहू ने कछौ, बीर ! यह स्यार है . पुनि एक उन में तें बोल्यो, अरी ! याकौ कान काटि बालक के कंठ में बांधै, तौ डाकिनी न लागै . दूजी बोल्यौ, बहनि ! याकी पूंछ काटि मौंडा के गरे में डारै, तौ भूत पिशाच न लागै . तीजी ने झट काट हो लये . तब चौथी ने कछौ, याके दांत तोरि छोहरा की गुदी में राखै, तौ कछु रोग न होय . यह बात सुनि, वा स्यार ने मन में कछौ कि, या गांव के लोग बड़े पापी हैं ; कान पूंछ काटि अब दांत तोख्यौ चाहतु हैं . यातें यहां तें भाजियै तौ बचियै . यह बिचारि, वह स्यार वहां तें पराय, बन में आय, सोचन

लाग्यो कि, अब मेरौ नील बरन भयौ, जामें अपनी प्रभुता होय सो करौं. यह बिचारि; वा ने सब स्यारनि कौ आनि कछौ कि, आज या बन के देवताओं ने निज हाथनि औषधीन तें अभिषेक करि मोहि या बन कौ राज दयौ है, तुम मेरौ बरन देखौ. यह सुनि, विन स्यारनि बाकौ बरन देखि, ताकी बात मानि, सबनि हाथ जोरि कछौ कि, अब जो कछु महाराज की आज्ञा होय, सो करै. तब उनि कही, तुम सब मेरे पास रहौ. पुनि वेज रहनि लागे. ऐसें जब उनि अपने सजातीन में आदर पायौ, तब और छ बरन के जीव, बाघ चीता आदि सब आज्ञाकारी भये; पुनि उनि स्यार खेद दये. तद् वे स्यार सब जुरि, चिंता करि, कहनि लागे कि, अब कहा करै? बहुरि विन में तें एक बूढ़ी जंबुक बोल्यौ, अरे! तुम जिन पछताओ, मैं याकौ भेद पायौ है कि, यह गांव में तौ पूंछ कान कटाय आयौ, अरु छां आय इन अपनौ नाम राजा कूकरदमनक धरायौ; ये सिंह चीता अनजाने याकी सेवा करतु हैं. तातें मैं एक उपाय बिचाख्यौ है कि, सांझ समें सब स्यार इकठे होय, याके सनमुख पुकारौ, तब यह छ जाति कौ सुभाव न छांड़ि, उन में बैठि बोलि है. कछौ है, "जौ कूकर कौ राज होय, तौ छ वह टूटी पनही चबाय, निज जात कौ सुभाव न तजै." ऐसें बूढ़े स्यार की बात सुनि, उननि वैसें ही कही. जब राजा कूकरदमनक नाहर चीतानि में बैठि बोल्यौ, तब उननि बाहि मारि खायौ.

वाहि राखनैं उचित है . मंची बोल्यौ, महाराज ! तुम भली कही, पर मेरे जान वाहि राखनैं जाग नाहीं ; कौंकि, यह थल कैा बासी, औ हमारे शत्रु कैा साथी है, यातें याकौ रहनैं कौं नू नीकौ नाहिं . कछौ है, “जो राजा अपनैं पंथ छांड़ि, पराई चाल चलै, सो राजा कूकरदमनक की भांति मरै .” राजा पूछी, यह कैसी कथा है ? तब मंची कहनि लाग्यौ .

एक समें काहू स्यार कैा नगर के निकट कूकरनि आनि घेख्यौ ; सो भयमान होय भाग्यौ, औ गांव में जाय, एक लील के कुंड मांहिं गिख्यौ . जब नीलवारे ने वाहि मख्यौ जानि, घासों काढि, गैल में डारि दियौ, तब वह शृगाल भय कैा मख्यौ नगर की गली मांहिं मृतक छै रह्यौ . तहां पनहारियन वाहि पख्यौ देखि, आपस में पूछ्यौ, आखी ! यह कौन जंतु है ? काहू ने कछौ, बीर ! यह स्यार है . पुनि एक उन में तें बोलो, अरी ! याकौ कान काटि बालक के कंठ में बांधै, तौ डाकिनी न लागै . दूजी बोल्यौ, बहनि ! याकी पूंछ काटि मौंडा के गरे में डारै, तौ भूत पिशाच न लागै . तीजी ने अट काट हो लये . तब चौथी ने कछौ, याके दांत तोरि छोहरा की गुदी में राखै, तौ कछु रोग न होय . यह बात सुनि, वा स्यार ने मन में कछौ कि, या गांव के लोग बड़े पापी हैं ; कान पूंछ काटि अब दांत तोख्यौ चाहतु हैं . यातें यहां तें भाजियै तौ बचियै . यह बिचारि, वह स्यार वहां तें पराय, बन में आय, सोचन

लाग्यौ कि, अब मेरौ नील बरन भयौ, जामें अपनी प्रभुता होय सो करौं . यह विचारि; वा ने सब स्यारनि कौ आनि कछौ कि, आज या बन के देवताओं ने निज हाथनि औषधीन तें अभिषेक करि मोहि या बन कौ राज दयौ है, तुम मेरौ बरन देखौ . यह सुनि, विन स्यारनि वाकौ बरन देखि, ताकी बात मानि, सबनि हाथ जोरि कछौ कि, अब जो कछु महाराज की आज्ञा होय, सो करै . तब उनि कही, तुम सब मेरे पास रहौ . पुनि वेज रहनि लागे . ऐसे जब उनि अपने सजातीन में आदर पायौ, तब और ह्म बन के जीव, बाघ चीता आदि सब आज्ञाकारी भये; पुनि उनि स्यार खेद दये . तद् वे स्यार सब जुरि, चिंता करि, कहनि लागे कि, अब कहा करै ? बहुरि विन में तें एक बूढ़ौ जंबुक बोल्ह्यौ, अरे ! तुम जिन पछताओ, मैं याकौ भेद पायौ है कि, यह गांव में तौ पूंछ कान कटाय आयौ, अरु छां आय इन अपनी नाम राजा कूकरदमनक धरायौ; ये सिंह चीता अनजाने याकी सेवा करतु हैं . तातें मैं एक उपाय बिचाख्यौ है कि, सांझ समें सब स्यार इकठे होय, याके सनमुख पुकारौ, तब यह ह्म जाति कौ सुभाव न छांड़ि, उन में बैठि बोलिहै . कछौ है, “जौ कूकर कौ राज होय, तौ ह्म वह टूटी पनही चबाय, निज जात कौ सुभाव न तजै .” ऐसे बूढ़े स्यार की बात सुनि, उननि वैसे ही कही . जब राजा कूकरदमनक नाहर चीतानि में बैठि बोल्ह्यौ, तब उननि बाहि मारि खायौ .

ताते हैं कहतु हैं कि, महाराज ! अपनी पंथ कबहू न छाड़ियै ; ओ घर का भेद, बात का मरम, काहू से न कहियै . कह्यौ है, “खोडर की आग तरु कौं जरावै.”

धाते महाराज ! बिदेसी कौं भेद कबहू न बताइयै, न घर में राखियै . पुनि राजा कही, अहो ! बात तौ ऐसे ही है ; पर दूर तें आयौ है, ताते बाहि बुलायकै देखियै ; जो राखिवे जाग होय, तौ राखियै, ना तौ बिदा करियै .

चकवा कही, महाराज ! अब तिहारौ गढ़ साज्यौ गयौ ; चिचवरन राजा के दूत कौं बुलाय, बिदा कीजै . कह्यौ है, “भूपाल और भूपाल के बसीठ तें एकसौ न मिलै.”

तासें अपनी समा के सब खोमन कौं बुलाय बैठारियै, सब सुआ कौं बुलवाइयै, अरु वाके साथ काग कौं ह . यह सुनि, राजा ने वैसे ही करि, किन दोऊन कौं बुलाय, आसन दै, बैठावै . तब सीस झुकाय, कोर बोख्यौ, अहो हिरन्यगर्भ राजाधिराज ! तुम कौं श्री महाराज राजा चिचवरन ने कह्यौ है, जो अपनी प्राण राख्यौ चाहै, तौ हमारी सरन आओ ; ना तौ अपने रहनि कौं अनत ठौर करौ . यह बात सुनि, राजा हंस क्रोध करि, बोख्यौ है रे कोऊ जो या बसीठ कौं मारै ? इतेक सुनि, वह काग बोख्यौ, महाराज ! मो कौं आजा होय, तौ या दुष्ट कौं मारौं . चकवा कही, धर्मावतार ! दूत राजा कौ मुख है, ताते याकौ कछु दोष नाहीं ; जैसे व्हां सुनी, तैसे व्हां आनि कही ; यह मिथ्या न भाषै ; अरु बसीठ के कहे,

कछु अपनी हानि, न वाकी प्रभुता ; तासों थाकों मारनों काहू भांति उचित नाहिं . कछौ है, “जा सभा में बूढ़ौ न होय, सो सभा न सोभै ; सो बूढ़ौ नाहिं, जो धर्म न जानै ; वह धर्म नाहिं, जहां सत्य न होय ; वह सत्य न नाहिं, जहां दया न उपजै .” ऐसैं समझाय, मंची ने राजा को क्रोध निवारन कियौ . पुनि तोता वहां तें उठि चली . तह मंची ने वाहि मनाय बैठायौ, औ बख्श अखंकार दिवाय, राजा तें बिदा करायौ .

अब वह अपने राजा के पास गयौ, तब राजा चिच-वरन ने बा तें पूछी, सुक ! कही, वह देस कैसौ है ? सुआ कही, महाराज ! पहलै युद्ध की सामा करौ, पाछे हैं कहतु हैं . राजा बोली, हमारै लराई को सब सामान इकठै है ; तुम कही . पुनि सुआ कहनि लाग्यौ, महाराज ! कर्पूरदीप सातवें स्वर्ग समान है, अरु मो पै बरन्हीं नाहीं जातु . यह सुनि, राजा ने अपने सब मंचियन को बुलायकै कछौ, अहे ! कीर कहतु है कि, राजा हंस तें युद्ध करौ, सो तुम तें पूछतु हैं कि, अब कहा करनैं उचित है ? अरु मेरौ न मनोरथ यह है कि, युद्ध करौं . कछौ है, “असंतोषी ब्राह्मन, लाजवती वेस्था, कुलवती निर्लज्ज, औ राजा संतोषी होय, तौ ये सब थोरे ई दिन मांहिं नष्ट होय .” यह सुनि, राजा को मंची दूरदर्शी नाम गीध बोली, महाराज ! अपने मंची, मित्र, कटक, प्रजा आदि सब एक मत हैं, अरु बाबु के मित्र, मंची,

औ प्रजा में विरुद्ध होय, तौ युद्ध करियै; यह नीति है. राजा कही, मेरौ दल में सब देखौ; यह खानिवारौ है, पर काहू काम कौ नाहिं; यातें तुम बेग जायसी बुलाय, मझरत देखौ. गीध कही, पृथ्वीनाथ! शीघ्र ही याचा न बूझियै. कछौ है, “शत्रु बिन बिचारै वाकी भूमि में जाइयै, तौ नान्हौ हू बड़े कौं जीतै.” पुनि राजा कही, जो परभूमि लियौ चाहै; सो कौन भांति तें लेइ? यह तुम कहौ. मंची बोल्थौ, महाराज! उद्योग करे, मन-कामना पूरन होय, अरु बिन उद्योग कछु न होय; जैसे औषध खाये रोग जाय, वाकौ नाम लियै न जाय. अब महाराज की आज्ञा प्रमान, परभूमि लेवे की रीति कहतु हैं, जो राजनीति में कही है.

प्रथम तौ, राजा अपने मंची, जोधा, महाजन, मुखियान कौं बुलाय, सनमान करि, साथ लेय; अरु शस्त्र, वस्त्र, अस्त्रकार, धन, गज, घोरा निज खोगन कौं बांटै; जो जाके जाग होय, ताकौ तैसौ सनमान करै, पाछै कटक साथ लै चलै; अरु जहां पर्वत बन डर की ठांव होय, तहां सेनापती कटक दूकठौ करि चलै; भले भले खुर साथ राखै; औ रनवास, ठाकुर, भंडार, नान्हे खोग, ब्यौपारी, बोच मांहिं. पुनि राजा औ मंची सब पै दृष्ट राखै, औ बनवासी, पर्वतनिवासी खोग आगै धर लेय; बहुत जहां विषम भूमि होय, कैबरवाकाल होय, तौ राजा हाथी पर चढ़ि चलै. कछौ है, “गज की देह में

आठ शस्त्र हैं, चार पांव, दूँ दांत, एक हृंद, और माँही .” या तें राजा हाथी अधिक राखै ताँ भलौ ; क्योंकि, गरुड चलताँ कोट है ; अरु जो घोरानि पै चढ़ि लरै, तिन तें देवता छ डरै, और पर्यादेन कौं बल सदा राखै . पुनि परभूमि में जाय, राजा सदा सावधान रहै, काहूँ कौं विस्वास कबहूँ न करै ; जोगेश्वर की नौद सोवै ; अरु राजा अपने साथ द्रव्य राखै ; क्योंकि, धन प्राण तुल्य है ; बिन धन प्रभुता नाहीं . लक्ष्मी पाय को न जूझै ? मनुष्य द्रव्य के हेतु सेवा करतु है . कह्यौ है, “नर धन तें बड़ा, और धन ही तें छोटा .” पुनि शत्रु कौं देस लूटि, खसोटिके उजारै ; क्योंकि, तातें अरि दुश्चितौ होय ; अरु बाकौ अन्न रस ईंधन न्यार जो पावै, सो लूटि ल्यावै ; और गढ़, गढ़ी, सर, कूप, बापी, फोरि नाखै ; बन उपवन बारी काटि डारै . ऐसेँ अनेक अनेक भांति की पीड़ाशत्रु कौं उपजावै, और अपने लोगनि तें सदा प्रसन्न होय, बत-रायौ करै, जातें लोग जानै कि, हमारौ स्वामी हम सोँ संतुष्ट है . कह्यौ है, “ठाकुर के सनमान और हित बचन तें जैसौ सेवक काज करै ; तैसौ धन दियै, अरु कटु बचन तें, न करै .” पुनि जब सेवक काज करि आवै, तब बाहि प्रसाद देय ; अरु जो प्रसाद न देय, ताँ बाकी जीविका दूनी कर देय ; और यज्ञ न होय, ताँ ताकौ कमायौ पैसा चुकाय देय . अरु जो स्वामी सेवक कौ महीना देत आज काल करि डारै, ताकौ किंकर उदास रहै, और

असमय पर कामी देय . तातें जो राजा शत्रु कौं जीत्यौ चाहे, सो दासनि सो सेवकनि कौं प्रसन्न राखै, तौ जहां जाय, तहां विजय पावै . अरु या बात कौं सुनि, अरि के सेवक मूखे टूटे हैंय, ते आप तें आप आय मिलैं, तौ खरनौ ह न परै . बहुरि, रिपु के जीतवे कौ एक बडौ उपाय कह्यौ है कि, “बाके भाई भानेज भतीजान सों भेद उपाय करि, तिन कौ आदर मान कीजै, अरु मंची प्रजा कौं ह अपनाय लीजै ; सो जे लरैं, तिन कौ नास कीजै ; अरु जे सरन गहैं, तिन कौ भय मिटाय दीजै ; अरि कौ देस उजारियै, अपनौ बसाइयै . शास्त्र में कह्यौ है, या प्रकार तें राजा चलै, तौ युद्ध जीतै . पुनि राजा मोल्यौ, मैं जान्यौं, जातें अपनी जीत, सो शत्रु की हार होय, ताकी यह रीति है ; पर शास्त्र के पैड़े तें मन की उमंग कौ पंथ न्यारौ है ; मन की उमंग में जो शास्त्र निचारै, तौ न बनै ; जैसे अंधकार सो तेज इकठौ न रहै . इतनौ कहि, राजा ने जोयसी बुलाय, शुभ मुहूर्त ठहराय, भली लग्न में दिगविजययाचा करी . तब राजा हंस के दूत ने आय, अपने राजा सों कही कि, महा-बाक ! राजा चिचबरन ने मलयाचल परवत के छेठ आय डेरा कइलौ ; तुम अपने गढ़ की रक्षा करौ, सो अपनौ पदयौ चीन्है . बाकी मंची अति चतुर है ; मैं बाकी बात सों जान्यौ कि, उनि हमारौ गढ़ सैन कौं अपनौ मित्र काग पठाग्यौ है . बहुरि राजा हंस कौ मंची

चकवा बोल्थौ, महाराज! या काग कौं न राखियै . राजा कही, जौ यह काग वाकौ पठायौ होतौ, तौ वा सुआ कौं मारनि न उठतौ; अरु उन तोता के गये पाछै युद्ध कै मतौ कियौ है, यह वा तें प्रथम आयौ हो . मंषी बोल्थौ, महाराज! तऊ नये आये तें डरियै . राजा कही, अहो! जो नयौ आयौ अपनौ उपकार करै, ताहि मित्र जानियै; अरु बंधु मित्र होय अपने काम न आवै, ताहि शत्रु करि मानियै; जैसें बन की औषधी तुरत की आई, रोगी के रोग कौं दूर करि सुख देइ, तैसें कोऊ कोऊ मनुष हू नयौ आयौ, उपकार करि जस लेइ; पुनि ज्यों शूद्रक राजा के बीरबर सेवक ने अल्प दिननि ही में सहायता करी . चकवा बोल्थौ, महाराज! यह कैसी कथा है? पुनि राजा कहतु है ;

शूद्रक नाम एक राजा, वाकी क्रीड़ा कौ एक सरोवर, तामें कर्पूरकेल नाम राजा हंस हो . वाकी बेटौ कौ नाम कर्पूरमंजरी; तापै आसक्त होय मैं वहां रह्यौ . तहां बीर-बर नाम एक राजपूत, काहू देस तें उद्यम कै लिये आय, राजद्वार पै ठाढ़ौ भयौ, अरु उनि पौरियन तें कछौ, मोहि राजा तें मिलाओ, हीं सेवा करनि के हेतु आयौ हीं . द्वारपाल यह बात जाय राजा सेां कही . तब राजा ने वाहि बुलायकै पूछ्यौ, तुम दिनप्रति कहा लेउगे? उनि कही, चार सौ तोला सुवरन . पुनि राजा बोल्थौ, और तिहारे साथ को है? उनि कही, दै हाथ, तीजौ खड़ग . राजा कही, इतेक हम तें न दियौ जायगौ . यह सुनि,

बीरबर जुहार करि चली। तद मंची ने राजा से कही,
 महाराज! चार दिन तो याहि सुबरन दै राखियै, औ
 याकौ पराक्रम देखियै, इतेक भोग है कौ नाहिं. मंची की
 बात मानि, राजा ने वाहि सैन्य दै राख्यौ. वा दिन कौ
 कंचन लै, बाने अपने घर जाय, आधौ तौ ब्राह्मननि कौ
 संकल्प करि दियौ, अब वाकौ आधौ भूखे भिखारी भिक्षु-
 कन कौ बांटे दियौ, औ एक भाग निज भोजनार्थ राख्यौ.
 याही भांति वह पुत्र पत्नी स्त्री सहित वहां रहनि लाग्यौ.
 जब सांझ होय, तब खांडौ फरी लै, राजसेवा में जाय उप-
 स्थित होय. एक दिन कृष्णचतुर्दशी की आधी रात कौ
 घन घुमडि मेह मझौ; ता समें काहू नारी के रोवन कौ
 शब्द सुनि, राजा बोल्यौ, कोऊ है? बीरबर कही, महा-
 राज! कहा आज्ञा होती है? राजा कही, देख तौ, को
 रोवतु है? राजा की आज्ञा पाय, बीरबर चली. तब राजा
 ने अपने मन में विचार्यौ कि, मोहि ऐसी न बूझियै जु,
 या अंधेरी रैन माहिं रजपूत कौ एकलौ पठाऊं; तातें याके
 पाछै पाछै जाय देखौं तौ सही, यह कहा करतु है? या
 प्रकार राजा मन में विचारि, ठार तरवार गहि, वाके पाछै
 लियौ. आगे जाय बीरबर देखौ तौ, एक नारी नव-
 जीवना, अति रूपवती, सब आभरण पहरे, ठाढ़ी, भाव
 मारि मारि रोवति है. इन वासों पूछी, तू को है? उनि
 कही, हौं राजलक्ष्मी हौं. पुनि इन कछौ, तू रोवति काहे?
 उनि कही, मैं बहुत दिन या राजा की भुजानि की छांह

में विश्राम कियौ, अरु अब या राजा कौ छांड़ि जाउंगी, या दुख तें रोवति हैं। इन कही, तू काहू भांति छू रहै ? उनि कही, जौ तू निज पूत कौ बल देइ, तौ हैं रहैं, अरु यह राजा अनेक दिन अखंड राज करै। पुनि बीर-बर कही, माता ! जौलौं मैं अपने घर हूँ आज, तौलौं तुम छां रहौ। ऐसे कहि, घर जाय, बीरबर पुच औ स्त्री कौ जगाय, लक्ष्मी के कहे बचन कहिवे लाग्यौ, तौ पुत्री छू जागी। यह बात सुनि, सब चुप रहे। तद पुच बोल्थौ, धन्य भाग मेरौ, जु यह देह देवी के निमित्त लागै, अरु स्वामी कौ काज सरै ! यामें पिता जू बिलंब जिन करौ ; क्यौंकि, कबहू तौ या काया कौ बिनास होय, तातें काहू के काज लागै, सो तौ भलौ ही है। कछौ है, “विद्या, धन, प्रान, पराक्रम, जाकौ पराये काम आवै, ताही कौ संसार में जन्म लैनां सुफल है।” पुनि बीरबर की पत्नी बोली, जौ तुम यह कार्य न करौगे, तौ राजा के ऋन तें कैसें उतरन होउगे ? ऐसे बतराय, सब देवी के मंदिर पै गये ; अरु पूजा करि, हाथ जोरि, इतना कछौ, माता ! हमारौ राजा चिरंजीव होय राज करै। यह कहि, पुच कौ मूंड काटि, बीरबर ने देवी कौ द्यौ, अरु अपने मन मांहिं कछौ कि, राजा के ऋन तें तौ उतरन भयौ ; पर अब निपूतौ होय जगत में जीवनां उचित नाहिं। यह समझि अपनौ छू सीस काटि, भवानी के आगू धर्यौ। उन दोउअन कौं मर्यौ देखि, वाकी स्त्री

ने बिचाख्यौ कि, संसार में रांड निपूती है जीनों जोग नाहिं . ऐसे ठानि, वा हू ने निज मायौ चढ़ायौ . विन तीननि कौं मख्यौ देखि, वाकी पुत्री ने बिचाख्यौ कि, निगोड़ी नाठी है, जग में जीवना भखौ नाहिं . यह समझि, विन हू मस्तक काटि, देवी के सनमुख राख्यौ . यह चरित्र देखि, नरपति ने जी माहिं बिचाख्यौ कि, मो से जीव अनेक पृथ्वी में उपजतु खपतु हैं ; पर ऐसे खर नर हाने कठिन हैं ; ताते अब याकौ कुटुंब नास करि, मोहि राज करनौ जोग नाहिं . यह सोचि समझि, ज्यों भूपाल निज मूंड उतारनि लाग्यौ, त्यों हीं देवी ने आय, कर गछ्यौ, अरु कछ्यौ, राजा ! तू साहस जिन करै, अब तेरे राज में भंग नाहिं . राजा कही, माता ! मोहि राज तें कछु प्रयोजन नाहिं . पुनि देवी बोली, हैं तेरे धर्म, औ सेवक के कर्म पर, संतुष्ट भई ; अब तू जो वर मांगै सो दैउं . राजा कही, मा ! जो तुम तुष्ट भई हो, तौ इन चारन कौं जीवदान देउ . जब उन पाताल तें अमृत लाय, विन चारन कौं जिवायौ, तब राजा चुपचाप वहां तें चलि, निज मंदिर में आयौ ; औ बीरबर हू, उन तीनों कौं घर राखि, आप राजा के समीप पंहुच्यौ . नरपति ने वाहि पूछ्यौ, तुम गये हे, तहां कहा देखि आये ? पुनि कर जोरि, उन कही, महाराज ! एक नारी रोवति ही . जौलैं हैं वहां गयौ, तौलैं वह चुप रही, मैं वाहि न पायौ ; पुनि मैं बगदि आप के ठिग आयौ . ऐसैं सुनि, राजा ने मन

में कछौ कि, यह कोज बड़ौ सिद्ध पुरुष है, याकी स्तुति
 हैं कहां लौं करौं! कछौ है, “दयावंत, दानी, तपसी,
 सत्यवादी, औ खर जौ अपनी बड़ाई न करै, तौ वाहि
 सिद्ध पुरुष जानियै.” आगै, राजा ने प्रात भये, पंडितन
 की सभा में बैठि, रात्रि कौ सब वृत्तांत कछौ, अरु संतुष्ट
 होय, बीरबर कौं करनाटक देस कौ राज दयौ . तातें
 हैं कहतु हैं, सब नये हू बुरे न हैंय . संसार में तीन
 प्रकार के मनुष होतु हैं ; उत्तम, मध्यम, अधम, बहुरि
 चकवा बोल्थौ, महाराज ! यह काज करवे जाग नाहिं;
 आगै महाराज की इच्छा . कछौ है, ‘ पराई रीस पंडित
 चतुर कबहू न करै ;’ अरु जौ करै, तौ वैसें होय, जैसें,
 एक क्षत्री ने अपनी तपस्या तें धन पायौ, औ वाकी रीस
 करि, एक नाज ने निज प्रान गंवायौ . नरपति कही, यह
 कैसी कथा है ? तब चक्रवाक कहनि लाग्यौ ;

अयोध्या पुरी मांहिं, एक चूड़ाकरन नाम क्षत्री रहै;
 तिन धन के निमित्त अति कष्ट करि, श्री महादेव जू की
 सेवा करी ; तब सदाशिव जू ने वाकौं स्वप्न में दरसन
 दै, कछौ, अरे ! आज पादुली रात्रि समें, क्षीर होय,
 स्नान करि, लौठिया कर धरि, अपनी पौरि मांहिं कपाट
 के पाछै लुक रहियौ ; जब कोज भिक्षा कौं आवै, तब
 वाहि लकुटनि मारि, घर मांहिं लहियौ ; वह सुबरन
 भस्यौ कलस छैहै ; तातें तू जबलग जीवैगौ, तबलग सुखी
 रहैगौ . यह बर पाय, विन दूजे दिन नाज कौ बुलाय,

वैसे ही कियौ, जैसे भोलाानाथ ने कहाँ हो . जद वह भिखारी सुबरन घट भयौ, तद इन लै घर में धख्यौ . यह चरिच देखि, वा नौआ ने बिचाख्यौ कि, धन पायवे की जौ यही रीति है, तौ हौं हू कौं न करौं? ऐसे समझि, निज घर आय, उन हू एक सन्यासी माख्यौ ; तब बाहि राजा के सेवकनि पकरि लै जाय, सन्यासी के पलटै माख्यौ . तातें हौं कहतु हौं कि, और की रीस कबहू न करियै . पुनि राजा कही, पाछली बात जिन करौ, आगै ओ करनी होय सो करौ . मलयागिर पर्वत के तरै, राजा चिचवरन कौ डेरा है ; अब कहा करियै सो कहा ? मंची बोख्यौ, महाराज ! हम हू सुन्यौ है कि, वह लरवे कौं आयौ है ; पर तुम कछु चिंता जिन करौ, हम बाहि जीतिहैं ; कौंकि, वाने अपने मंची कौ कहाँ नाहीं मान्यौ . कहाँ है कि, “जो शत्रु लोभी, क्रुद आलसी, कायर, झूठा, औ अधीर, होय ; अरु धन राखि न जानै ; काहू कौ कहाँ न मानै ; ताहि बिन कष्ट मारियै .” महाराज ! जौलौं वह हमारौ गढ़, नगर, कटक, औ घाट बाट न देखै, तौलौं वाके मारिवे कौं सेना पठाइयै . ऐसे और हू ठौर कहाँ है कि, “दूर कौ आयौ, थक्यौ, भूख्यौ, प्यास्यौ, भयमान, असावधान, रात्रि कौ जाग्यौ, औ परवत तरै बस्यौ होय, ऐसे शत्रु कौं दौरि मारियै .” यानें उचित है कि, अबही हमारौ सेनापति वाके दल कौं जाय मारै, तौ भलौ . यह बात मंची तें सुनत प्रमान, राजा ने सेनापती

कों टेरि आज्ञा दई कि, तुम याही सभें राजा चिचवरन की सेना कों जाय मारौ. उन वैसेही करी. जब चिचवरन के जोधा अनेक मारे गये, तब वह चिंता करनि लाग्यौ. पुनि बाकौ मंची गोध बोल्यौ, अब काहे चिंता करतु है ? बहुरि राजा कही, बाबा जू ! अब काहू भांति हमारी सेना की रक्षा करौ. ऐसें भयमान राजा कों देखि, गोध बोल्यौ, महाराज ! कह्यौ है कि, “गर्व तें लक्ष्मी टरै ; बुढ़ापौ पौरुष हरै ; चतुर संदेह मिटावै ; अभ्यास करे बिद्या आवै ; न्याय प्रताप बढ़ावै ; विनय तें अर्थ पावै.” अरु मूर्ख राजा होय, तौ पंडितन की सभा तें सोभा ; जैसें नदी के तीर रूख हख्यौ रहै, तैसें आछी सभा तें राजा कौ मन हू डहडह्यौ रहै .

इतनौ कहि, पुनि गोध बोल्यौ, महाराज ! तुम ने अपनौ कटक देखि, गर्व करि, साहस कियौ, अरु मेरौ कह्यौ न मान्यौ ; ता अनीति कौ यह फल है . कह्यौ है, “जो राजा मंच चूकै, तौ ताकी नीति कौ दोष है ; जैसें कुपथ्य तें रोग होय, रोग तें मरै ; तैसें धन तें गर्व होय, ओ गर्व तें दुख.” पुनि निर्बुद्धि कों शास्त्र यों, ज्यों आंधरे के हाथ आरसी. यह समझि, हम हू मौन गहि रहे. इतेक बातें सुनि, राजा ने हाथ जोरि, गोध सेां कही, बाबा जू ! मो तें अपराध भयौ, क्षमा कीजै ; अरु अब काहू भांति जो कटक बच्यौ है, ताहि साथ लै, निज घर की बाट लीजै . पुनि गोध कही, महाराज ! ऐसी कह्यौ

है कि, “राजा, गुरु, ब्राह्मण, बालक, दृढ़, स्त्री, रोगी ; इन पै ज्यों क्रोध उपजै, त्यों हीं जाय .” तातें तुम डरौ जिन, धीरज धरौ . कह्यौ है, “मंची ताही कौं कहियै, जो बिगस्यौ काज सुधारै ; औ वैद्य सो, जो सन्निपात निवारै .” यातें तुम कछु चिंता मत करौ, हैं तिहारे प्रताप तें वाकौ गढ़ तोरि, कटक समेत आनंद सों घर लै चलिहैं . राजा बोल्ह्यौ, थोरौ कटक रह्यौ, अब गढ़ कैसें विजय करिहौ ? गीध कही, महाराज ! जो संग्राम जीत्यौ चाहौ, तौ बिलंब जिन करौ ; आज ही चलि वाकौ कोट छेकियै .

यह बात सुनत ही, बगुला ने राजा हंस तें जाय कह्यै कि, महाराज ! राजा चिचवरन थोरे ही कटक तें, तिहारौ गढ़ छेक्यौ चाहतु है ; यह बात मैं वाके मंची तें सुनि आयौ हैं . यह बात सुनि, राजा हंस ने अपने मंची सों कह्यौ कि, अब कहा करियै ? चकवा बोल्ह्यौ, महाराज ! अपनी कटक देखौ, यामें कौन भलौ है, औ कौन बुरौ ? भलौ होय, ताहि धन, बस्त्र, घोरा, हाथी, शस्त्र, दीजै ; औ बुरौ होय, ताहि गढ़ कटक तें बाहर कीजै . कह्यौ है जु, “राजा एक समय तौ दाम कौं लाख करि माने ; अरु एक काल लाख कौं दाम करि जाने ; तौ वा राजा कौं लक्ष्मी न छाड़ै .” पुनि, यज्ञ, दान, विवाह, आपत्य ; औ शत्रु मारिवे में, जो धन उठावतु है, सोई स्वार्थक है ; अरु मूरख थोरे दैन तें डरि, सबही गंवावै . राजा बोल्ह्यौ, तुम कौं ऐसी कहां की आपदा है ? मंची कही, महाराज !

कह्यौ है जु, “लक्ष्मी रिसाय, तौ आवौ धन जाय.” ताते दान कोजियै जो, धर्म के आधीन है, लक्ष्मी रहै. बहुरि राजनीति में हू कह्यौ है कि, “विग्रह के समय राजा अपने जोधान का समाधान करै, जो जैसी, ताकौ तैसी; क्योंकि, जे उत्तम, प्रवीन, कुलीन, सीलवंत, खर, बीर, धीर, नीकै पोखै हैंय, ते पांच पांच सौ तें खरै; अरु अकुलीन, अप्रवीन, अधम, अधीर, कायर, निर्लज्ज, हैंय, ते पांच सौ पांच तें पराय, महाराज! पुनि जा राजा कौ मंची असावधान होय, ताकौ हू राज न रहै. अरु जो राजा अपनी परायी न जानै, मंची को प्रतीत न मानै, सेवक कौ दुख सुख न गनै, सो राजा कबहू निश्चिन्ता न रहै. जो जो राजा अपनी परायी बूझे, सेवक कौ दुख सुख बिचारै, ताके खियै सेवक धन तन प्रान दे सहायता करै.

राजा औ मंची ऐसे बतराय रहे हे कि, ताही समें मेघवरन काग आय, जुहार करि, बाल्यौ, महाराज! अजु युद्ध करिवे कौं गढ़ के बार आवौ है; मोहि आज्ञा होय, तौ बाहर निकरि, संग्राम करौं, अरु आप के लौन तें उत्तरन हैंउं. मंची कही, बन तें निकस्यौ सिंह अरु स्थार समान है; यातें गढ़ तें न निकसियै. कह्यौ है, “जो राजा आप ठाढ़ी रहि युद्ध देखै, तौ कायर सिंह समान होय खरै.” ताते अबही कोट के बार जय युद्ध करमैं जाग नाहिं. इधर तौ राजा औ मंची ऐसे बतराय रहे हे, अरु उन चिचवरन राजा ने दूजै दिन गोधसों कह्यौ कि, बाबा

जू! जो प्रतिज्ञा करो ही, ताकौ निर्वाह करौ . गीध बोल्यौ, सुनौ महाराज! आगरे के घेरे जोधा हैंय, कै राजा मूर्ख, औ मंची कायर हैय, तौ गढ़ उतावलौ टूटै; सो तौ वहां एकौ गति नाहिं; तातें ह्वां के लोगनि तें भेद उपाय करियै; कै घेरौ नाखि, अन्न रस रोकि, सब मिल साहस करै तौ गढ़ पावै . कछौ है, “जैसौ बल होय, तैसौ जतन करियै.” इतनौ कहि, पुनि मंची ने राजा के कान में कछौ कि, महाराज! कछु चिंता जिन करौ; हमारौ काग वाके गढ़ में है, सो काम करिहै . आगै, प्रात होत, राजा चिचवरन सब सेना लै, गढ़ की पैरि जाय लाग्यौ . उत समय पाय, काग लाय लगाय, गढ़ लियौ लियौ करि पुकाख्यौ; तब तहां के जीवन के पग छूटे; वे सब दैरि पानी में पैठे; औ राजा हंस सुकुमारता तें पराय न सक्यौ; तद एक सर्वमित्र नाम कूकड़ौ राजा चिचवरन कौ सेनापति, तिन आय हंस कौं छेक्यौ . तब सारस वाके सनमुख हैनि लाग्यौ . तहां हंस बोल्यौ, तुम मेरे निमित्त जिन जूझौ; हैं ह्वां रहैं, तुम मेरे पुत्र चूरामन कौं लै जाय, राज करौ . सारस कह्यौ, महाराज! आप ऐसी बात जिन कह्यौ; जौलौं चंद्र खरज, तौलौं तुम अखंड राज करौ; हैं आप के प्रताप सों गढ़ में सब शत्रुन मारि बिछावतु हैं . कछौ है, “क्षमावंत, दाता, गुनगाहक, सुखदायक, धर्मात्मा, ठाकुर कहां पाइयै?” राजा कह्यौ, भक्तिवंत, निष्कपट, चतुर सेवक

हू कहाँ पाइयै ? पुनि सारस बोल्थौ, महाराज ! संग्राम तजि तौ भाजियै, जौ मृत्यु न होय ; अरु जौ निदान मृत्यु ही है, तौ अपनौ जस मलीन करि, काहे मरियै ? बहुरि, जौ या अनित्य सरीर सेां जगत में नित्य जस पाइयै, तौ यातें कहा उत्तम है ? या में तुम तौ हमारे स्वामी ही है। राजा कही, यह तुम भली बिचारी, हम हू ऐसी ही करिहैं . सारस बोल्थौ, महाराज ! आप ऐसी बिचार जिन करौ ; कौंकि, स्वामी के देह छांड़े प्रजा अनाथ होय ; अरु सेवक कौ तौ यह धर्म ही है कि, जौलों बनै, तौलों स्वामी के राखिवे कौ यत्न करै ; स्वामी के उदै तें याकौ उदै, अरु अस्त तें अस्त . इतनी बात कहत कहत, जब कुक्कुट ने राजा हंस कौ आय गछौ, तब सारस ने वासेां छुड़ाय, पीठ पर चढ़ाय, नीर में जाय छोड़्यौ ; अरु आप आय, अनेकन कौ मारि, गढ़ मांहिं जूझ मर्यौ . पुनि आय, राजा चित्रवरन ने सब गढ़ की माया लई ; अरु बंदीजन के पायन की बेरी हथकरी काट दई . इतनी कथा सुनि, राजपुत्रनि विष्णुशर्मा तें कछौ, अहो गुरुदेव ! राजा हंस के सेवकनि में वह बड़ौ कोऊ हो, जिन राजा कौ बचाय, आप प्राण दियौ . विष्णुशर्मा बोल्थौ, महाराज-कुमार ! सुनौ, उन बड़ौ काज कियौ . देखौ, एक तौ संसार में जस पायौ ; दूजै स्वर्ग . कछौ है, “जो सेवक स्वामी के लियै रन में प्राण देइ, सो परम गति पावै ; औ जो साथ छोड़ि भाजै, वह नर्क में पड़ै, औ जगत मांहिं कलंकी होय .”

इति विग्रह नाम तृतीय कथा संग्रहः संपूर्णः .

अथ संधिः ।

विष्णुशर्मा बेख्यौ, महाराजकुमार। तुमनि विग्रह तौ सुन्यौ; अब हैं संधि कथा कहतु हैं कि, जब दोऊ राजा संग्राम करि, सेना कटाय रहे, तब गीध अरु चकवा ने आ भांति उनकौ मिलायौ, ताई रीति सब कथा कहतु हैं। राजपुत्रनि कही, अहो गुरुदेव! हम नीकै चित वै सुनतु हैं, आप आशा कीजै। पुनि, विष्णुशर्मा कहनि लाग्यौ कि, जद राजा हंस ने चकवा सें पूछ्यौ कि, तुम यह जानतु है, गढ़ में आग हमारे लोगनि लगाई, कै शत्रु के ? तद चकवा बेख्यौ, महाराज ! तिहारौ मेघवरन काग दीसतु नाहीं ; तातें जान्यौ जातु है कि, होय न होय, यह वाही कौ काम है। इतनी बात सुनि, राजा चिंता करि, कहनि लाग्यौ कि, मैं जान्यौ, यह मेरे ही अभाग तें काम बिगख्यौ ; या मांहिं कछु तिहारौ दोष नाहिं ; मेरे कपाल ही कौ दोष है। मंची कही, महाराज ! और हू ठौर ऐसें कछ्यौ है कि, “जब देव कोपतु है, तब मनुष पर आपदा आवतु है ; अरु कर्म के बस होय अनीति करै ; हितून कौ कछ्यौ न मानै।” जैसें एक कछुआ ने अपने हितू कौ कछ्यौ न मानि, काठ तें गिरि, दुख उठायौ, तैसें कह पावै। राजा बेख्यौ, यह कैसी कथा है ? तहां चकवा कहनि लाग्यौ ;

मगध देस में फुल्लोत्पल नाम सरोवर ; तहां बिकट संकट नाम है राजहंस रहै ; तिनको मित्र एक कंबुग्रीव कछुआ छ वहां रहै . एक दिन तहां धीवर आये, अब आपस में बैठि बतराये कि, आज रात्रि कै यहां बसि, माछरी कछुआ पकरिहैं . यह सुनि, कमठ ने हंसनि से कह्यो, मित्र ! तुम धीवर की बात सुनो ; अब हौं यहां न रहिहैं, और सरोवर में जैहैं . हंसनि कह्यो, अबही रह्यो, आगे उपाय करिहैं . कछुआ बोली, बंधु ! तुम जो कह्यो कि आगे उपाय करिहैं, सो आगे की बात नाहिं . कछुआ है, “आपदा बिन आये उपाय करै, तौ सुख पावै ; ओ न करै, तौ दुख उठावै ;” जैसें यद्विष्य माछरी ने दुख पायौ . हंसनि कह्यो, यह कैसी कथा है ? बहुरि कमठ कहतु है ;

पहिले या सरोवर पर एक बार धीवर आयौ हो ; तब यहां तीन माछरी रहति हीं ; एक अनागतविधाता, दूसरी उत्पन्नमति, तीसरी यद्विष्य . जब धीवर आयौ, तब अनागतविधाता ने कछुआ, अब यहां रहनैं उचित नाहीं . इतना कहि, वह और सरोवर में गई . दूसरी बोली, जद काज आय परिहै, तद उपाय करिहैं . कछुआ है, “जो उपजी बात का उपाय करै, सो चतुर .” जैसें एक बनियां की बेटी ने पति के देखत, जार कै चूबा है मिस कियौ . तीसरी ने पूछ्यो, यह कैसी कथा है ? पुनि उत्पन्नमति कहति है ;

बिक्रमपुर में समुद्रदत्त नाम बनियां ; ताकी स्त्री कै नाम रतनमंजरी ; सो अपने सेवक से रहै . कछुआ है,

“स्त्री के कौन बड़ौ, कौन छोटी? अपने काम से काम .”
 आगै, एक दिन वह अपने सेवक कौ मुख चुंमति ही,
 बाहो समें वाके स्वामी ने आय देख्यौ; तब उनि दैरि,
 पति सेां कही, साह जू! या सेवक बज्रमारे कौं घर मांहिं
 जिन राखौ, यह दैमाख्यौ चोर है, अबही याने घ्यौ चुराय
 खायौ; मैं याकौ मुंह खूंघ्यौ, सु घृत की गंध आवति है .
 यह बात सुनि, सेवक रूख्यौ, अरु कहनि लाग्यौ कि, जा
 घर को धनियानी मुख खूंघै, तहां रहनौं भलौ नाहीं .
 पुनि, समुद्रदत्त ने उन दोऊन कौं मनायौ . तातें हौं
 कहति हौं कि, आपत्य समय जाकी बुद्धि फुरै, सोई चतुर .
 बहुरि यद्गविष्य बोली, जो भावै सो होय, चिंता को करै?
 आगै, धीवर ने आय, जार वा सरोवर में नाख्यौ, अरु
 वे दोऊ बझीं; तव उत्पन्नमति मृतक होय रही . वाकौं
 मख्यौ जानि, धीवर ने जार तें बाहर काढ़ि राख्यौ . पुनि
 औसर पाय, वह पानी मांहिं जाय गिरी . यद्गविष्य कौं
 भावी कौ भरोसौ हो, सो धीमर के बस परी . तातें हौं
 कहतु हौं, जो अनागतविधाता की भांति उत्पात तें पहिलै
 भाजै, सो भलौ . बहुरि हंसनि कह्यो, तुम कैसें चलिहौ?
 उनि कही, मित्र! तुम दोऊ एक लकरी दोऊ घां तें
 पकरौ, औ हौं बीच तें गहौं, तब लै उड़ौ . पुनि हंस बोले,
 बंधु! तुम नीकी कही; पर हमारे जानि, जैसें बगुला के
 उपाय तें बालकपन लखायौ, तैसें तुम झूकरतु हौ . कमठ
 कही, यह कैसी कथा है? तहां हंस कहनि लाग्यौ;

उत्तर दिसा की गैल में, कावेरी नदी के तीर, गंधमादन पर्वत पै एक रुख ; ता पर एक बगुला रहै ; वाके नीचे बांबी, तामें कारौ नाग . जब वह बक अंडा देइ, तब सो सांप रुख पर चढ़ि खाय लेइ . एक दिन, वह चिंता करि रह्यौ हो कि, काहू बूढ़े बगुला ने यासों पूछ्यौ कि, रे ! तू ऐसौ दुचितौ क्यों है ? इन वासों सब भेद कछ्यौ . तदुनि कछ्यौ कि, अरे ! तू एक उपाय कर कि, बहुत सी माछरी ल्याव, औ न्यौर के बिल तें लै, सांप की बांबी लों पांति सी लगाव . जब वह माछरी खात खात आयहै, तब वा सर्प कों हू खायहै . यह बात सुनि, उनि वैसे ही करी ; औ न्यौर ने आय नाग कों खायै ; पर साथ ही पेड़ पै चढ़ि, वाके अंडा हू खाये . तातें हैं कहतु हैं कि, ऐसौ यत्न जिन करौ, जामें अपनौ बिनास सोय . जौ तुम लकरी पकरि लटक चलयौ, औ कोऊ कछु कहै, वा बेर तुम रिसायकै उतर देउ, औ मुंह तें लकरी छूटै, औ नीचे गिरौ, तौ हम कहा करैं सो कहौ ? उनि कही हैं कहा बावरौ हैं, जु बोलिहैं ! इननि कही, भाई ! तुम जानौ . इतनौ कहि, वे दोऊ हंस वाकौं वाही भांति लै उड़े कछुआ कों लौठिया में लटकत देखि, अहेरी बोले, देखौ रे ! या कछुआ कों द्वै पक्षी लियै जातु हैं . एक बोल्यौ, जौ यह गिर परै, तौ भूंजि खाजं . दूजे ने कही, मैं घर लै जाजं . यह सुनि, कछुआ सो रह्यौ न गयौ ; तब क्रोध करि बोल्यौ, तुम पथरा खाउ . इतनी

कहत, लकरी तें छूटि, तरै गिख्यौ; अहेरियन मारि भस्मन कियौ . तातें हैं कहतु हैं, जो मंची कौ कछौ न मानै, सो दुख पावै . आगै, एक बगुला आयौ; तब चकवा बोख्यौ, महाराज ! यह वही बगुला है, जाहि पहिलै पठायौ हो . यह कहतु है, गढ़ में आग मेघवरन काग ने खगाई; अरु वह गोध कौ पठायौ आयौ हो . बहुरि राजा हंस कही, शत्रु के उपकार, औ प्रीति की प्रतीति, कबहू न करियै; जो करियै, तौ जैसें रुख कौ सोवन-हारौ गिरकौ पछताय, तैसें पछताइयै . बहुरि बगुला बोख्यौ, महाराज ! ह्यां तें जब मेघवरन गयौ, तब चिच-वरन ने कछौ, अब मेघवरन कौ कर्पूरदीप कौ राज दीजै, अरु याकौ दुख दूर कीजै . कछौ है, “जो सेवक कष्ट पाय, स्वामी कौ काज करि आवै, ताकौ तबही भलौ कीजै .” मंत्री कही, महाराज ! यह उचित नाहिं; याहि और कछु देख, अरु मेरी बात सुनि खेउ . कछौ है, “जाकौ जितनौ मान, ताकौ तितनौ दान .” नीच कौ उपकार करना, औ बारू मांहिं घी ढारनौ, समान है; पुनि जो नीच कौ बढाइयै, तौ मुनेश्वर की भांति होय . राजा कही, यह कैसी कथा है ? तब गोध कहनि लाग्यौ;

गौतम अधि के तपोवन मांहिं महातपी नाम एक मुनि रहै; ताके आश्रम में काम के मुख तें छूटि, मूसा कौ सिसु गिख्यौ . याहि देखि, दया करि, मुनि ने अपने निकट राखि, कन खवाय, बढौ कियौ . तब एक बिल्ला

वाके खेवे की घात में आबौ करै; यह देखि, मुनि ने मंच करि, बाकौं बिलाव कियौ . फेरि एक खान आवन लाग्यौ; बहुरि वाने बाहि खान कियौ . पुनि एक सिंह आबौ करै; तब तिन ताहि सिंह बनायौ; पर निज मन मांहिं मूसा ही करि जानै . यह चरिच देखि, गांव के लोग कहनि लागे, देखो रे! यह मूसा तें सिंह भयौ, सो या मुनि कौ प्रसाद है . या बात कौं मुनि, वा सिंह ने निज मन में बिचाख्यौ कि, जौखौं यह मुनि रहैगा, तौखौं सब लोग मोहि ऐसे ही कहत रहैगे; तातें या मुनि कौं मार खाऊं, तौ यह कलंक छूटै . ऐसे वह जी में ठानि . मुनि के खानि कौं चलयौ . तद मुनि ने बाकी अंतरगति जानि, पुनि बाहि मूसा कौ मूसा बनायौ . तातें हौं कहतु हौं कि, महाराज! नीच कौं ऊंच पद कबहू न दीजै . यह बात सहज नाहिं, सुनौं! जैसे एक बगुला ने माछरी खात खात, नये मांस खान की इच्छा करि, अपनौ गरौ कटायौ, कहूं तैसें न होय! राजा कही, यह कैसी कथा है? पुनि गोध कहतु है;

माखव दैस में पद्मगर्भ नाम सरवर; तहां एक बूढ़ी बगुला असमर्थ आप कौं उदेगी सौ जनाय रह्यौ करै . बाहि दूर तें देखि, एक कैकड़ा ने पूछ्यौ कि, भाई! तू दुःखी क्यों है? अरु अहार छोड़ि, उदास छै काहे बैठि रह्यौ है? उन कही, बंधु! मेरौ जीवन तौ माछरी तें; सो धीमर कहतु है कि, काल सकारे आय, या सरोवर की सब

माछरी मारिहीं, या दुख तें मैं आज ही तें अहार तज्यौ। यह सुनि, वा तड़ाग की माछरियन आपस में कछौ कि, या समें बगुला हमारौ हितू सौ जनातु है, अरु अब याही सेां अपनौ बचाव हू दीसतु है। कछौ है, “जौ उपकार करै, तौ शत्रु हू तें संधि करियै; क्योंकि, उपकार है, सो मिचाई कौ कारन है।” आगै, माछरियन बगुला सेां कछौ कि, तुम काहू भांति हमें राखि लेउ। उन कही, तिहारे राखिवे कौ एक उपाय है कि, जौ मैं तुन्हें चार सरोबर में लै जाऊं, तौ बचौ। विननि कही, सोई करौ। पुनि वह बगुला एक माछरी मुख में लै जाय, औ वाहि खाय आवै, बहुरि लै जाय। ऐसें ही सब माछरी खाईं। तब एक कैकड़ा ने हू बगुला सेां कछौ, मोहू कौं लै चल। यह नयौ मास खान कौ मनोरथ करि, वाहू कौं लै चलयौ, अरु जहां बैठि माछरी खाईं ही, तहां लै जाय धख्यौ। माछरीन के कांटे ह्वां डरे देखि, कैकड़ा ने बिचाख्यौ कि, मृत्यु तौ दीसति है; पर ऐसौ कछौ है, “जौलौं डरियै, तौलौं भय; अरु जब भय आयौ, तब मरियै, कै मारियै।” क्योंकि, जूझ मरियै, तौ मन में पछतावौ न रहै। ऐसें बिचारि, विन बल करि, बगुला कौ गरौ काटि डार्यौ; बक मख्यौ। तातें ह्वां कहतु ह्वां कि, अपूरव बात करनौं कबहू न बिचारियै; खोटौ खुटाईं नहीं तजतु। पुनि चिच-बरन कही, अहे! मेरे मन में ऐसौ आयौ है कि, मेघबरन कौं ह्वां कौ राज दीजै, तौ घर बैठे आछे पदारथ लीजै।

गीध कही, महाराज ! अनभई बात कौं बिचारि, जो सुख मानै, सो दुख पावै ; जैसे कुम्हार के भांडे फोरि, ब्राह्मन ने दुख पायौ . राजा कही, यह कैसी कथा है ? तहां गीध कहतु है ;

कोटर नगर में एक देवशर्मा नाम ब्राह्मन रहै . तिन मेष की संक्राति में काहू यजमान तें एक करुआ सातू कौ भख्यौ पायौ, सो लैकरि, राचि कौं, काहू कुम्हार के घर रह्यौ, अरु करुआ वाके वासननि पर धख्यौ . तब निज मन मांहिं बिचारनि लाग्यौ कि, या सातू कौं बेचि सात दमरी पाजंगै, ताकौ कछु और ल्याजंगै ; वाहि बेचि और, और बेचि और . या भांति जब धन बढ़ैगै, तब नारियर, सुप्यारी लै, बडौ ब्यौपार करि, धन बढ़ाय, चार विवाह करिहैं . कह्यौ है, “ब्राह्मन चार विवाह करै, औ चारों बरन व्याहै ; छत्ती तीन, वैश्य द्वै, शूद्र एक व्याहै .” पुनि जब वे स्त्री आपस में लरिहैं, तब हैं जाकौ औगुन देखि हैं, ताके मारिबे कौं ऐसे लौठिया घालूंगै . यह कहि, ज्यों लौठिया घाली, त्यों सतुआ के करुआ समेत उनि कुम्हार के भांडे फोरे . बहुरि कहनि लाग्यौ कि, हाय ! मेरौ कियौ करायौ घर गयौ ! आगै, भांडे फूटे देखि, कुम्हार छ ने वाके सब कपरा खोस, वाहि तिरस्कार करि, घर तें निकार दियौ .

तातें हैं कहतु हैं कि, आगै कौ मनोरथ करै, सो दुख पावै . पुनि हंसकरि राजा ने गीध सेां पूछी कि, अब

कहा करनीं उचित है, सो कहौ . गीध बोल्या, महाराज ! जो मंच राजा चूकै, तौ मंची मूरख कहावै ; जैसें सांकरी गली में हाथी न चलै, तब महाबत क्रुद्ध कहावै . तातें हीं कहतु हीं कि, गढ़ तौ तिहारे पुन्ध्र प्रताप तें, और हमारे उपाय सो, हाथ आयौ ; अब तिहारी जीत हू जगत ने जानी ; पर अब अपने देस कौं चलौ तौ भलौ ; नातौ बरषाकाल मूढ़ पर आयौ ; औ बैरी बराबर कौ है ; यातें जो अब अटकहौ, तौ पराई भूमि में तें निकसना कठिन है . तातें मेरे जानि राजा हिरन्यगर्भ तें सुख सों मिलि, हलभल करि, निज देस कौं पधारियै . कह्यौ है, “जो मंची धर्म राखै, सो राजा कौं सुहाती अनसुहाती कहै ; औ राजा हू बिचारे अनबिचारे प्रमान करै ; ऐसी मंची राजा कौ हितकारी जानियै .” पुनि कह्यौ है, “जो अपने समान होय, तासों प्रीति करियै ;” क्यौंकि, लरना खांडे की धार है, यह दोऊ ओर तकतु है . पुनि युद्ध में जूझिये के समें, मित्र, धन, जन, कीरत, औ अपनपौ, शत्रु के सनमुख मृत्यु के हाथ देना होतु है . पुनि राजा कहौ, जो यह बात ऐसें ही ही, तो तुम प्रथम ही क्यों न कहौ, जो घर ही बैठ रहते ? मंची बोल्यौ, महाराज ! हमारौ बचन तुम आदि अंत लौं न मान्यौ मेरौ बिचार बिग्रह करनि कौ न हो ; क्यौंकि, राजा हिरन्यगर्भ के गुन प्रीति करिये जाग हैं, वासों बैर न बूझियै . कह्यौ है, “जो सत्यवंत, धर्मात्मा, प्रतिष्ठित, औ अनेक संग्राम जीत्यौ होय, को

जाके भाई बंधु अधिक हैं, ताते युद्ध न करियै;” क्योंकि सत्यवंत अपनौ बोल निबाहै; बलवंत पै कछु बल न चलै; धर्मात्मा जीत्यौ न जाय; आपत्य में वाकौ धर्म होय सहाय; प्रतिष्ठित के नाम ही तें लोग पराय; जिन अनेक युद्ध जीते हैं, ताकी धाक ही सेां सब डर जाय; औ जाके भाई बंधु अधिक हैं, वह कबहू न हारै. यातें हैं कहतु हैं कि, महाराज! अब संधि करियै; क्योंकि, ये सब गुन राजा हिरन्यगर्भ में हैं. इतनी बात सुनि, राजा हंस के दूत ने अपने राजा तें जौं की त्यों जाय कही. तब चकवा ने दूत सेां कछौ कि, भाई! यह तौ तुम अति मंगल की बात सुनाई; पुनि जाय समाचार ल्यावौ. दूत गयौ; तब राजा हंस ने चकवा सेां पूछी कि, तुम काहे कौ मंगल मान्यौ सो कहौ? मंची कही कि, महाराज! कछौ है, “इतनेन तें सन्धि न करियै, बालक, बृद्ध, रोगी, लोभी, कायर, बैरागी देवगुरुनिंदक;” क्योंकि, बालक कौ तेज अति अल्प, तातें दंड औ प्रसाद न कर सकै; यातें वाकौ साथ कोऊ न देइ. बूढ़ौ औ रोगी उछाह करि हीन रहै; ताहि सहज ही मारियै. लोभी अंत संधि करै; यह जानि, वाके संग कोऊ न लरै. कायर आप ही रन तें भाजै. बैरागी सब तें उदास रहै, काहू बात में मन न देइ, सो आपही हारै. देवगुरुनिंदक, अधर्म तें आप ही आप नष्ट होय; तातें ऐसे रिपु कौं युद्ध करि मारियै. पुनि कछौ है, “ओ राजा विद्यावान होय, शास्त्रविद्या जानै,

देस काल पहिचानै, अपनै परायौ मानै, गुन औगुन मन आनै, प्रभुता सहित रहै, जहां जैसौ उचित, तहां तैसौ कहै, नीति करि सांच भाषै, न्याय में काहू की कान न करै, मंच सदा गुप्त राखै, सो राजा समुद्रांत पृथ्वी कौ राज भोगै.” इतनै कहि, बहुरि चकवा बोळ्यौ, महाराज ! जौ हू गीध मंची ने संधि करवे की कही, पर राजा चिचवरन अति अभिमानी है, वह वाकौ कछौ न मानि-है . कछौ है कि, “भय बिन प्रीति न होय ; अरु संधि कियै दोऊ ओर कुशल है.” यासों मेरे मन में एक बात आई है, सो होय तौ भलौ कि, सिंगलदीप कौ राजा सारस मेरौ परम मित्र है, महाबल वाकौ नाम ; ताकौं हों लिखौं कि, वह चिचवरन के जंबूदीप पै जाय मडराय ; अरु ह्यां तुम अपनी सैना कौं जोरि, याकी सैना कौं पीर उपजाओ ; दिन रात उठत बैठत निकरत पैठत दबाओ, तौ जौ पाओ . कछौ है, “दोऊ ताते होय तौ, मिलै खोह की भांति.” राजा कही, नीकौ जानौ सो करौ . तद चकवा ने विचित्र नाम बगुला कौं पत्र दै सिंगलदीप पठायौ ; अरु वहां पाती पावत प्रमान, सारस चढ़ि धायौ . आगै, गीध मंची ने राजा चिचवरन सों कछौ कि, महाराज ! यह मेघवरन काग गढ़ में अनेक दिन रह्यौ, याहि पूछौ जु, राजा हंस प्रीति करवे जोग है कै नाहिं ? तब राजा ने काग सों कछौ कि, अहो ! राजा हंस, ओ वाकौ मंची कैसौ है ? काग बोळ्यौ, महाराज ! राजा हंस

साक्षात् युधिष्ठिर है; अरु मंची चक्रवाक की समान चतुर दूजो पृथ्वी में नाहिं . राजा कही, तू वाहि कैसें डहकायौ, अरु ह्वां कौन प्रकार रहन पायौ ? काग बोलौ कि, महाराज ! राजा जाकी प्रतीत करै, ताहि डहकावनौ कितेक बात है ? जैसें जाकी गोद में सेवै, औ सोई मारै, तौ सेवनवारे कौ कहा बसाय ? चक्रवा ने मोहि देखत ही पहिचान्यौ हो ; पर राजा हंस ने मंची कौ कछौ न मान्यौ ; ताही तें मैं वाहि ठग्यौ, अरु ह्वां रहनि पायौ . महाराज ! राजा हंस बड़ौ साहसी औ सत्यवादी है . कछौ है, “जो आप सत्यवक्ता होय, सो और कौं हूँ आप सौ जानै ;” जैसे एक सत्यवक्ता ब्राह्मन ने और की बात सत्य मानि, बोकरा खोयौ . राजा कही, यह कैसी कथा है ? तब काग कहनि लाग्यौ ;

गौतमारन्य में एक ब्राह्मन यज्ञ के निमित्त बोकरा माथे लियै आवतु हो ; वाहि तीन ठगनि देखि, बोकरा लैन कौ आपस में मतौ कियौ ; अरु वे तीनों साध कौ भेष बनाय, तीन ठौर जा बैठे . जब वह ब्राह्मन पहिले साध के निकट गयौ, तब उन कछौ, अरे ब्राह्मन ! यह कूकर माथे धरि काहे लियै जातु है ? इन कही, कूकर नाहिं, यज्ञ कौ बोकरा है . यह सुनि, वह साध चुप रह्यौ . आगै, दूसरे के पास गयौ ; पुनि उन हूँ कछौ, रे देवता ! मूंड पै खान क्यों चढ़ायौ ? इतनौ सुनि, इन बुरौ मानि, वाहि सीस तें उतारि देख्यौ, अरु संदेह करतु चलयौ कि,

जा देखतु है, सो याहि कूकर कहतु है ; पर मेरी दृष्टि में तौ बोक जनातु है . ऐसे सोचतु सोचतु, वह तीजे के निकट जाय पहुँच्यौ ; तब उन हू कछ्यौ, अहे विप्र ! कूकरा सिर तें डारि दै, तै यह कहा अनर्थ कियौ, जु स्वाम मूँड़ पै धरि लियौ ? यह बात बाके मुख तें सुनत प्रमान, बाहि कूकर जानि, विप्र ने माथे तें पटक, अपनौ पंथ लियौ ; अरु विननि बोक लै अपनौ मनोरथ पूरौ कियौ . तातें हैं कहतु हैं कि, दुष्ट के बचन तें साध की हू बुद्धि चलै . बहुरि, जैसे चिचवरन जंट कौ सिंह ने मारि खायौ ; राजा पूछी, यह कैसी कथा है ? पुनि वायस कहतु है ;

एक वन में मदोत्कट नाम सिंह ; ताके तीन सेवक, एक तेंदुआ ; दूजो काग ; तीसरौ स्यार . विन तीननि एक दिन वा वन में जंट देख्यौ ; तब उननि बाहि पूछ्यौ, तू कहां तें आयौ ? उन कही, मैं साथ भूलि आयौ हों . यह सुनि, विन तीननि बाहि लै जाय, सिंह सेां मिलायौ . सिंह ने हू बाहि अभयदान दै राख्यौ, अरु चिचवरन नाम दियौ . पुनि वह सबन के साथ हिलमिल रहनि लाग्यौ . कितेक दिन पाछै, बरषाकाल में, कई एक दिन की झरी लागी ; औ वा समय अहार न जुख्यौ ; तब विन तीननि आपस मांहिं कछ्यौ कि, भाई ! अब कोऊ ऐसी उपाय करियै जु, सिंह जंटहि मारै, तौ अहार सबै कौ मिलै . तेंदुआ बोळ्यौ, मित्र ! याहि तौ सिंह ने अभयदान दियौ है, सो कैसे मारिहै ? काक कही, अहे !

समय पाय राजा हू पाप करतु है ; जैसे भूखी नागिनि अपने अंडा खाय, भूखी कहा न करै ? कछौ है, “मतवारौ, असाबधान, रोगी, बृद्ध, अधीर, कामी, क्रोधी, लोभी, भूखी, डखी आदि, ये सब अधर्म कौं न जानैं, न मानैं .” ऐसे बतराय, वे सिंह के निकट गये, अरु हाथ जोरि, सनमुख ठाढ़े रहे . तब उनि पूछी, कछु खैवे कौं पायौ ? इननि कही, महाराज ! बहुत जतन कियौ, पर कछु हाथ न आयौ . सिंह कही, अब कैसें बचिहैं ? बहुरि काग कह्यो, महाराज ! आप हाथ आयौ अहार छोरतु है, तातें और हू ठौर नाहीं मिलत . सिंह बोली, सो कहा ? इन अक, कान में कही, या चिचवरन कौं मारि खाओ . उनि कही, जाहि मैं अभयदान दियौ, ताहि कैसें मारौं ? कछौ है, “भूमि, सुवर्न, अन्न आदि दान बड़े दान हैं ; पर शरणागत कौ राखिवौ इन हू तें अधिक फल दैतु है .” बहुरि काग कही, महाराज ! तुम जिन मारौ, हम ऐसे उपाय करिहैं जु, वह आप ही जीवदान करि, निज सिर तुमकौं दैहै . यह सुनि, सिंह चुप छै रह्यौ . तब काग ने बाकौ मनोरथ जानि, कपट करि, चिचवरन से कछौ कि, तोहि तौ राजा ने अभयदान दियौ है ; परंतु या समय तुम दिन तें अहार को मनुहार करौ, तौ राजा तुम तें अति प्रसन्न होयगौ . ऐसे वाहि फुसलाय, सिंह पास लै जाय, उन तीननि हाथ जोरि कछौ, महाराज ! यह चिचवरन कहतु है कि, अहार तौ कछु नाहीं मिलतु ; औ तुम अनेक दिन के भूखे है,

तिहारौ दुख मो पै नाहीं देख्यो जातु; तातें तुम मोहि मार खाओ. कछौ है, “राजा तें प्रजा की रक्षा है; प्रजा कौ मूल प्रजापति है; अरु मूल रहै तौ डारि पात फूल फल आप ही तें हैं।” पुनि सिंह कही, अरे! जल मरियै, सो भलौ; पर ऐसी कर्म न करियै. तब स्यार बोल्यौ, महाराज! ऐसैं ही कछौ है. तब तौ चिचवरन छ ने सिंह की दढ़ता जानि, मनुहार करि कछौ, महाराज! आप मेरौ सरीर खाओ. इतनी बात वाके मुख तें सुनत ही, सिंह ने वाहि दौरि माख्यौ, अरु सबनि मिल भक्षण कियौ. महाराज! तातें हैं कहतु हैं कि, दुष्ट के उपाय ओ उपदेस सों साध छ की मनसा डिंगै. बहुरि राजा चिचवरन बोल्यौ, अहो मेघवरन! तुम इतेक दिन शत्रुनि मांहि कैसें रहे, अरु कौन भांति उन तें तुम तें प्रीति निभी? वायस बोल्यौ, महाराज! कछौ है कि, “स्वामी के काज शत्रु छ कौं माथे चढ़ाड्यै, ओ गिराड्यै, ऐसैं, जैसें नदी पाय धोय धोय, रूख कौं गिरावै.” पुनि जो सुबुद्धि होय, सो ऊ अपने प्रयोजन के निमित्त बैरी छ कौं माथे चढ़ाय, निज काज साधै; जैसें बूढ़े सर्प ने सिर चढ़ाय मेंडुक खाये. राजा कही, यह कैसी कथा है? तब काग कहतु है;

काङ्ग बन में एक अति बूढ़ौ मंदविष नाम नाग रहै; सो अहार कौं फिर न सकै; तातें सरोवर के तीर पख्यौ रहै. काङ्ग दिन, एक दादुर ने वाहि देखि, दूर तें कछौ, अहो! तुम जो अहार नाहीं खोजतु, परे ई रहतु हो,

सो कहा है ? उन कही, हैं कहां जाजं, औ मो अभागे
कौं को बूझतु है ? इतनी सुनि, विन याहि आचार्य जानि,
कह्यौकि, तुम अपनी अवस्था कहौ ; तब सर्प कहनि लाग्यौ ;

या ब्रह्मपुरा में कौंडिन्य नाम ब्राह्मन ; वाकौ बीस बरष
कौ पुच पछ्यौ गुन्यौ में अपने अभाग्य तें डस्यौ ; तब
कौंडिन्य सुसील नाम पुच कौं मस्यौ देखि, सोग सों घूमि,
भूमि पै गिर्यौ ; पुनि वाके भाई बंधु, औ मांव के लोग
सब आय जुरे . कह्यौ है, “सुख दुख, समें असमें, शुभ
अशुभ में, जे इष्ट मित्र बंधु होय, ते सुधि लेंइ .” आगे,
एक कपिलदेव नाम ब्राह्मन ने आय, याहि समझाय
बुझायकै कह्यौ, अरे कौंडिन्य ! तू अति मूर्ख है जु, अब
खेद करतु है ; क्यौंकि, संसार की तौ यही रीति है कि,
इत उपज्यौ, उत मस्यौ ; तातें याकौ शोक कहा ? देखौ !
सेना सहित युधिष्ठिर से पुरुष न रहे, तौ और की कहा
चली ? बहुरि, देहधारी कौं मृत्यु ऐसें लगी रहति है कि,
जैसें संपत में बिपत, प्राप्ति में हानि, संयोग में बियोग,
ज्ञान में ग्लानि . पुनि यह देह छिन छिन यैं घटति है,
ज्यों जल में काचौ घट घटै . कह्यौ है, “सरीर, जावन,
रूप, द्रव्य, ठकुराई, मिचरई, औ एक ठौर कौ बास, ये
सब अनित्य हैं ;” यातें जो ज्ञानी चतुर पंडित होय, सो
इनके गये कौ सोच न करै . अरु सुनौ ! जैसें नदी के
प्रवाह में जहां तहां के काठ आय मिलतु हैं, तैसें या
संसार के जीव हैं ; इन तें जेतौ सनेह कीजै, तेतौ दुख

होय; क्योंकि, जग में सदा काहूँ कौ साथ नाहीं निबहतु; अरु जो अपनी ही देह साथ न देय, तौ और की कहा चली? कह्यौ है, “माया किये यों दुख बढ़ै, जों कुपथ्य कियै रोग; पुनि, काल ऐसें चली जातु है, जैसें नदी कौ जल.” यासों या संसार की माया छांड़ि दीजै, अरु साध की संगति कीजै; संगति साध की सब सुख सों अधिक सुख देतु है .

वीरथ व्रत जग देवता, काल मंत्र कुम खेत;

काल पाय फल देतु हैं, साध सदा फल देत . (दीक्षा)

अरु मित्र, सुनौ! जेमें बरषाकाल में चाम के बंधन ढीले हो जातु हैं, तैसें बृद्ध अवस्था में या सरीर के . इतनी बात कहि, पुनि कौंडिन्य सों कपिलदेव ने कह्यौ, भाई! अब दुख जिन करौ, अपने प्राण राखिवे कौ उपाय करौ. यह सुनि, कौंडिन्य उठि बाल्यौ, बंधु! अब या गृहरूप कूप में न रहिहैं, बन में जैहैं . पुनि कपिलदेव कहौ, भाई! अनुरागी कौ बन हू में दौष, औ उदासी कौ घर ही में मोक्ष . कह्यौ है, “जो जन फल की वासना छांड़ि, विष्णुभजन करै, ताहि बन औ घर समान है; अरु कौन हू आश्रम में रहि, दुख सहि, धर्म, कर्म, दान, तप, व्रत, यज्ञ, करै, औ सब जीव पै दया राखै, ताही कौ तपसी जानियै.” पुनि, जो प्राण राखिवे कौ अहार, संतान कौ मैथुन करै, औ सत्यवचन भाषै, सो दुखरूपी समुद्र कौ तरै . कह्यौ है, “आत्मारूपी नदी के संगम पै, पुन्य तीर्थ,

सत्थि जल, शील करार, दया तरंग; तामें जो खान करि,
 अंतःकरन शुद्ध करै, सो जनम मरन व्याधि तें छूटै.”
 यह संसार सार नाहीं; मनुष दुख कौं सुख करि मानत
 हैं; जैसें बोझ कौ बाहनिहारौ मोट पाय सुख मानै;
 तैसें मनुष की गति है. बहुरि कौंडिन्य बोल्थौ, भार्द! तुम
 सांच कहतु है, यह बात ऐसें ही है. इतनौ कहि, विन
 खांबी सांस लै, मोहि तौ यह आप दियौ कि, तू मेंडुकन
 कौ बाहन होउ; अरु वाने आप गृहस्थाश्रम छांड़ि, सन्यास
 धर्म लियौ. तातें अब मैं वाकौ दियौ आप भुगतवे कौं
 आयौ हैं. यह बात सुनि, दादुर ने अपने राजा सेां
 जाय कही; तब जलकुंद नाम मेंडुक मेंडुकन कौ राजा
 बाहर आयौ. पुनि नाग ने वाहि प्रनाम करि मूंड पै
 चढ़ायौ, अरु ताल के चहुं थां लै फिख्यौ. दूसरे दिन, जब
 वह आय चढ़्यौ, तब वह चल न सक्यौ. पुनि दादुर बोल्थौ,
 उतावलौ चल. सांप कही, स्वामी! मो पै मारे भूख के
 चल्थौ नाहीं जातु. उन कह्यौ, तू मेरी आज्ञा तें सेना
 के मेंडुक खायौ कर. बहुरि सांप ने हाथ जोरि कह्यौ,
 महाराज! तुम मेरी बड़ी सहायता करी. यौं कहि, पुनि
 खानि लाग्यौ. कितेक दिन में, सब मेंडुकन कौं खाय, पुनि
 जलकुंद कौं छ खायै. तातें हैं कहतु हैं कि, जो चतुर
 होय, सो अपनी कार्य साधवे के लयै शबु छ कौं माथे
 चढ़ावतु है. महाराज! ऐसें हो मैं छ राजा हिरन्यगर्भ
 सेां प्रतीत बढ़ाय, गढ़ में रह्यौ. आगै, राजा चिचवरन

ने गीधों में कही कि, बाबा जू! अब राजा हंस हमारा होय रहै, तौ वाकों बसाइयै; नातौ अपने लोग .

यह बात राजा चित्रवरन मंत्री तें कहनि न पायौ हो कि, एक दूत ने आय कछौ, महाराज! सिंगलदीप कौ राजा सारस तिहारे देस पै चढ़ि आयौ है; जो नगर बचायौ चाहौ, तौ बेग सुध लेउ; नातौ रहनौ कठिन है . यह सुनि, राजा मौन गहि रह्यौ, अरु गीध मंत्री ने मन में कछौ कि, होय न होय, यह चकवा कौ काम है . पुनि राजा मयूर क्रोध करि बोल्यौ कि, यह काम रहै; चलौ, प्रथम वाही कौं खेद काढ़ै . गीध कही, महाराज! शरद-काल के मेघ की भांति दृष्टा न गाजियै, बल करि दिखाइयै . नीति तौ यौं है कि, एक ही बेरि दिस दिस के लोगनि सों बैर न करियै . कछौ है, “अनेक चैंटी छ मिलैं, तौ गज कौं मारैं .” तातें महाराज! मेरे जान तौ राजा हंस तें बिन प्रीति कियै छां तें निभनौ छ कठिन होयगौ; क्योंकि, चलत ही शत्रु पीछौ करिहै; यातें विचार करि कार्य करौ; बिन विचार्यौ काम कियै पाछै पछितावौ होतु है; जैसे बिना विचारे न्यौर मारि, ब्राह्मनी पछताई . राजा कही, यह कैसी कथा है ? तब गीध कहतु है ;

उज्जैन नगरी में एक माधो नाम ब्राह्मन; ताकी स्त्री ने पुत्र जायौ . सु एक दिन वह ब्राह्मनी पुत्र की रखवारी ब्राह्मन कौं राखि, आप नदी न्हेवे कौं गई; अरु ताही समय पंडित कौं राजा कौ बुलावौ आयौ; तब वाने

बिचार्यो कि, जो हां न जाऊँगा, तो राजा जो दान देदगा, सो और कोऊ लै जायगी. कछौ है, “लैन दैन के काज में उतावल न करियै, तो वह औसर बीते हाथ न आवै;” औ जो जाऊं, तो बालक कौन कौं दै जाऊं? यह बिचारि, वह ब्राह्मन, एक बहुत दिन कौ पोष्यौ न्यौर हो, ताहि वा छोहरा के निकट रखवारी राखि, आप राजा के वहां गयौ. आगै, मौड़ा के निकट एक सर्प आयौ, ताहि न्यौर ने मारि खायौ. जब ब्राह्मनी आई, तब न्यौर दैरि वाके पायन पै गिख्यौ. उन याकौ मुंह लोह भख्यौ देखि, निज मन में जान्यौ कि, इन चांडाल ने मेरौ पूत मारि खायौ. यह समझ, ब्राह्मनी ने न्यौर कौं मारि डाय्यौ. पुनि आगू जाय देखै, तो छोहरा खेलतु है, अरु वाके निकट सांप मख्यौ पख्यौ है. तब वह पछतायकै बोली कि, हाय! मैं पापिन यह कहा कर्म कियौ जु, बिन देखे भाखे बापरे न्यौर कौ जीवलियौ? तातैं हां कहतु हां कि, महाराज! बिन बिचारे कबहू कछु काज नकीजै; अरु काम, क्रोध, लोभ, मोह, तज दीजै; क्यौंकि, इनही दोषन तैं राजा पृथु, जन्मेजय, रावन, औ कुंभकरन, मारे गये. अरु देखौ! शत्रुभाव छांड़ि, परशुराम औ अंबरीष ने जितेन्द्री होय, अनेक दिन राज कियौ. तातैं हां कहतु हां कि, महाराज! जो मेरौ कछौ मानै, तो वा राजा तैं प्रीति करि चलौ. कछौ है, “प्रथम तो पराई भूमि मांड़ि जाय डेरा करनौ कठिन; अरु किये पाछै

उठावनौ अति कठिन है :” यासें कार्य साधिवे कौं चार उपाय कहे हैं ; साम, दाम, दंड, भेद ; पर इनमें साम उपाय से बग काम सिद्ध होतु है . राजा कही, प्रीति उतावली कैसे होय ? गीध बोली, बग ही होय . कछौ है, “साध देखत ही मिलै ; औ मूरख कछु न समझै ; जौ ब्रह्मा हू वाहि चितावै, तौ छन जानै, न मानै ;” अरु महाराज ! राजा हंस तौ बडौ साधु है, औ बाकौ मंत्री सर्वज्ञ नाम चकवा अति चतुर है ; मैं काग के कहे तें उनकी करनी औ करतूत जानी . कछौ है, “जाहि न देख्यो होय, ताके गुन औ कर्म सुनि सुनिकै वाहि पिछानियै .” राजा कही, अनेक बात करिवे तें कहा प्रयोजन ? अब जो उचित होय, सो करौ . या बात के कहत ही, गीध राजा तें आज्ञा लै, गढ़ में गयौ ; अरु अपने आवन कौ समाचार चकवा से कहि पठायौ . वाने सुनत ही, अपने राजा कौं जाय सुनायौ ; तब राजा हंस ने चकवा से कछौ कि, अब जौ गीध के पाछै और कटक आवै, तौ कहा करियै ? चकवा बोली, महाराज ! यह संका करवे की ठाम नाहिं ; क्यौंकि, यह गीध बडौ पुन्यात्मा है, यातें कछु चिंता नाहिं . कछौ है, “बिन भय की ठौर संदेह करनौ कुबुद्धी कौ काम है .” इतनी कहि, चकवा ने जाय, गीध कौं ल्याय, राजा हंस से गढ़ के द्वार आगै मिलायौ . तब राजा हंस ने गीध कौं आदर दै बैठायौ . पुनि गीध बोली, महाराज ! यह गढ़ आपकौ है, जाहि दियौ चाहै

ताहि देउ. हंस कही, यह बात ऐसे ही है. बहुरि चकवा बोल्हौ, सुनौ! हमारौ तिहारौ एक ही है; पर अब कछु अधिक कहिवे कौ प्रयोजन नाहिं. गीध बोल्हौ, महाराज! नीतिशास्त्र में कछौ है कि, “सोभी कौं धन दै भलौ मनाइयै; उग्र होय, ताकी कर जोर स्तुति गाइयै; मूरख कौ कछौ राखियै; पंडित तें सत्य भाषियै; देवता की निष्कपट पूजा कोजै; मित्र बंधु कौं अति आदर दीजै; सेवक औ स्त्री कौं दान मान तें बस करियै; तौ या कठिन संसार में सुख सों दिन भरियै.” तातें हैं कहतु हैं कि, जो उचित होय सो अब करियै. चकवा बोल्हौ, जो संधि की रीति है सो कहौ, अधिक बात कहिवे तें कहा काम? पुनि राजा हंस ने कछौ कि, संधि के कितेक प्रकार हैं, सो कहौ.

गीध बोल्हौ, धर्मावतार! हैं कहतु हैं, आप चित दै सुनियै. कछौ है कि, “जब बलवान पै अति बलवंत चढ़ि आवै, अरु वा पर याकौ कछु बल न चलै, तब संधि उपाय करै.” संधि के नाम; भूपाल, उपहार, संतान, संगति, उपन्यास, प्रतिकार, संयोग, पुरुषार्थ, अदृष्ट, जीवन, आत्मा, उपग्रह, परिक्रय, उच्छिन्न, परिभूषण. अरु ये संधि-गति हैं; समानता तें द्वै राजा मिलैं, सो भूपालसंधि कहावै; दान दै प्रीति करै, ताहि उपहारसंधि कहतु हैं; दासी दै मिलै, ताहि संतानसंधि कहियै; पांच सात मिल, बीच में परि, प्रीति करावैं, ताहि संगतिसंधि कहि

धन कैं माटी समान जानैं ; पुनि, सब जीवन कै जीव
 अपना सौ गनैं, तेई या जगत में पंडित औ धर्मात्मा हैं .”
 बहुरि गीध कही, तुम यह कहा कहतु है ; सुनौ ! मेरे
 जान, जिन संसार में आय, या छिनभंग देह कौ धर्म
 छांड्यौ, तिन सर्वस गंवायौ . कहतु हैं कि, “जैसें जल मांझि
 पवन चलै, चंद्र कौ प्रतिबिंब चंचल रहतु है ; तैसें ही
 प्राणी कौ मन सदा अस्थिर रहतु है ;” तातें या मनुष
 कैं उचित है कि, देह की माया छांडि, अपने कल्याण
 कौ काज बिचारै, अरु सदा सर्वदा सज्जननि की संगति
 करै ; क्योंकि, वासों धर्म औ सुख-दोख मिलैं . या सों
 हैं कहतु हैं, जो मेरौ कह्यौ मानौ, तौ ऐसे ही करौ .
 कह्यौ है, “सहस्र अश्वमेध की समान सत्य है ; पर जोखियै
 तौ सत्य ही अधिक होय .” यातें हैं कहतु हैं कि, अब
 दोख नरपति सत्य बीच दै मिलौ, अरु उपहारसंधि
 करौ, तौ अति उत्तम है ; क्योंकि, या में सांप मरै न लाठी
 टूटै . चकवा बोळ्यौ, तुम नीकी बात कही . यह सुनत ही,
 राजा हंस ने रत्न, वस्त्र, अलंकार, द्रव्य, दूरदर्शी गीध
 कैं दियौ ; अरु विन छ लै, प्रसन्न हो, सर्वज्ञ चकवा कों
 साथ करि, राजा हंस सों बिदा होय, अपने कटक कों
 प्रस्थान कियौ . जां जाय, छां कौ सब वृत्तांत सुनायै ; औ
 चकवा कों राजा चित्रवरन तें अति आदरमान सों
 मिलायौ ; तब राजा ने छ बड़े मान सों पान औ प्रसाद
 दै, चकवा कों बिदा कियौ . इत चकवा राजा हंस के निकट

आयौ; अरु उत गीध ने चिचवरन कौं टेर सुनायौ कि,
 महाराज ! तिहारी सब मन की बांछा पूजी, अब कुशल
 छेम अपने देस चलौ . यह सुनि, राजा मयूर वहां तें चल्यौ,
 अरु आनंद तें अपनी राजधानी में पहुँच्यौ . दोऊ राजा
 आप अपने देस में सुख सों राज करनि लागे . इतनी कथा
 कथ, विष्णुशर्मा बोल्यौ, महाराजकुमार ! अब जो कह्यु
 तुम्हें सुनिवे की इच्छा होय, सो कहौ . राजपुचनि कही,
 अहो गुरुदेव ! हम ने तिहारे प्रसाद तें राजनीति के सब
 अंग जाने; सुख पायौ; अज्ञान नसायौ; मन कौ खेद
 गंवायौ, मानौं नयौ . जन्म भयौ .

इति संधि नाम चतुर्थ कथा संग्रहः संपूर्णः .

लब्धप्रनाशः ।

विष्णुशर्मा बोल्थौ, सुनियै महाराजकुमार! या कथा के पढ़े सुने तें, मनुष कठिनता के समुद्र कौं ऐसे तरै, जैसे बानर अपनी बुद्धि से तख्यौ. अरु जो कपट से काज लियौ चाहै, औ अधूरे काम मांछि मनोरथ कहि देय, सो ऐसे ठगायौ जाय, जैसे मगरमछ ठगायौ गयौ. राजपुत्रनि कही, यह कैसी कथा है? तब विष्णुशर्मा कहनि लाग्यौ;

समुद्र के तीर, काह्ल ठौर, एक जामन कौ पेड़ सफल ; तापै रक्तमुख नाम एक बानर रहै. काह्ल समें, सागर की लहर कौ माख्यौ, एक विकराल नाम मगरमछ वहां आयौ, अरु दृष्ट तरै कोमल बालू में जाय बैद्यौ. तब मरकट ने वासों कही, अहो! तू आज मेरौ पाहुनौ है, यातें मैं जंबू फल देतु हौं, तू मन भरि भोजन कर. कछौ है, “हितू होय कै अनहितू पंडित होय कै मूर्ख, भोजनसमय आवै, तासों अतिथिधर्म कीजै.”

आवै भोजन के समय शत्रु चार चंडार ;

अतिथि जानि पूजा करै जग में परम उदार. (दिहा)

आगै, वह मगर फल खाय, संतुष्ट भयौ. पुनि नित आवै, नित जाय ; भली भली बातें कहै सुनै ; फल खाय, अरु पाके पाके फल अपनी स्त्री हू के लियै लै जाय. एक दिन बाने पूछी, अहो कंत! ये अमृतफल तुम कहां तें ल्यावतु

है ? इन कही, मेरौ एक परम मित्र रक्तमुख नाम बानर है, सो मोहि प्रीति सहित ये फल देतु है . पुनि वह बोली, जो ये अमृतफल नित खातु है, ताकौ करेजा अमृत सम होयगै ; तातें तू वाकौ करेजा मोहि ल्याय दै, मैं वाहि खाय तृप्त होय, तोसें क्रीड़ा करौंगी . मगर कही, एक तौ वह मेरौ परम मित्र, दूजै फल कौ दाता ; ताहि मैं कैसे मारिहैं ? कछौ है, ' संसार में द्वै प्रकार के भाई होतु हैं, एक तौ माजायौ, दूजौ मुखगायौ ; पर अपने सहोदर भाई तें वाहि अधिक जानियै . बहुरि वह बोली, सुनि ! अबलौं तौ मेरौ कछौ तें कबहू न उलंघ्यौ हो, पर आज तें न मान्यौ ; तातें मैं जान्यौ कि, जाहि तू बानर कहतु है, सो नाहिं ; वह बानरी है, तातें तू आसक्त भयौ है ; वाही के अनुराग तें दिन भर छां रहतु है, सो मैं जान्यौ ; याही तें तू मेरे पास आय, वाही की बातें नित हंसि हंसि कछौ करतु है ; औ रात्रि कौं सोवत समें तेरौ अंग सिधिल रहतु है ; मैं अब बूझी कि, तेरौ मन और नारि सें लाग्यौ है ; अधिक कहा कहैं, जब लौं अपनी सौत कौ करेजा न खाजंगी, तब लौं अन्न पानी न करौंगी, अरु प्राण दै मरौंगी . यह सुनि, डरि, मगर दीन ह्वै बोल्यौ, प्यारी ! हैं तेरे पाय परतु हैं, तू जिन रिसाय . यौं सुनि, वाहि अधीन भयौ जानि, आंखनि में आंसू भरि बोली, अरे धूर्त कंत ! आज लौं तौ तें मेरे अनेक मनोरथ साधे ; पर अब तू और सें खेह करि, मेरौ निरादर करतु है ;

तातें तेरा पायन कौ परवौ दूनौ उर दाहतु है; अरु जौ तेरौ प्रेम वा सेां नाहीं, तौ क्यों न मेरौ नेम पूरौ करै ? पुनि यह निज मन में कहनि लाग्यौ कि, साधु जन सांच कहतु हैं ;

पाहन देख ब तरुनि हठ कुकट क्रोध सुभाव ;

नील रंग सम ना मिटै कीने ऊ कोटि उपाव . (दीक्षा)

तातें मोहि याके मनोरथ कौ यत्न करनौ बन्धौ . यह बिचारि, छां तें उठि, बानर के पास जाय, मगर अनमनौ है, बैठि रह्यौ . पुनि मरकट ने वाहि उद्देगी देखि, कछ्यौ, अहे ! आज कहा है, जौ तुम कछु भाषतु नाहिं, अरु चिंतित होय बैठि रहे है ! मगर बाल्यौ, मिच ! आज तेरी भाभी ने मोसेां निठुर बचन कहि, कछ्यौ कि, तू कृतघ्नी है, अरु काहू के उपकार कौं न मानतु है, न जानतु है ; क्योंकि, ऐसे उपकारी कौं तू एक बेर हू अपने घर नाहीं ल्यावतु ; पुनि निर्लज्ज होय, वाके घर काहै खाय खाय आवतु है ? अब अधिक कहा कहैं, जौ तू मेरे उपकारी देवर कौं न ल्यावैगौ, तौ मो कौं हू जीवतु न पावैगौ . मिच ! यातें मैं तौ छां तें उदास होय, इत तेरे लैन कौं आयौ ; औ उत उन तेरे कारन कंचन रत्न तें घर संवार पाटंबर छाथ बिछाय, नाना भांति के पकवान बिंजन बनाय राखे हौंयगे ; अरु पौरि पर बैठी, बापरी उत्कांठित बाठ जोवति होयगी . बानर कही, अहे मिच ! भाभी ने यह बात तौ तुम तें सांच ही कही ; क्योंकि, ऐसे और हू ठौर

कह्यौ है, “मिचता के छः लक्षण हैं, दैनौ, लैनौ, निज दुख सुख कहिवौ, वाकौ सुनिवौ, वाके घर जीमनौ, अपने गेह जिमावनौ;” ये बातें तौ प्रीति में अवश्यक चाहियें; पर हम बनवासी, तुम जलनिवासी, तातें मेरौ जैवौ तौ छां नाहीं बनतु; पै तुम छपा करि, भाभी कौं छां लै आओ, तौ मैं वाके पाय परि असीस लैऊं . मगर कही, बंधु! हमारौ गेह जल मांहिं नाहिं, जैसें समुद्र के कांठे इत तुम रहतु हो, तैसें उत हम; अरु जौ तुम न जाओगे, तौ हमारौ यह कैसें पविच होयगौ? यातें तुम मेरी पीठ पर चढ़ि खेउ, मैं तुम्हें सुख सेां लै चलौं . बहुरि बानर कही, भाई! जौ ऐसी है, तौ अब बिलंब जिन करौ, बेग ही चलौ . यह कहि वाकी पीठ पर चढ़ि बैद्यौ, अरु वह लै नीर में पैद्यौ; पुनि औंढे में जाय, बेग चलनि लाग्यौ . तब बानर बोळ्यौ, भाई! धीरै चलौ, पानी की तरंग मोहि ठेलै देति है . यह सुनि, मगर ने निज मन में बिचार्यौ कि, अब तौ यह बंदरा मेरी पीठ तें तिल भर छ नाहीं खिसक सकतु; तातें हैं अपनौ मनोरथ क्यों न कहैं, जो यह अंतसमय जानि, अपनौ इष्टदेव भजै . ऐसें जी में ठानि, उनि बनचर सेां कही, मिच! हैं स्त्री के कहे बिस्वासघात करि, तोहि मारिबे कौं लियै जातु हैं; तुम अपनौ इष्टदेव भजौ, अरु जग की माया तजौ . बानर कही, भाई! मैं भाभी कौ ऐसी कहा अपराध कियौ, ज तुम मोहि मारनि कौं साध लियौ? मगर बोळ्यौ, अहो!

तुम नित अमृत फल खातु हो, यातें तिहारौ करेजा अमृत समान होयगौ; यह जानि, उन खँवे कौ मनोरथ कियो है; अरु वाके मनोरथ पूरवे कौं मैं हूँ सिर पाप लियो है. कह्यौ हो, “अग्नि साख दै जाकौ कर गहियै, ताकौ मनभायौ काज करिबै; यह पुरुष कौ धर्म है.” आ बात कौं सुनि, रक्तमुख बानर ने वाकी मूरखता देखि, उक्ति युक्ति सेां वाके मनोरथ पर मनोहर बचन सुनाये कि, मित्र! जो तैरौ ऐसी ही बिचार हो, तौ तैं मोतें हूँ हीं क्यों न कह्यौ, जो मैं अपनौ करेजा जंबू तरु में न राखि आवतौ? वह तौ मो पै भाभी के पाय लागवे की बड़ी भेट ही. कह्यौ है, “राजदार, देवदार, गुरुदार, सूने हाथ जैवो उचित नाहीं;” पर हौं तौ हृदय सून्य होय, या अगाध जल में तेरी गैल चल्यौ आयौ, अरु सुनि? सब प्राणी कौं भय होतु है; क्योंकि, भय कौ निवास देह में करेजा है, याही तैं जीव सोच करि चलतु हैं, आगले पाय कौं ठार करि, पाछलौ पग उठावतु हैं; औ हम बनचर धरती पग हूँ न धरैं, ताही तैं हमारौ नाम ब्रह्मा ने शाखामृग धर्यौ है; सो अपने कुलधर्म सेां भय कौ निवास जो करेजा, ताहि निकारि, रूख के खोलर में धरि, निर्भय है, डारि डारि, दैरि दैरि, कूदि कूदि फिरतु हैं; अरु अबही तेरे संग आवत, जामन के खोडर में यत्न सेां धरि आयौ; बिन हृदय तेरे साथ निर्भय है, उठि धायौ. यद्यपि हमारौ हृदय बिधाता ने संसार की रीति तैं बनायौ है;

पर वह हमारे काँझ काम कौ नाहिं अरु तुम सोई चाहतु
है; यातें उत्तम कहा, जो तिहारे काज आवै; कछौ है,

“धन दैकै जिय राखियै, जिय दै राखियै काज;

धन दै जो दै काज दै एक प्रीति के काज.” (दोहा)

इतनी बात के सुनते ही, मगर आनंद से बोली, अहे
प्रीतम! जो ऐसी बात है, तो अपना करेजा मोहि दै, जु
वा दुष्ट पत्नी कौ हठ रहै; अरु तेरो जीव बचै; मोहि
मिचद्रोह कौ पाप न लागै. इतना कहि, पाछौ फिस्स्यौ.
पुनि वे दोऊ आप अपना दूष्ट सुमरन लागे. कछौ है;
“अधर्मी कौ मनोरथ दूष्टदेव भजे छ निष्फल होय.”
आगै, बानर अपने पुन्य प्रताप से तीर पै जाय, मगर
को पोठ तें उतरि, लांबी लांबी डगें भरि, जबूटक्ष पर जाय
बैस्यौ, औ मन में कहनि लाग्यौ कि, मैं आज नया जन्म
पायौ जु, या दुष्ट के हाथ तें बचि आयौ. कछौ है कि,
“जाँका विस्वास जो में न आवै, ताँका विस्वास कब छ
न कीजै; पाच कुपाच विचारियै; जाँका जैसा सुभाव होय,
तासें तैसें ही निबाहियै; अरु दुष्ट के मीठे बचननि पर
न जाइयै; क्योंकि, वह अपनी घात ही से कहै.”

यह तो ऐसे विचार रह्यौ हो, तामें मगर बोली, भाई!
बैठि काहे रह्यौ? वह करेजा मोहि दै, मैं तेरी भाभी काँ
जाय दैउ. बानर कही, मिच! अथाह जल में गये तें अम
भयौ है, तातें मोपै बोली नाहीं जातु. मगर कही, बंधु!
पुरुष कौ कछौ है कि, अम जीत, परमार्थ पुरुषार्थ करै.

यह सुनि, बानर रिसायकौ बोल्यौ, अरे मूरख विस्वास-
घाती! तोहि औ तेरी मति कौ धिक्कार है! क्यौंकि, काहू
के हँ करेजा हू हेतु हैं? अब तू यहां तें जा, फेर जिन
आवनौ . कह्यौ है, “जासों एक बेर जीव बचाइयै, पुनि
वाहि कबहू न पतियाइयै? अरु जौ वाकौ बहुरि विस्वास
करै, तौ निदान अनेक दुख भरि, निस्संदेह मरै .” ये बातें
बानर तें सुनि, मगर चिंता करि कहनि लाल्यौ कि, मैं
अभागे यह कहा कियौ जु, काज बिन भये अपनौ कपट
याके आगै कह दियौ ! अब काहू भांति यातें विस्वास
उपजाय, पुनि याहि दांव में ल्याजं तौ भलौ . ऐसें मन
में ठानि, हंसकौ बोल्यौ कि, हे मित्र! तेरी भाभी कौ तौ
या बात तें कुछ प्रयोजन न हो ; पर हैं हंसी की रीति
तेरी प्रीति की परीक्षा लेतु हो ; तुम मन में कछु जिन
ल्याओ, औ मेरी गैल आओ . कपि कही, अरे दुष्ट जल-
चर ! तू यहां तें जा, हैं आवन कौ नांहिं . ऐसें मंगदत्त
हू ने कह्यौ हो कि, प्रिय दरसन तें कहौ कि, फेर मंगदत्त
कुआ में आवन कौ नांहिं . मगर कहौ, यह कैसी कथा
है ? पुनि मरकट कहनि लाग्यौ ;

काहू एक कुआ में, गंगदत्त नाम मेंडुक, मेंडुकन कौ
राजा रहै ; वाकौ कुटुंब तें बैर भयौ, तब वह अरहट की
माल पै बैठि, क्रूप तें बाहर आय, बिचारन लाग्यौ कि,
अब कौन उपाय तें बैरियन मारि निष्कांटक राज करौं ?
यह विचार करतु हो कि, वाने एक कारौ नाग बिल में

पैठतु देख्यौ, अरु याहि वह प्यारौ लाग्यौ; तब बोल्यौ किं, यासों प्रीति करि, शत्रुन कौ नाश करौं . कह्यौ है कि, “रिपु मारिवे कौं अति बलवंत शत्रु सेां स्नेह करियै; औ ससा के मारिवे कौं बाघ कौ बल धरियै; योरौ पराक्रम कबहुं न करियै; नातौ अवश्य हारियै.” ऐमें जी में ठानि, सर्प के बिलदार पै जाय, पुकाख्यौ, अहे प्रियदरसन ! मेरौ तुमकौं प्रनाम है, बाहर आओ . यह सुनि, वा सांप ने निज मन में विचार्यौ कि, जो मोहि बुलावतु है . सो मेरौ सजाती तौ नाहिं; क्योंकि, सर्प कौ शब्द नाहीं, औ न काहू सेां मिचाई; यातें प्रथम याहि भीतर बैठे ही जानि लीजै, तब बाहर पाय दीजै . कह्यौ है, “जाकौ शील सुभाव न जानियै, तासों बेग ही न मिल बैठियै.” यह दृढस्यति कौ बचन है . अरु जौ मैं तुरंत ही बिन समझे बिल तें बाहर निकरौं, तौ न जानियै कि, कोऊ बैरी मंत्रबादी पकरै; तातें याहि जान्यौ चाहियै . यों विचार, वहांहीं तें बोल्यौ, अरे ! तू को है, जु मोहि टेरतु है ? इन कही, हैं गंगदत्त नाम मेंडुक, मेंडुकन कौ राजा हैं; तासों मेरो सहायता होगी, यातें मिचाई करन आयौ हैं . सर्प कह्यो, अहे ! यह अनमिल संग है, तन अग्नि कैसी मिचाई ? पर अब तू मेरे घर आयौ, यातें मैं कहा कहैं ? कह्यौ है, “जासों अपनी मृत्यु जानियै, ताके नेरे सपने हू न जाइयै;” पै तैं ऐसी कहा विचारी ? गंगदत्त कही, अहे ! यह तौ सांच है, अरु हम तुम जन्म ही के बैरी हैं ; पर हैं शत्रु कौ

दबायौ निरादर है, तुम पास आयौ. कह्यौ है, “पग में कांटौ चुभै, तौ सुआ सेां काढ़ियै; अरु शत्रु सेां जब अपनौ बिनास जानियै, तब सबल शत्रु कौ आसरौ गहि, प्रान धन राखियै.” पुनि नाग बोल्ह्यौ, तो सेां शत्रुता कौन सेां है ? इन कह्यौ, कुटुंब सेां. उन पूछ्यौ, तेरौ निवास कूप, तडाग, बापी, कहां है ? इन कह्यौ, पाथरन तें बंधे कुआ में रहतु हैं. सांप बोल्ह्यौ, तौ तौ न बनी ; क्यौंकि, तहां मेसेां न गयौ जायगौ. कह्यौ है, “अति मीठौ भोजन होय, तौ ह्र पेट भर खाइयै; अधिक लोभ न करियै; लोभ करे बिगार होय, दुख पावै.” पुनि गंगदत्त कह्यौ, अहो ! ऐसौ कह्यौ है कि, “भेदी मिले कठिन ठौर ह्र सुगम है जातु है ; जैसें घर के भेदी लंका खोई.” अब मैं तुम तें वहां कौ सारौ भेद कहतु हैं, तुम चित दै सुनौ. वा कुआ के ऊपर रहट चलतु है ; ताकी माल तें लागि, नीचे जाय, एक खवाल में बैठि तुम हमारे शत्रुनि निचिंताई सेां खात्रौ; अरु चैन सेां बैठि, मंगल गात्रौ; हैं तुम से आचार्य कौं अपनी गाढ़ में कछु समझ ही लियै जातु हैं, तासेां तुम काहू भांति की चिंता जिन करौ, बेग चलकै मेरी राज-धानी की रक्षा करौ. इतनी सुनि, सर्प ने बिचाख्यौ कि, यह कोऊ मेरे भाग तें मोहि अपने कुल कौ अंगार आय मिल्यौ है ; अरु मोहि तौ या ठौर अहार ह्र नाहीं जुरतु, यातें वा ठौर याके संग जाऊं, तौ विन अम बैखौ अहार पाऊं. कह्यौ है कि, “जब देह कौ बल घटै, अरु कोऊ

सहायक न होय, तब पंडित होय सो अपनी जीविका की वृत्ति बिचारै.” ऐसे सर्प ने निज मन में ठानि, गंगदत्त सेां कहो, आज तैं तू मेरौ मिच भयौ; अब वहां लै चल, जाहि कहैगौ ताहि खाजंगौ . या रीति सेां वातें बचन कहि, नाग बिल तें बाहर आयौ . पुनि दोऊ बतराय, कूप पै आय, रहट की माल में लागि, वा मांहिं धसे, औ खवाल बीच बसे . आगै, गंगदत्त ने अपने श्चु चीन्द् चीन्द् बताये, उन बीन बीन खाये . जब दिन में तैं कोऊ न रह्यौ, तब सर्प ने गंगदत्त सेां कह्यौ कि, मिच! मैं ने तेरौ कैसौ काम कर दियौ जु श्चुनि मारि निष्कंटक राज कियौ? गंगदत्त बोळ्यौ, भाई! जैसें भले मिच काज करतु हैं, तैसें तुम कीनौ, अरु मोहि सुख दीनौ; पर अब याही अरहट की माल लागि, अपने धाम पधारौ . नाग कही, हितू! यह कहा कहतु है? तैं मेरौ घर छुड़ायौ, मोकों यहां लै आयौ; वहां और ही मेरौ सजाती आनि रह्यौ होयगौ, सो मोहि बिल में काहे बड़न देयगौ? वहां सेां तैं मोहि आन्थौ, अपनौ करि ठान्यौ; अब मेरे अहार की चिंता कर; नातौ हम सेां तुम सेां न बनिहै . कह्यौ है, “अहारे व्यौहारे लज्जा न कारे .” यह बात सुनि, गंगदत्त कौं ऊतर न आयौ; तब निज मन में पछतायौ कि, मैं मूरख यह कहा कियौ, जु अपनौ घर दिया लै दिखाय दियौ? अब यह बिरोध के बचन कहतु है . कह्यौ है कि, “सरबस जातौ जानियै तौ आधौ दीजै बांट .” तातें याके खैवे कौं अपनी बगर

के मेंडुकन तें एक एक नित दीजै . ऐसें मन में ठहराय बाल्यौ, भाई! तुम अपने अहार कौं मेरी बाखल तें एक दादुर नित लेहु, अरु जैसें अपने घर रहियतु है, तैसें रहौ . वह वाही भांति रहनि लाग्यौ .

एक दिन, गंगदत्त कौ पुत्र सुभदत्त नाम, वाके अहार में आयौ; तब गंगदत्त रोवत रोवत अपनी स्त्री के सम्मुख धायौ . उन कह्यौ, रे कुटुंब के मारनहारे! अब क्यों रोवतु है? तोहि तौ कुटुंब कौ पाप लाग्यौ; पर अब निज प्रान राखिवे कौ यत्न कर . यह बात सुन, गंगदत्त ने अपने किये कौ बहुत परैखौ कियौ . आगे जब केवल गंगदत्त ही रह्यौ, तब प्रियदरसन ने बिचार्यौ कि, यासें मोसें बेल बचन है, तातें यातें भोजन मांगौं; जब यह कहैगौ, अब तौ हौं ही रह्यौ, तब याहि छल करि खाजंगौ . सर्प ने ऐसें मन में ठानि, गंगदत्त सेां कही, रे प्रीतम! अब तौ यहां मेंडुक नांहिं, अरु मोहि भूख लागी है . गंगदत्त बाल्यौ, हे प्रीतम! अब तौ हम तुम द्वै भाई ही रहे, पर आज्ञा करौ, तौ दूजौ व्याह करौं; औ प्रजा बसाय, कुटुंब तें घर भरौं; तुम मेरी राजधानी की चिंता करौ, औ मैं तिहारे अहार की . कहौ तौ अबही जाय, ताल के मेंडुकनि भुलायल्याजं, अरु फेर ज्यों कौ त्यों नगर बसाजं . सर्प कही, बंधु! यह तौ तुम नीकी बिचारी, यातें तौ तिहारी राजधानी रहे, अरु मेरी जीविका छू चलै . सुनि! अबलौं तू मेरौ भाई हो; पर आज सो तू मेरे पिता की समान है . इतनौ सुनि,

गंगदत्त रहट की माल खागि, कुआ के बाहर आय, निज मन में कहनि लाय्यौ कि, मैं आज काल के गाल तें निकरि आयौ, सु, मानौ नवौ जन्म पावौ. ऐसैं कहि, एक सरवर में आय रह्यौ; अरु वहां नाग ने कितेक बेर लौं बाकी बाट जोई; निदान घबरायकै बोल्यौ कि, मैं अभागे यह कहा कियौ, जु वाहि जीवत जानि दिवौ? सब दादुर कुआ के खाये, पर जब लग गंगदत्त मेरी डाढ़ तरै न आयौ, तब लौं हैं नेक झंन अघायौ. ऐसैं कहि, कूप मांहिं एक गोह रहत ही; इनतासें कछौ, हे प्यारी! तू मेरी संतुष्टता कौ काज करै, तौ हैं तो सें एक बात कहैं. वह बोली, कह. याने कछौ कि, गंगदत्त ताल में मेंडुक लैन गयौ है, ताहि जाय कह कि, दादुर लै बेग चल; अरु वे न चलैं, तौ तू ही चल, तेरे देखे ही बाकी भूख जैहै. कछौ है, “भूख प्यास सह्यौ जाय, पर मिच कौ वियोग न सह्यौ जाय.” पुनि कहियौ कि उन मो सें कछौ है जु, मोहि भूख्यौ जान, मन में कछु भय न करै; जो मैं वासें द्रोह करौं, तौ मेरे सब किये कर्म घोबी की नांद में परैं. इतनैं कहि, सांप ने गोह कौं बिदा कियौ. वह कूप तें निकरि, गंगदत्त के पास जाय, नाग कौ संदेसौ सुनाय, बोली कि, उन कछौ है, अब दोऊ मिच बैठि धर्मचरचा करिहैं; खैवे कौ सोच जिन करौ. पूरनवारौ कन कीरी, औ मन कुंजर कौं देतु है. गोह तें सब बात सुनि, गंगदत्त बोल्यौ, हे प्रिये! कछौ है, “भूख्यौ कौन पाप न करै? नीच जीव निर्दई होतु

हैं, ताते तू प्रियदरसन ते जाय कह कि, अब गंगदत्त कुच्छ
में आवन कै नाहिं. ऐसे कहि, उन गोह कै बिदा कियो.
इतनी कथा कहि, वानर ने मगर सेां कछौ, अरे दुष्ट
जखचर ! तू यहां ते जा, है गंगदत्त की भांति फेर तेरे
घर जान कै नाहीं. पुनि मगर कही, मिच ! तुम्हें ऐसी
करनैं जोम नाहि ; सुनै ! जो तुम मेरी इतघदोष दूर न
करिहौ, तौ मैं तिहारे बार उपवास करि मरिहौं. वानर
बोल्हौ, रे मूढ़ ! तू केतौ ऊ करि, पर मैं खंबकरन गदहा
की भांति फेर न जाऊँगा. मगर कही, यह कैसी कथा
है ? तहां वानर कहतु है ;

काह्न वन में एक करालकेश नाम सिंह, अब ताकी
सेवक धूसर नाम स्वार रहै ; सु काह्न समें, वह सिंह गज
सेां खखौ ; वाके शरीर में चोट लागी, ऐसी कि वाते एक
डग हू न चल्हौ जाय. वासेां वाहि अहार न जुखौ ; तब
जंबुक बोल्हौ कि, स्वामी ! मेरी तौ मारे भूख के प्रान जातु
है, अब तिहारी सेा यह गति है जु, डग भर हू नांहीं
चल्हौ जात, मैं सेवा कैसे करौं ? सिंह कही, अरे ! तू कहां
कोऊ जीव जाय देख, जो मेरी यह दसा है, तौ हू ताहि
मारिहौं. यह सुनि, स्वार वां में चलि, गांव के निकट जाय,
देखै तौ एक ताल के तीर, खंबकरन नाम गदहा चरतु
है. वाहि देखि, वाने कही, मामा ! तोहि मेरी प्रनाम है,
आज अनेक दिन पाछे मैं तिहारी दरसन पायी, अब सब
दुख पाप गंवावौ. यों कहि, वह धूर्त पुनि बोल्हौ, मामा !

अबकै तोहि अति दुर्बल देखतु हैं, सु कहा है ! उन कही, अहो भगिनीसुत ! कहा करौं ? यह धुबिया बड़ौ निर्दई है, मो पै बहुत भार लादतु है, अरु एक मूठी हू अनाज नाहीं देतु ; हैं धूर मिश्रित रूखे सूखे तन खाय रहतु हैं ; तुम ही विचारौ, तातें देह कैसें पुष्ट होय ? स्यार कही, मामा ! जौ तू ऐसी विपत में है, तौ मेरे साथ चल, मैं तोहि आछी ठौर लै जाऊं ; तहां नदी के तीर मरकत मनि के बरन हरी हरी दूब चरौ, औ आनंद तें विचरौ ; अरु हम तुम तहां बैठि, आछी आछी बातें करै, औ रहैं .

खंबकरन बोल्यौ, अहो भगिनीसुत ! यह तौ तैं भली बात कही ; पर तुम बनवासी, हम नगरनिवासी ; तिहारी जीविका मास तें, हमारी तन नाज तें ; यातें हमारौ तिहारौ मेल कैसें बने ? अरु वह भली ठाम हमारे कौन काज की ? स्यार कही, मामा ! ऐसें जिन कही, वा ठौर तुम मेरी भुजानि के बल तें रहौ ; छां काहू भांति कौ दुख भय नाहीं ; और हू गदही अनेक अपनी आजीविका के लिये रहति हैं, मो पाहीं औ ते आई हों, तब अति दुर्बल हो रही हों ; तातें मझाकुरूप दीसति हों, मेरे आश्रम में आय उननि सुख पायौ, अहार मुकतौ खायौ ; तासों वे पुष्ट होय, चंपाबरनी हो रही हैं . अरु वे काम की सताई मोसों निसंक अपनौ मनोरथ आय आय कहति हैं ; औ तामें आज प्रात ही एक मामी ने मोतें आय कही कि, तेरौ मामा सपने में मेरौ पति भयौ है, ताहि ल्याय

मोसें मिलाय दै ; यातें तुम बेग चलौ ; नातौ वाहि कोऊ और लै जायगै . यह बात सुनि, कामातुर होय, संबकरन बोल्हौ, अहो भानेज ! जौ ऐसी बात है, तौ आग होय तौ छू मैं चलौंगी . कह्यौ है, “स्त्री में द्वै गुन ; एक अमृत, औ दूजौ विष ; संयोग अमृत, औ वियोग विष .” पुनि जाकौ नाम लियै मनुष प्रसन्न होय, ताकौ मिलन सुख तौ अधिक ही होयगै . आगै, वह स्यार गदहा कौ फुसलाय लै गयौ ; औ सिंह गदहा कौ देखत ही धायौ . तब यह भयमान ह्वै परायौ ; औ वाके हाथ तौ न आयौ ; पर नाहर के हाथ की चोट याके शरीर में लागी . सिंह अछताय पछताय बैठ रह्यौ . तब जंबुक बोल्हौ कि, तुम यह कहा कियौ, जु गदहा छांड़ि दियौ ? बस देख्यौ तेरौ पराक्रम, जौ याही कौ न मार सक्यौ, तौ हाथी कैसें मारैगै ? नाहर कही, अरे ! एक तौ मेरी देह निर्बल ; दूजै वाकौ आवनी मैं न जान्यौ, यातें वह निकरि गयौ ; नातौ हाथी खेद मारै . पुनि स्यार बोल्हौ, भलौ, जो भयौ सो भयौ, वाहि जानि देउ, अब हैं वाहि फेर ल्यावतु हैं, तुम सावधान होय बैठौ . सिंह कही, अरे ! जो मोहि देखि गयौ है, सो फेर कैसें आवैगै ? स्यार बोल्हौ, तुम अपने पराक्रम की बात कहौ, वाहि ल्यावन की हैं जानै . यह बात सुनि, सिंह सचेत ह्वै ऐंठि बैद्यौ ; औ स्यार तहां तें चलि नगर में पैद्यौ, गदहा के ठिग जाय, हंसिकै बोल्हौ, अरे मामा ! तू वहां तें क्यों बगदि आयौ ? उनि कही,

अहे, भगिनीसुत ! तू मोहि भली ठौर खै गयो जु, मैं नीठ नीठ मीच के हाथ तें बधि आयौ ! वह कौन जंतु हो, जाके हाथ की चोट मेरे शरीर में बज्र सम लागी ? स्थार ने मुसकुरायकै कछौ, मामा ! वह तौ मामी ही, तैंकों आवतु देखि, अनुराग तें आतुर होय, आसिंगन करिवे कौं उठी ही ; पर तू नपुंसक जु भाज्यौ, सु वह सकुच करि वहां ही बैठ गई . कछौ है, “जब स्त्री कीड़ा समय ठीठ होय ढिठाई करै, अरु वाके भर्त्तार सौं कछु काज न सरै, तब वह अपनी ढिठाई तें आपलजित होय.” अब वाने मोसों कछौ है कि, जाके शरीर में मेरौ हाथ लाग्यौ, मैं ताही कौं बरिहैं ; नातौ लंघन करि करि मरिहैं . तू हो ताके मन में बस्यौ है, तेरी ही विरह सौं वह बापरी दुख पावति है ; यातैं हें कहतु हें कि, तू बैग चलि वाकौ मनोरथ पूरौ कर . न जानियै, जौ विरह धिया तें वाकौ जीव निकरि जाय, तौ मोहि स्त्रीहत्या कौ पाप लागै . कछौ है, “बालक, स्त्री, गौ, ब्राह्मण की हत्या तें महानर्क मोगनौ होतु है .” औ भगवान ने संसार में नारी बड़ी वस्तु बनाई है, ताही तें सब कौं प्रिय है ;

गारी गारी सब कहैं, गारी गर की खान ;

अंतकाय में देखियै, गारी ही में प्राण . (दोहा)

अरु जे स्वर्ग की इच्छा करि, नारी कौं तजतु हैं, तिस कौं कामदेव पीड़ा देतु है . देखौ ! कोज नम्र होय, द्वार में कोटतु है ; कोज अपने हाथ अपनी तिर खसोटतु है ;

कोऊ जटा राखि, पंचाग्नि मांहिं बैठि, जरतु है ; कोऊ कपाली आसन मारि, औ ऊर्ध्वाङ्ग होय, दुख भरतु है . पुनि कह्यौ है, “नारी सब सुख की जर है .” इतनी कहि, बहुरि स्यार बोल्थौ कि, मामा ! हैं तिहारौ हितु होय कहतु हैं ; क्योंकि, तिहारे सुख तें हमें सुख है, औ दुख तें दुख . आगे, गदहा स्यार कौ उपदेस सुनि, कामांध होय, हरषि, पुनि वाके साथ चल्थौ . कह्यौ है कि, “जब मनुष कर्म के बस होय, तब खोटी बात जानकै छ न माने, बिन किये न रहै .” पुनि ज्यों खर वहां गयौ, त्योंही सिंह ने मार लियौ .

आगे, सिंह स्यार कौ गदहा के ठिग राखि, आप नदी न्दवे गयौ . जौलौं वह स्नान, ध्यान, पूजा, तर्पन, करि आवे, तौलौं स्यार चंडार ने झुधा के मारे, गदहा के कान, नैन, औ हियौ, लै भक्षण कियौ . सिंह आनि देखै तौ, वाकौ हृदय औ नेच कर्म नाहिं ; तब उनि स्यार सेां कह्यौ, अरे ! यह तैं कहा कियौ जु, आंख कान औ हियौ याकौ काढ़ि खाय लियौ ? तेरौ झूठौ मैं कैसें खाजं ? स्यार कह्यौ, स्वामी ! ऐसी जिन कह्यौ ; या जीव के कान, आंख, हियौ, होत नाहीं ; क्योंकि, कान होतै, तौ तिहारौ नाम इन या वन में सुन्यौ होतौ ; अरु नेच होतै, तौ तुन्हें देखि फेर न आवतौ ; औ हियौ होतौ, तौ तिहारे कर की चोट खाय, फेर न भूलजातौ . यह बात स्यार तैं सुनि, सिंह ने गदहा बांढि खायौ . इतनी कहि, बानर बोल्थौ, अरे जलचर !

हैं। लंबकरन नाहिं जु, तेरे साथ अब आजं; कौंकि, तैं प्रथम ही मोसें कपट कियौ; बहुरि युधिष्ठिर कुम्हार की भांति सब भेद कहि दियौ। मगर कही, यह कैसी कथा है? तहां बानर कहतु है;

एक समें काह्ल देस में अति बर्षा भई; तातें काल पखौ। तब वहां के कितेक रजपूत काह्लं चाकरी कैं चले; तिन के साथ युधिष्ठिर नाम एक कुम्हार हू छै लियौ। वाके माथे में घाव हो। कितेक दिन में, काह्ल चौर देस मांहिं जाय, एक राजा के यहां चाकर भये। कुम्हार के लिलार कौ घाव देखि राजा ने अपने जो में बिचार्यौ कि, यह कोऊ बड़ौ खूर है जु, याने सनमुख चोट खाई है। यातें राजा चाहि वाके सब साथियन तें अधिक माने। एक दिन, वह नरपति अपने सब सुभटन सहित सभा में बैद्यौ हो कि, वाने यासें पूछ्यौ, अहो रावत! यह घाव तुम मस्तक पर कौन सी खराई में खायौ? इन कही, महाराज! मेरौ नाम युधिष्ठिर है, यातें हैं। झूठ नाहीं बोलतु; मैं रजपूत नाहीं, जात कौ कुम्हार हौं; अब यह घाव मैंने रन में नाहीं खायौ, याकौ भेद कहतु हौं, सुनौ कि, मेरे पिता के ब्याह कौ उछाह हो; तहां मैं हू अपनी मंडली में भांग पी, घर में दौख्यौ, सु उखट पख्यौ, एक ठीकरा मूंड में पैद्यौ, ताकौ यह चिन्ह है। इतनी बात सुनत ही, राजा रिस करि बोख्यौ, इन मोहि धोखौ दियौ, अब याके लिये मैंने इन राजपूतन कौ अपमान कियौ, अब चाहि धकाय काढ़ौं, कुम्हार कही,

महाराज! ऐसे जिन कीजै, बरन युद्ध में मेरी परिक्षा लीजै.
राजा बोली, अरे! सर्वगुणसंयुक्त कुल में तू जनम्यौ नाहिं.
ऐसे स्यारसिसु कौं सिंहनी ने हू कछौ हो . कुम्हार कही,
यह कैसी कथा है; तब राजा कहनि लाग्यौ;

काह्ल बन में एक सिंह औ सिंहनी रहैं; सु सिंहनी
ने द्वै सिसु जाये; तद वाकौ पति वाके लियै अनेक अनेक
भांति के जीव औ जंतु मारि ल्यावै . एक दिन वह सारौ
दिवस फिख्यौ; पै वाके हाथ कोऊ जंतु न आयौ . जब
सूरज अस्त भयौ, तब निरास हो, घर कौं आवन लाग्यौ;
तहां गैल में एक स्यार कौ सुत, तुरत कौ आयौ, इनपायौ;
ताहि जतन सेां मुंह में राखि, सिंहनी के ढिग जीवतु
ल्यायौ . वाहि देखि, बाघनि बोली, हे नाथ! कहा, आज
और जंतु न पायौ? सिंह कही, भद्रे! सिंगरौ दिन भटख्यौ,
पर कछु हाथ न आयौ; अबही डगर में आवतु यह
हाथ पख्यौ; सु याहि बालक जानि मैं नाहिं माख्यौ, तेरे
पथ के लिये ल्यायौ हैं . सिंहनी बोली, स्वामी! यातें
मेरौ पेट हू न भरैगौ, दया याहि कौं मारौं? कछौ
है, “बाला, बाल, ब्राह्मन, ये तीनीं अबध्य हैं; विशेष अपने
घर आवै, ताहि तौ कबहू न मारियै.” बाघ बोली, जौ
तैं ऐसी बिचारी, तौ यह कैसें जियैगौ? उन कही, याहि
में अपना दूध प्याय जिवाजंगी; जैसें मेरे ये द्वै हैं, तैसें
तीसरौ यह हू रहै . ऐसें कहि, वह वाहि दूध प्यावन
लागी . आगौ, जद बे बड़े भये, तौ बे बिन जाने इकठे

रहें ; अब स्यारसिसु तिन में बड़ी भाई कहावे . एक दिन वा वन में हाथी आयौ ; तब सिंहसिसु बोळ्यौ, अहो ! यह गज अपने कुल को बैरी है, चलो, याहि खेद मारें . यह सुनि, स्यारसिसु इतनी कहि भजौ कि, भाई ! याके सनमुख कहां जात है ? वाके साथ सिंहसिसु हू भजे ; अब मे तीनों घर आये, कह्यौ है कि, “युद्ध समय, आगे खर होय, तौ बाहि देखि चौराग कौं हू खरता होय ; अब रक्त कायर संग्राम छोड़ भजै, तौ वाके संग सब भजै ,” आगे, सिंहसिसुनि आय, माता सेां कही कि, मा ! यह हाथी देखि परायौ, अब याके पाछै हम हू . अपनी निंदा सुनि, स्यार कौ सिंसु उनके मारिने कौं उख्यौ ; तब सिंहनी बोली, ये तो ते छोटे हैं, तू इन ते बड़ी है, माते तोहि इन पे क्रोध करनी उचित नाहिं . उन कही, ये मेरी निंदा करतु हैं, सो कहा, हां इन ते कुल, वरन, पराक्रम में घाट हां, कौ हाथी नाहीं मार जानतु ? यह सुनि, सिंहनी ने वा पे दया करि, बाहि रक्षांत लै जाय, कह्यौ कि, पुत ! तू सुंदर औ बखवान है ; पर वा कुल में अनम्यौ नाहिं जु, हाथी मारौ . अरे ! तू तौ स्यार है, मैं तोहि दया करि, अपनी दूध प्याय, जिघायौ है ; सु ये तोहि जानतु नाहिं ; अब अब इन ते तोलें बिरह भयौ, ये तोहि बिन मारे न रहेंगे ; माते हां कहति हां कि, तू अब अपने सजामियन में जाय रह ; मातौ जीवतु न बचैगौ . इतनी सुनि, वह छां तं उठि, पूछ दबाय, धाय, अपने सजातीन में जाय मिल्यौ .

यह प्रसंग कहि, राजा ने कुम्हार से कहा कि, सुन! तू वा कुल में उपजा नाहिं कि, लौह की आंच भेलै. पुनि सभा तें उठाय दियौ. तातें हैं कहतु हैं, रे मूर्ख जलकर! तैं हूं युधिष्ठिर की भांति कपट कहि दियौ, सु यह कहा किबौ? नीति तौ यों है कि, जहां सांच बोले तें काज बिगरे, औ झूठ तें सुधरे, तहां सांच सेां झूठ ही भली. कह्यौ है जु “मिथ्या कहे काहू कौ जीव बचे, औ अधमै महात्म रहै, तौ राखियै.” द्वै ठौर झूठ बोलबे कौ दोष नाहिं; अरु बिन बोले काज सरै, तौ कबहू न बोलियै, औ हर काम में चपलता करि, बिनस्वारथ न बोल उठियै. देखौ! बगुला मुनिधर्म साधे निज काज करै; औ चपल होय, सुआ बोलि, बंध में परै. इतनौ कहि, पुनि बानर बोल्यौ, अरे मूढ़! तैं स्त्री के संतोष के लिये ऐसी अधर्म जिचाख्यौ कि, मोहि मारन कैं उपस्थित भयौ. कह्यौ है, “नारी कौ मनभायौ सहज में होय तौ करियै; अरु वाके कहे मूर्ख होय, निजधर्म न बिसरियै; क्यौंकि, स्त्रीजन आपस्वार्थी होति हैं; बिन की प्रतीत कबहू न कीजै; कीजै तौ, जैसे एक ब्राह्मण प्रतीत करि पछतायौ, तैसें पछतावनीं होय. मगर पूछो, यह कैसी कथा है; तहां बानर कहनि लाय्यौ;

काहू गांव में एक ब्राह्मण रहै; ताकी नारी अति सुंदरी, खंदमुखी, चंपकवरनी, मृगनैनी, पिकवैनी, गजगौनी, कटि केदरी, अरु जाके कर पद कोमल कमल से, नारंगी सम

कुच, बार स्याम घटा की समान, दांत हीरा की सी पांति,
 छोठ बिंबाफल जान, मोह धनुषमान, पुनि कीर की सी
 नाक, कपोत की सी कंठ ; औ करतार ने बाहि ऐसी
 संबारी कि, मानैं सांचे की सी ठारी . वाके रूप की ईर्ष्या
 सब कुटुंब की नारी खायौ करै . जब यह चरित्र वाके पति
 ने देख्यौ, तब वह घर की माया छोड़ि, वाके आधीन होय,
 बाहि साथ लै, परदेस कौ चलयौ . कितेक दूर जाय, वाकी
 स्त्री ने कह्यौ, हे स्वामी ! मोहि प्यास लागी है . उन कही,
 प्रिये ! तू यहां बैठ, हौं जल खोज लाऊं . यह कहि, वह
 तौ पानी सोधन गयौ ; औ ह्वां प्यास के मारे याकौ प्रान
 निकरि रह्यौ . वह आय, याहि मरी देखि, अति बिलाप
 करनि लाग्यौ ; तद आकाशबानी भई कि, अरे ! याकी
 सी आयु पूरी भई ; पर जौ तेरौ यासों अधिक सनेह है,
 तौ तू अपनी आर्बल याहि दे . ऐसैं सुनि, विप्र ने हाथ
 माय धोय, आचमन करि, पवित्र होय, आधी बैस बाहि
 हई . वह झट उठि बैठी भई ; जल पीय दोऊ आगे चले,
 औ क्लाह गांव के निकट जाय, एक माली की बारी मांझि
 उतरे . जद ब्राह्मण गांव में सीधौ लैन गयौ, तद ब्राह्मणी
 बारी में फिरन लागी ; तहां देखै तौ एक पंगु कुआ पै
 बैद्यौ, गाय गाय, रहट कौ बरध हांकि रह्यौ है ; वाकौ
 गान सुनि, ब्राह्मणी रोझि, ताके निकट जाय कहनि लागी,
 अरे ! मेरौ मन तोसों अटक्यौ ; तू मेरौ मनोरथ पूरौ
 कर . उन कही, अरी घर गई ! हौं पंगु, तू मोहि कह्यौ

करैगी? इन कही, दर्दमारे निगोड़े! तोहि या बात सेा कहा काम? जो मैं कहैं, सो तू कर; अरु जो तू मेरो कह्यो न करैगी, तो मैं तोहि हत्या दूंगी. यह सुनि, बाने बाकौ मनोरथ पूरौ कियौ. तब ब्राह्मणी प्रसन्न होय बेसी, आन ते यह जीव तेरो दियौ है.

आगे सीधौ लै विप्र आयौ; अरु रसोई करि जब स्त्री पुरुष भोजन कैं बैठे, तब ब्राह्मणी ने पंगु कैं छ जमायौ. मुनि अद ज्ञां ते चलवे कैं भये, तद ब्राह्मण ने अपने पति सेा कहा कि, हे स्वामी! जा बेर तू मोहि छाड़ि सीधौ लैन नगर में जातु है, वा समें हैं अकेली रहति हैं; यातें यह खूबो मासी को टहलुआ है, औ आछो गावतु है, याहि संग लीजे तो मेरे निकट रह्यो करैगी. उन कही, प्रिये! एक तो गैल में अपनी देह निवाहनी कठिन; दूजे या पंगु कैं कैसे लै चलैंगे? इन कही, स्वामी! एक पिटारौ आनि देउ, तासें राखि याहि हैं निज मूँड पर आछी भांति लै चलिहैं, तुम या बात की चिंता जिम करौ. यह सुनि, उन पिटारौ आनि दियौ; इन बाहि वामें राखि, सिर धर लिखौ. आगे, एक वन में जाय, ब्राह्मणी ने निज मन माहिं बिचार्यो कि, यह ब्राह्मण जबलौ रहै गौ, तबलौ हैं या पंगु सेा निर्भय होय भोग न कर सकौंगी. ऐसें विचारि, समें पाय, विप्र कैं कूप में डारि, पंगु को पिटारौ सिर लै, औ एक नगर में बड़ी, त्यों राजा के सेवक याहि प्रकार, नगरप्रति पै लै गये, उन पिटारौ खुलवाय, पंगु

कों देखि, कछौ, यह को है ? इन कछौ, महाराज ! यह मेरी पति है, जाके शत्रुन के भय तें अपने मूँह पै चिह्न होइति हैं ; अब तिहारी सरन आनि लई है, जैसा जानै तैसा करौ. राजा कही, तू मेरे नगर में रहि, हैं तेरी आजीविका करै देतु हैं ; तेरी शत्रु आवै ता मोक्ष कहियौ. इतनी कहि, राजा ने बाको गांव गांव में चुंगी कर दई ; वह बाहि लौ, हां सुख सों रहन लागी.

आगे, दई के, जो कोऊ बनजारौ वा बन में आय निकली, ताने वा ब्राह्मन कों कुआ सों काव्यौ. कछौ है कु, "आयु न पूरी होय, ता बाघ, बैरी, अग्नि, जल के ह सुख तें बचै." पुनि वह ब्राह्मन कही नगर में आयौ, जहां ब्राह्मणी ही. अब ब्राह्मणी ने अपनी पति देखी, सब जन राजा सों काय कछौ, महाराज ! मेरे स्वामी कों रिपु आयौ, वह सुनि, राजा ने बाहि पकरि मंगायौ, अब कछौ, रे किम ! तू बाहि क्यों दुख देत है, को कहां मांगतु है ? ऐसी बात राजा के मुख में कुनि, ब्राह्मन ने त्रिज भाव के बिचार्यौ कि, जो इनहीं मेरी समझता लागी, तो सो क्यों हू बाकी प्रीति तजनी उचित है ; क्योंकि, मन दूखी पोर न मिलै, जौ फटिक को पाच. ऐसे बिचारि, ब्राह्मन ने राजा सों कही कि, पृथ्वीनाथ ! हैं यात्रें न कहू मगई, न कही ; पर मेरी वा पै आधी आयु है, सो दियाय देउ. राजा ब्राह्मनकी बात झूठ समझ, चुप हो रह्यौ. अब ब्राह्मणी आगछौ भेदन जान, बोले उठी कि, धर्मावतार ! जा भांनि

कह कहै, ता रीति सेां बाकी आर्वल देंउ . बहुरि बिप्र
 पोख्यौ, हाथ पाय घोय, आचमन करि, पवित्र होय, ऐसें
 कह कि, मैं तेरी आयु लई ही, सो पाखी दर्द . उन वैसें
 ही कछौ; औ कहत ही, बाकौ प्रान घट तें निकरि गयौ .
 राजा समा सहित देखि भैचक रह्यौ . पुनि बाकौ भेद
 पूछ्यौ, तब ब्राह्मन ने सब भेद कछौ . या बात के सुनत ही,
 राजा ने ब्राह्मन कौं बिदा कियौ; अरु आप नियम लियौ
 कि, नारी की बात कबहू सांची न मानियै . तातें हैं
 कहतु हैं, अरे मूर्ख जलचर! स्त्री की बात कौं किस्वास
 कबहू न करियै . कछौ है, “जो नारी के बस परै, सो कहा
 न करै?” जैसे राजा भोज औ पांड़े बररुचि कियौ . मगर
 पूछी, यद्य कौसी कथा है? तहां बानर कहतु है;

एक समय रात्र कौं, राजा भोज की रानी राजा सेां
 हिसानी; तब उन अनेक उपाय मनावे कौं किये, पर वाने
 बाकी बात कौं हू न मानी, औ कछौ, जो तुम घोरा बनि,
 मोहि चढ़ाय, आंगनमें लै फिरौं, अरु हैं रुढ़ करि, चाबुक
 चटकाजं, तौ तिहारौ गायी माजं . उन सुनि, वैसें ही
 करि, अपनी मनोरथ साध्यौ . औ बाही रात्र पांड़े कीं
 प्रंडियान हू रुठी; तब पांड़े ने कही, तू काहू भांति हू
 छट छोड़ै? उन कही, तू मेरौ अपराधी है; यातें तोहि
 भद्र करौं, तौ मेरौ क्रोध मिटै . कछौ है, “जो अति चतुर
 होय, सो रसरीति समझ, प्रीति के बस परै .” आगे,
 पांड़े ने दाढ़ी मूँछ औ मूँड मुंडवायौ, औ बाकौ गायी

गायी. मोर भये जब राजा सभा में आय बैठी, तब पाँडे ने आज्ञा आसीस दी. उन याहि देखि, हंसकै कही, अछे विप्र! बिन पर्व भद्र कहां भये? इन बिद्या के बल रात की रात विचारि कछौ, महाराज! जहां मनुष घेरा की भांति झींसी, तहां बिन पर्व हू मुंडन होय. यह सुनि, राजा मौन रहि रह्यौ. तातेैं कहुतु हैैं, अरे दुष्ट जलचर! जैसे राजा सौ पाँडे ने कियौ, तैसें तू हू कामांध होय स्त्री के बस भयो.

वे होज ऐसे बतराय रहे हे कि, बाकी समय एक जलचर ने आय, मगर सों कही, भाई! तेरो स्त्री मारे क्रोध के मरवे कीं चै रही है; अरु घर में तेरे एक और मगर आय रह्यौ है. यह सुनि, मगर दुख पाय बोख्यौ, हाय! मैं अभागे यह कहा कियौ जु, ऐसी दुष्ट पतनी के कहे अपनी धर्म कर्म खोय दियै! पुनि उन बानर सों कछौ कि, मित्र! तू मेरौ अपराध क्षमा कर; क्योंकि, मैं अब या दुख तें ग्रान छाड़िहैं. बानर बोख्यौ, अरे मूर्ख! तेरे घर में बिगार होनौ तौ युक्त ही हो; पर तोहि ऐसी दुष्ट स्त्री के गये उछाड़ करनौ जाग है; क्योंकि, कछौ है, “कलह-कारिनी नारी, औ बिष, विषत की जर है; यातें जो अपनी आत्मा को सुख चाहै, सो वासों विरक्त रहै, तौही भवै; वाकौ मन मानै सो कहै, औ करै; नारीन के चरित्र भांति भांति के हैं, ते कहां लौं कहौं? पर तू ऐसी ही बात में जानियौ कि, ते चतुर औ सज्जन हैं, ते तिन

के आधीन कबड्ग न होंगी. मगर कही, अहो! मोते हैं धूक भई: ताही ते इत मिचार्द गई, औ उत स्त्री. जैसे एक नारि कै जार भयौ न भर्तार. वानर कही, यह कैसी कथा है? तहां मगर कहतु है;

एक किसान की स्त्री तरुनि, औ वह बूढ़ी; ताते यह नितप्रति परपुरुष देखौ करै, औ काम के मारे याकी मन धाम में न लागै, उदास रहै. एक दिन, कोऊ पराबे वित्त चित को चोर याहि आनि मिल्यौ; बासों इन कही, हे सुभलक्षण! मेरी पति बूढ़ी छै रह्यौ है, औ तू मेरी जार होय, तौ मैं घर को द्रव्य लै, तेरे संग चलौ. उन कही, तैं नीकी बिचारी; भलो मैं जाऊंगी. इन कही, तौ तू सकारे आइयो, हीं तेरे साथ चलौंगी. आगे, मार भये वह आयौ; औ बाहि वित्त समेत लै, नगर के बाहर को धायौ. कोस एक जाय, मन में बिचार करनि लाय्यौ कि, यह एक तौ जावनवती; दूजै याहि पर पुरुष की इच्छा है; कदाचित जैसे यह मोहि मिली, तैसे काहू और में मिल जाय, तौ फेर में कहा करौंगी? यह बिचारि, एक नदी के तीर जाय बाल्यौ, भद्रे! प्रथम नदी पार वित्त वस्त्र धरि आऊं, पाछै पीठ पर चढ़ाय तोहि लै जाऊंगी. वाने या बात के सुनत ही, बसन आभूषन की गठरी दर्ई; इन लै, पार होय, अपनी बाठ लई सो लई; बिभिचारिनी नदी तीर पछताय, नीची नार किये बैठ रही ही कि, एक स्यारनी मास को लौथरा किये

तहाँ आई. अब एक माछरी झू पानी तें निकरि, रेत पर बैठी ही; बाहि देखि, स्यारनी खोचरा धरि, माछरी पकरवे कौं दौरी. इत मास चील लै गई; औ उत माछरी बाहि देखि, जल में कूदी. अब स्यारनी निरास होय, चील की ओर तकनि लागी, तब विभिचारिनी बोली कि, होऊ गंवाय अब कहा देखति है? उन कही, एक तौ हैं चतुर, अब जोहू तें दूमी तू जु, तेरौ सरबसु गयौ, औ न जार भयौ न भर्तार. इतनी कथा कहि, मगर बोली, भाई! मेरी हू बही दसा है; पर अब कौन उपाय करौं. नीति में तैं कार्य साधवे कौं चार उपाय कहे हैं; साम, दाम, दंड, भेद; अब इन में तैं मोहि जो करमैं जोग होय, सो कहौ. वामर कही, अरे! मूढ़ कौं उपदेस कबहू न दीजै. बहुरि मगर बोली, मित्र! हैं शोकसमुद्र में बूड़तु हैं, तू मोहि काह, तोहि जल भर्म होयगौ. कछौ है, “जौ मूरख काज बिगारै, तौहू चतुर सुधार सेय.” मैं मूढ़, तू चतुर, ताने जामें मेरौ भली होय, सो युक्ति बताय. काकी दीनता देखि, बनचर बोली, भाई! तू अपने घर जा, औ सजाती सेां युद्ध कर; क्यौंकि, जौ जीतिहै, तौ घर पायहै; औ मरिहै तौ स्वर्ग. कछौ है, “उत्तम जन सेां साम उपाय कीजै, मनुहार करि कार्य लीजै; अब अति बलवान कौं धन है, दाम उपाय करि, अपनौ काज संवारियै; पुनि दुष्ट तें दंड उपाय कै, अपनपौ राखियै; बहुरि समान सेां भेद उपाय करि, बाहि बल बल करि, मार नाखियै,” जैसे

एक स्यार ने कियौ . मगर कही, यह कैसी कथा है ? पुनि बानर कहतु है ;

काह्ल स्यार ने वन में एक मस्त्री हाथी पायौ ; पर बाकौ कठिन चाम, यातें काखौ न गयौ . त्योंही एक सिंह आयौ ; यह देखत ही बाके सनमुख उठि धायौ, औ हाथ जोरि बाल्यौ, स्वामी ! या गज कौं आप अंगीकार कीजें . उन कही, हैं काह्ल कौ माख्यौ खातु नाहीं, मेरौ बह धर्म है ; यातें यह मैं तोही कौं दियौ . इतनी कहि, वह चल्यौ गयौ . पुनि एक तेंदुआ आयौ ; बाहि देखि स्यार ने जी में विचाख्यौ कि, यह दुष्ट है, याकौं भेद उपाय करि डराइयै . ऐसैं मन में ठानि, यह बाके सनमुख जाय, गुमान सों हितू होय बाल्यौ, अहो ! ह्यां कहां आवतु है ? यह गज सिंह मारि, गंगा न्हाय गयौ है ; मोहि याकी रखवारी राखिकै . ज्योंही बघेला ने याकी बात सुनी, अब बाके चरन चिन्ह देखे, त्योंही पीठ दर्ई . इतेक में, एक चीता आयौ, ताहि निहारि, जबुक ने विचाख्यौ जु, यासों हाथी कौ चाम फड़वाय लोजै, तौ भलौ . ऐसैं विचारि, इन चीता सों कछौ, अहो भगिनीसुत ! मैं तोहि अनेक दिन पाछे देख्यौ ; जौ भूख्यौ है, तौ यह गज सिंह मारि, नदी न्हेके कौं गयी है ; जौलौ बह आवै, तौलौं कखेवा करि चल्यौ जा . उन कही, मामा ! हैं अपनी मांस राखौं तौ लाख ; सिंह कौ माख्यौ नज कैसें खाजं ? स्यार बाल्यौ अरे ! हैं याकौ रखवारी हैं, औ तेरे आड़े ठाढ़ी रहतु हैं, तू खा ;

जब सिंह आवैगै, मैं पुकारौंगै, तब तू भाग जैयै। उन याकी बात मानि, ज्योंहीं वाकी खाल फारि, कछु मांस मुख में लियै, त्योंहीं स्यार पुकाख्यौ, अरे ! भाग ! सिंह आयै। यह सुनत प्रमान, वह उठि दौख्यौ। या भांति स्यार ने वासें दाम उपाय करि, निज काज साध्यौ। आगै, सजातीन सेां दंड उपाय करि युद्ध कियौ ; अरु वह हाथी काहू कौं न खान दियौ। तातें हैं कहतु हैं कि, साम, दाम, दंड, भेद, चार उपाय कहे हैं ; पर जैसै जहां बुझिये, तैसै तहां करिये। बहुरि मगर कही, हैं बिदेस जै हैं। बंदर बाल्यौ,

अरे ! एक चिचांगद नाम कूकर, परदेस में जाय, काहू गृहस्थ के घर पैद्यौ ; औ आछौ आछौ खाय, जब बाहर आयौ, तब वा गांव के खाननि वाहि घेर, अति मार दई। पुनि, इन दुख पाय, निज नगर की बाट लई। अरु घर आयौ, तद याके कुटुंब ने पूछ्यौ कि, बिदेस जैवे की अवस्था कहौ जु, हूं कैसें रहे ? इन कही, परदेस में और तौ सब भलौ, पर सजाती देख नाहीं सकतु ; औ कोज मेासें पूछै, तौ मेरे जाने, घर तें निकसनी उचित क्योंहू नाहिं। अरे मगर ! तातें हैं कहतु हैं कि, तेरी दुष्ट पत्नी तौ गई ; पै तू अबही सकाम है, यातें नयौ व्याह कर। कह्यौ है, “कुआ कौ मीर, बड़ की छांह, तुरंत बिछोयौ घी, खीर कौ भोजन, बाल खी, ये सब प्रान कौं पोषतु हैं।” अरु अवस्था प्रमान काज कीजै, तौ दोष नाहीं। बानर तें यह उपदेस सुनि,

मगर निज घर गयौ; औ उन नयौ विवाह कियौ, घर मांझौ, सब दुख छांझौ, आनंद सेां रहन लाग्यौ . इतनी कथा संपूरन करि, विष्णुशर्मा ने राजपुचन कौं असीस दर्ई कि, तिहारी जय होय, औ शत्रुन की हार! यह सुनि, राजपुचन ह्व वस्त्र, आभूषन, द्रव्य, मंगाय, भेट धरि, पाय लाग, गुरु कौं विदा कियौ; अरु आप नीतिमार्ग सेां निज राजकाज करनि लागे .

इति लब्धप्रनाश पंचम कथा संग्रहः संपूर्णः .

